श्री समवायांग सूत्र

।। श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ।।

।। શ્રી આગમ-ગુણ-મંજૂષા ।।

।। Sri Agama Guna Manjusa ।।

(सचित्र)

प्रेरक-संपादक

अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

१) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र मे साधु और श्रावक के उत्तम आचारो का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन है। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगोमे से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको कि संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान है।

२) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र मे दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान मे विद्यमान है। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।

३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोंगो कि बाते आती है। एक अंक से लेकर दस अंको तक मे कितनी वस्तुअें है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक है।

४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे है उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीनसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ है उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण मे उपलब्ध है।

५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बडा सूत्र है, इसमे ४२ शतक है, इनमे भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ मे प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नो का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुइ है। चारो अनुयोगो कि बाते अलग अलग शतको मे वर्णित है। अगर संक्षेप मे कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोको मे उपलब्ध है।

६) **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमे साडेतीन करोड कथाअे थी अब ६००० श्लोको मे उन्नीस कथाअें उपलब्ध है।

७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतो का वर्णन आता है और १० महाश्रावको के जीवन चरित्र है, धर्मकथानुंयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र मे सामील है। इसमे ८०० से ज्यादा श्लोक है।

८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यत: धर्मकथानुयोग मे रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष मे जानेवाले उंत्तम जीवो के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए है। फिलाल ८०० श्लोको मे ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।

९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय मे चारित्र की आराधना करके अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव मे फीर से चारित्र लेंकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावको के जीवनचरित्र है इसलीए मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।

१०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र मे मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याधर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र मे आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र मे भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक है।

११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग मे २ श्रुतस्कंध है पहला दु:खविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहेले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओ के द्रष्टांत है मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

१) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस मे चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यो की बाते है। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

२) **श्री राजप्रश्नीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोको से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३) **श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :-** यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे मे अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्विप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताइ है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढते है वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपरन्च पन्नवणासूत्र के ही पदार्थ है। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।

४) **श्री प्रज्ञापना सूत्र-** यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमे ३६ पदो का वर्णन है। प्राय: ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।

५) **श्री सुर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-**

६) **श्री चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र :-** इस दो आगमो मे गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनो आगमो मे २२००, २२०० श्लोक है।

७) **श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :-** यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग मे है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जंबूद्विप का सविस्तर वर्णन है। ६ आरे के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

८) **श्री निरयावली सूत्र :-** इन आगम ग्रंथो में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित्र के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस मे श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक मे गये उसका वर्णन है।

९) **श्री कल्पावतंसक सूत्र :-** इसमें पद्मकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइओं के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।

१०) **श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :-** इसमें १० अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार है।

११) **श्री पुष्पचुलीका सूत्र :-** इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओ का पूर्वभव का वर्णन है।

१२) **श्री वृष्णिदशा सूत्र :-** यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १०पुत्र, १० मे पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं है। अंतके पांचो उपांगो को निरियावली पन्चक भी कहते है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

१) **श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।

२) **श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार

३) **श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।

६) **श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :-** नामानुसार इस पयन्ने में संथारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयन्ने पठन के अधिकारी श्रावक भी है।

७) **श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते है। १०० वर्षो में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।

८) **श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयन्ने में समजाया गया है।

९) **श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :-** इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबधित अन्य बातों का वर्णन है।

१०A) **श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु संबधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयन्ने में है।

१०B) **श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन हे।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०C) **श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयत्रे में ज्योतिष संबधित बड़े ग्रंथो का सार है।

उपरोक्त दसों पयन्नों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य हे। इसके अलावा २२ अन्य पयन्ना भी उपलब्ध हैं। और दस पयन्नों में चंदाविजय पयन्नो के स्थान पर गच्छाचार पयन्ना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र (५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) **श्री दशवैकालिक सूत्र :-** पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विविक्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाइ थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) **श्री उत्तराध्ययन सूत्र :-** परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हें।

३) **श्री निर्युक्ति सूत्र :-** चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओघ निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताइ हें। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) **श्री आवश्यक सूत्र :-** छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बडे सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रात: एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) **श्री नंदी सूत्र :-** ७०० श्लोक के इस आगम ग्रंन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थंकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) **श्री अनुयोगद्वार सूत्र :-** २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गइ है। अनुयोग याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार है (१) उक्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Introduction

45 *Āgamas*, a short sketch

I Eleven *Aṅgas* :

(1) **Ācārāṅga-sūtra :** It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.

(2) **Sūyagaḍāṅga-sūtra :** It is also known as Sūtra-Kṛtāṅga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Ṭhāṇāṅga-sūtra :** It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.

(4) **Samavāyāṅga-sūtra :** This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.

(5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra :** It is also known as Bhagavatī-sūtra. It is the largest of all the *Aṅgas*. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama *Gaṇadhara* and answers of Lord Mahāvīra. It discusses the four teachings in the centuries. This *Āgama* is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.

(6) **Jñātādharma-Kathāṅga-sūtra :** It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.

(7) **Upāsaka-daśāṅga-sūtra :** It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvīra, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct. It is of the size of around 800 *Ślokas*.

(8) **Antagaḍa-daśāṅga-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhāriṇī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.

(9) **Anuttarovavāyi-daśāṅga-sūtra :** It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dīrghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṇagāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvīra's answers to the questions put by gods, Vidyādharas, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(11) **Vipāka-sūtrāṅga-sūtra :** It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve *Upāṅgas*

(1) **Uvavāyi-sūtra :** It is a subservient text to the *Ācārāṅga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṇika's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.

(2) **Rāyapaseṇī-sūtra :** It is a subservient text to Sūyagaḍāṅga-sūtra. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryābha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) **Jīvābhigama-sūtra :** It is a subservient text to Ṭhāṇāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this *Sūtra* and of the Pannāvaṇā-sūtra. It is of the size of 4700 *Ślokas*.

(4) **Pannāvaṇā-sūtra :** It is a subservient text to the Samavāyāṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 *Ślokas*.

(5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and

(6) **Candra-prajñapti-sūtra :** These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these *Āgamas* are of the size of 2200 *Ślokas*.

(7) **Jambūdvīpa-prajñapti-sūtra :** It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (*āra*). It is available in the size of 4500 *Ślokas*.

Nirayāvalī-pañcaka :

(8) **Nirayāvalī-sūtra :** It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king Ceṭika's 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (*avasarpiṇī*) age.

(9) **Kalpāvataṁsaka-sūtra :** It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king Śreṇika, the life-sketch of Padamakumara and others.

(10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra :** It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrikā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śila, Bala and Aṇāḍḍhiya.

(11) **Pupphaculīya-upāṅga-sūtra :** It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.

(12) **Vahnidaśā-upāṅga sūtra :** It contains 10 stories of Yadu king Andhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣaḍha.

III Ten *Payannā-sūtras* :

(1) **Āurapaccakhāṇa-sūtra :** It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).

(2) **Bhattaparinnā-sūtra :** It describes (1) three types of *Paṇḍita* death, (2) knowledge, (3) Iṅgini devotee (4) *Pādapopagamana*, etc.

(4) **Santhāraga-payannā-sūtra :** It extols the *Saṁstāraka*.

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

(5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra :** The ancient preceptors call this Payannā-sūtra as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.

(6) **Candāvijaya-payannā-sūtra :** It mainly deals with the religious practice that improves one's death.

(7) **Devendrathui-payannā-sūtra :** It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.

(8) **Maraṇasamādhi-payannā-sūtra :** It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.

(9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra :** It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.

(10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra :** It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 Payannās are of the size of 2500 *Ślokas*.

Besides about 22 Payannās are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The Gacchācāra is taken, by some, in place of the Candāvijaya of the 10 Payannās.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

IV Six *Cheda-sūtras*

(1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
(3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
(5) Daśāśruta-skandha-sūtra and (6) Bṛhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully descerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four *Mūlasūtras*

(1) **Daśavaikālika-sūtra :** It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākyā and Vivittacariyā. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvideha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.

(2) **Uttarādhyayana-sūtra :** It incorporates the last sermons of Lord Mahāvīra. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 *Slokas*.

(3) **Anuyogadvāra-sūtra :** It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate *Āgama*. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocarī*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.

(4) **Āvaśyaka-sūtra :** It is the most useful *Āgama* for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturviṁśatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) Kāyotsarga and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two *Cūlikās*

(1) **Nandī-sūtra :** It contains hymn to Lord Mahāvīra, numerous similies for the religious constituency, name-list of 24 *Tīrthaṅkaras* and 11 *Gaṇadharas*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 *Ślokas*.

(2) **Anuyogadvāra-sūtra :** Though it comes last in the serial order of the 45 *Āgamas*, the learner needs it first. It is designated as the key to all the *Āgamas*. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and wordly involvements.

It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

આગમ - ૪

દ્રવ્યાનુયોગ પ્રધાન સમવાયાંગ સૂત્ર - ૪

અન્યનામ :- સમાય.

શ્રુતસ્કંધ ---------- ૧
અધ્યયન ---------- ૧
ઉદ્દેશક ---------- ૧
પદ ---------- ૧,૪૪,૦૦૦

ઉપલબ્ધ પાઠ --------- ૧૬૬૭ શ્લોક પ્રમાણ
ગદ્યસૂત્ર ---------- ૧૬૦
પદ્યસૂત્ર ---------- ૬૦

૧) **સમવાયમાં** આત્મા - અનાત્મા, દંડ-અદંડ, ક્રિયા-અક્રિયા, લોક-અલોક, ધર્મ-અધર્મ, પુણ્ય-પાપ, બંધ-મોક્ષ, આશ્રવ-સંવર, વેદના-નિર્જરા અને અંતે કેટલાક ભવ્ય જીવો એક ભવ પછી મુક્તિ પામે છે તેનું વર્ણન છે.

૨) **સમવાયમાં** બે દંડ, બે રાશિ, બે બંધન વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે બે ભવમાંથી મુક્તિની વાત કરી છે.

૩) **સમવાયમાં** ત્રણ દંડ, ત્રણ ગુપ્તિ, ત્રણ શલ્ય, ત્રણ ગારવ,ત્રણ વિરાધના વગેરેનું વર્ણન કરી ત્રણ ભવથી મુક્તિનું વર્ણન છે.

૪) **સમવાયમાં** ચાર કષાય તેમજ ધ્યાન, ક્રિયા, સંજ્ઞા, બંધ, યોજનનું પરિમાણ વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે ચાર ભવથી મુક્તિની વાત કરી છે.

૫) **સમવાયમાં** પાંચ ક્રિયા, મહાવ્રત, કામગુણ, આશ્રવદ્વાર, સંવરદ્વાર, નિર્જરાસ્થાન, સમિતિ, અસ્તિકાય વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે પાંચ ભવથી મુક્તિની વાત જણાવી છે.

૬) **સમવાયમાં** છ લેશ્યા, છ જીવનિકાય, બાહ્ય તપ, આભ્યંતર તપ, છાદ્મસ્થિક સમુદ્‌ઘાત અને અર્થાવગ્રહનું વર્ણન અને પછી બીજા છ-છ પ્રકારનું વર્ણન કરી અંતે છ ભવની મુક્તિવાળાની વાત જણાવી છે.

૭) **સમવાયમાં** ભયસ્થાન, સમુદ્‌ઘાત, મહાવીર ભગવાનની ઊંચાઈ વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે સાત ભવથી મુક્તિની વાત કરી છે.

૮) **સમવાયમાં** મદસ્થાન, આઠ પ્રવચનમાતા વગેરેનું વિસ્તૃત વર્ણન કરી આઠ ભવથી મુક્તિની વાત જણાવી છે.

૯) **સમવાયમાં** બ્રહ્મચર્ય ગુપ્તિ, બ્રહ્મચર્ય અગુપ્તિ, ભગવાન પાર્શ્વનાથની ઊંચાઈ વગેરેનું વિસ્તૃત વર્ણન કરી અંતે નવ ભવથી મુક્તિની વાત કરી છે.

૧૦) **સમવાયમાં** શ્રમણધર્મ, ચિત્તસમાધિસ્થાન વગેરેનું વિસ્તૃત વર્ણન કરી દસ ભવથી મુક્તિની વાત જણાવી છે.

૧૧) **સમવાયમાં** ઉપાસક પડિમા, ભગવાન મહાવીરના અગિયાર ગણધરો અને અંતે અગિયાર ભવથી મુક્તિની વાત છે.

૧૨) **સમવાયમાં** ભિક્ષુપ્રતિમા, વંદનના આવર્ત, જઘન્ય દિવસ-રાત્રિના અહોમુહૂર્ત અને અંતે બાર ભવથી મુક્તિની વાત જણાવી છે.

૧૩) **સમવાયમાં** ક્રિયાસ્થાન, સૂર્યમંડલનું પરિમાણ અને અંતે તેર ભવથી મુક્તિની વાત જણાવી છે.

૧૪) **સમવાયમાં** ભૂતગ્રામ, પૂર્વગુણસ્થાન, ચક્રવર્તીના રત્ન, ભગવાન મહાવીરની ઉત્કૃષ્ટ સંપદા અને અંતે ચૌદ ભવથી મુક્તિની વાત કરી છે.

૧૫) **સમવાયમાં** પરમાધાર્મિક દેવ, ભગવાન નેમિનાથની ઊંચાઈ, વિદ્યાપ્રવાદપૂર્વનું વસ્તુ, સંજ્ઞી મનુષ્યમાં યોગ અને અંતે પંદર ભવથી મુક્તિની વાત છે.

૧૬) **સમવાયમાં** સૂત્રકૃતાંગના સોળ અધ્યયનની ગાથાઓ, કષાયના ભેદ, મેરુ પર્વતના નામ અને અંતે સોળ ભવથી મોક્ષે જનારની વાત છે.

૧૭) **સમવાયમાં** સત્તર પ્રકારના અસંયમ-સંયમ અને અંતે સત્તર ભવથી મુક્તિની વાત જણાવી છે.

૧૮) **સમવાયમાં** બ્રહ્મચર્ય, ભગવાન નેમિનાથની ઉત્કૃષ્ટ સંપદા, બ્રાહ્મી લિપિના અઢાર પ્રકાર અને અંતે અઢાર ભવથી મુક્તિની વાત કરી છે.

૧૯) **સમવાયમાં** જ્ઞાતા ધર્મકથા, પ્રથમ શ્રુતસ્કંધના અધ્યયન અને અંતે ઓગણીસમા ભવથી મુક્તિની વાત જણાવી છે.

૨૦) **સમવાયમાં** અસમાધિસ્થાન, ભગવાન મુનિસુવ્રત સ્વામીની ઊંચાઈ અને અંતે વીસ ભવથી મુક્તિની વાત જણાવી છે.

૨૧) **સમવાયમાં** સબલ દોષ અને અંતે એકવીસમા ભવે મુક્તિ થવાની વાત છે.

૨૨) **સમવાયમાં** પરીષહ, દૃષ્ટિવાદની વિગતો, પુદ્‌ગલના પ્રકાર અને અંતે બાવીસ ભવથી મુક્તિની વાત કરી છે.

૨૩) **સમવાયમાં** સૂત્રકૃતાંગના બે શ્રુતસ્કંધોના અધ્યયન અને અંતે તેવીસ ભવથી મુક્તિ જવાની વાત જણાવી છે.

૨૪) **સમવાયમાં** ચોવીસ તીર્થંકર તેમજ ગંગા, સિંધુ, રક્તા, રક્તવતી વગેરે નદીઓના પ્રવાહ, વિસ્તાર અને અંતે ચોવીસ ભવે સિદ્ધ થનારની વાત છે.

૨૫) **સમવાયમાં** પાંચ મહાવ્રતની ભાવના, ભગવાન મલ્લિનાથની ઊંચાઈ અને અંતે પચીસમા ભવથી મુક્ત થનારની વાત જણાવી છે.

૨૬) **સમવાયમાં** દશ શ્રુતસ્કંધ, બૃહત્કલ્પ અને વ્યવહારના ઉદ્દેશકોની સંપદા અને અંતે છવીસ ભવથી મુક્તિએ જનારની વાત છે.

૨૭) **સમવાયમાં** અણગાર ગુણો વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે સત્તાવીસ ભવથી મુક્તિની વાત જણાવી છે.

૨૮) **સમવાયમાં** આચાર પ્રકલ્પ, મૌનની પ્રકૃતિઓ વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે અઠાવીસ ભવે મુક્તિએ જનારની વાત કરી છે.

૨૯) **સમવાયમાં** પાપશ્રુત, જુદા-જુદા માસના દિવસ-રાત, ચંદ્ર, દિવસના મુહૂર્ત વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે ઓગણત્રીસ ભવથી મુક્ત થનારની વાત છે.

૩૦) **સમવાયમાં** મોહનીયના સ્થાન, ત્રીસ મુહૂર્તોનાં નામ વગેરે વર્ણન કરી ત્રીસ ભવથી મુક્ત થનારની વાત કરી છે.

૩૧) **સમવાયમાં** સિદ્ધોના ગુણ વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે એકત્રીસ ભવથી મુક્ત થનારની વાત જણાવી છે.

૩૨) **સમવાયમાં** યોગસંગ્રહ, દેવેન્દ્ર વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે બત્રીસ ભવથી મુક્ત થનારની વાત કરી છે.

૩૩) **સમવાયમાં** અશાતના વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે સર્વાર્થસિદ્ધિ વિમાનના દેવોના શ્વાસોચ્છ્વાસ, કાળ, આહાર, ઈચ્છા અંતે તેત્રીસ ભવથી મુક્તિ થનારની વાત જણાવી છે.

૩૪) **સમવાયમાં** તીર્થંકરના અતિશયો, ચક્રવર્તીના વિજયક્ષેત્રો વગેરેનું વર્ણન છે.

૩૫) **સમવાયમાં** સત્યવચનાતિ સય, ભગવાન કુંથુનાથ અને અરનાથની ઊંચાઈ વગેરેનું વર્ણન છે.

૩૬) **સમવાયમાં** ઉત્તરાધ્યયનના અધ્યયન, મહાવીર ભગવાનની સંપદા વગેરે વર્ણન છે.

૩૭) **સમવાયમાં** ભગવાન કુંથુનાથ અને અરનાથ ના ગણધર વગેરેનું વર્ણન છે.

૩૮) **સમવાયમાં** ભગવાન પાર્શ્વનાથની ઉત્કૃષ્ટ શ્રમણી સંપદા વગેરે વર્ણન છે.

૩૯) **સમવાયમાં** નેમિનાથના અવધિજ્ઞાની મુનિ અને સમયક્ષેત્રના કુલ-પર્વત વગેરેનું વર્ણન છે.

૪૦) **સમવાયમાં** ભગવાન અરિષ્ટનેમિની શ્રમણી સંપદા, ભગવાન શાંતિનાથની ઊંચાઈ વગેરે વર્ણિત છે.

૪૧) **સમવાયમાં** ભગવાન નેમિનાથની શ્રમણી સંપદા વગેરેનું વર્ણન છે.

૪૨) **સમવાયમાં** ભગવાન મહાવીર સ્વામીનો શ્રમણ પર્યાય, નામ-કર્મની ઉત્તરપ્રક્રિયાઓ વગેરે વર્ણિત છે.

૪૩) **સમવાયમાં** કર્મવિપાકના અધ્યયન વગેરે વર્ણિત છે.

૪૪) **સમવાયમાં** ઋષિ ભાષિત્તના અધ્યયન વગેરેનું વર્ણન છે.

૪૫) **સમવાયમાં** ભગવાન અરનાથની ઊંચાઈ વગેરે વર્ણન છે.

૪૫) **સમવાયમાં** દૃષ્ટિવાદના માતૃકાપદ, બ્રાહ્મીલિપિના માતૃકાક્ષર વગેરેનું વર્ણન છે.

૪૭) **સમવાયમાં** સ્થવિર અગ્નિભૂતિના સહવાસ વગેરે વર્ણિત છે.

૪૮) **સમવાયમાં** ચક્રવર્તીના પ્રમુખ નગરો, ભગવાન ધર્મનાથના ગણધર વગેરેનું વર્ણન છે.

૪૯) **સમવાયમાં** ત્રિ-ઈન્દ્રિયોની સ્થિતિ વગેરે વર્ણિત છે.

૫૦) **સમવાયમાં** ભગવાન મુનિ સુવ્રતસ્વામીની શ્રમણી સંપદા વગેરેનું વર્ણન છે.

૫૧) **સમવાયમાં** આચારાંગ પ્રથમ શ્રુતસ્કંધ, અધ્યયનોના ઉદ્દેશક વગેરેનું વર્ણન છે.

૫૨) **સમવાયમાં** મોહનીય કર્મના નામ વગેરે વર્ણિત છે.

૫૩) **સમવાયમાં** દેવ, કુરુક્ષેત્રના જીવાનું આયામ તથા પાતાળ ક્લેશોની વાતો છે.

૫૪) **સમવાયમાં** ભરતક્ષેત્રમાં ઉત્સર્પિણી - અવસર્પિણીમાં થયેલા ઉત્તમ પુરુષો, અનંતનાથના ગણધર વગેરે વર્ણિત છે.

૫૫) **સમવાયમાં** ભગવાન મલ્લિનાથનું આયુષ્ય ભગવાન મહાવીરનું અંતિમ પ્રવચન વગેરે વર્ણિત છે.

૫૬) **સમવાયમાં** ભગવાન વિમલનાથના ગણ અને ગણધરનું વર્ણન છે.

૫૭) **સમવાયમાં** આચારાંગ (ચૂલિકા છોડીને) સૂત્રકૃતાંગ અને સ્થાનાંગના અધ્યયન વગેરેનું વર્ણન છે.

૫૮) **સમવાયમાં** પહેલા, બીજા અને પાંચમાં નરકના વાસનું વર્ણન છે.

૫૯) **સમવાયમાં** ચાંદ્ર સંવત્સરના દિવસ-રાત, ભગવાન સંભવનાથનો ગૃહવાસ વગેરે વર્ણિત છે.

૬૦) **સમવાયમાં** એક મંડળમાં સૂર્યને રહેવાનો સમય, ભગવાન વિમલનાથની ઊંચાઈ વગેરેનું વર્ણન છે.

૬૧) **સમવાયમાં** યુગ, ઋતુ, માસ વગેરેનું વર્ણન છે.

૬૨) **સમવાયમાં** ભગવાન વાસુપૂજ્યના ગણ અને ગણધર, પાંચવર્ષીય યુગની પૂર્ણિમા અને અમાવાસ્યા, શુક્લપક્ષ અને કૃષ્ણપક્ષ, ભાગ-હાનિ વગેરેનું વર્ણન છે.

૬૩) **સમવાયમાં** ભગવાન ઋષભદેવનો ગૃહવાસકાળ વગેરે વર્ણિત છે.

૬૪) **સમવાયમાં** અસુરકુમારોના ભુવન, ચક્રવર્તીના મુક્તાહારની સેરો વગેરેનું વર્ણન છે.

૬૫) **સમવાયમાં** જંબૂદ્વીપના સૂર્યમંડળ વગેરે વર્ણિત છે.

૬૬) **સમવાયમાં** દક્ષિણઅર્ધ મનુષ્ય ક્ષેત્રના સૂર્ય-ચંદ્ર વગેરેનું વર્ણન છે.

૬૭) **સમવાયમાં** પંચવર્ષીય યુગના નક્ષત્રવાસ વગેરે વર્ણિત છે.

૬૮) **સમવાયમાં** ભગવાન વિમલનાથની શ્રમણી સંપદા વગેરેનું વર્ણન છે.

૬૯) **સમવાયમાં** મોહનીય સિવાયની સાત કર્મોની ઉત્તર પ્રકૃતિઓ વર્ણિત છે.

૭૦) **સમવાયમાં** ભગવાન મહાવીરના વર્ષાવાસના દિવસ-રાત, મોહનીય કર્મની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ વગેરેનું વર્ણન છે.

૭૧) **સમવાયમાં** વીર્યપ્રવાહના પ્રાભૃત, ભગવાન અજિતનાથ અને સગર ચક્રવર્તીનો ગૃહસ્થકાળ વગેરે વર્ણિત છે.

૭૨) **સમવાયમાં** સ્વર્ણકુમારના ભવન, ભગવાન મહાવીરનું આયુ વગેરે વર્ણિત છે.

૭૩) **સમવાયમાં** હરિવર્ષની જીવા વગેરેનું વર્ણન છે.

૭૪) **સમવાયમાં** સ્થવિર અગ્નિભૂતિનું આયુ વગેરે વર્ણિત છે.

૭૫) **સમવાયમાં** ભગવાન સુવિધિનાથના સામાન્ય કેવલી, ભગવાન શીતલનાથ અને ભગવાન શાંતિનાથના ગૃહવાસકાળ વગેરેનું વર્ણન છે.

૭૬) **સમવાયમાં** વિદ્યુતકુમાર, દ્વીપકુમાર, દિશા, ઉદધિ, સ્તનિત, અગ્નિ વગેરે કુમારોના ભવનોનું વર્ણન છે.

૭૭) **સમવાયમાં** ભરત ચક્રવર્તીની કુમાર અવસ્થા વગેરે વર્ણિત છે.

૭૮) **સમવાયમાં** સ્થવિર અકંપિતના આયુ વગેરેનું વર્ણન છે.

૭૯) **સમવાયમાં** જંબૂદ્વીપમા પ્રત્યેક દ્વારનું અંતર વગેરેનું વર્ણન છે.

૮૦) **સમવાયમાં** ભગવાન શ્રેયાંસનાથની ઊંચાઈ વગેરે વર્ણિત છે.

૮૧) **સમવાયમાં** નવ નવમીકા ભિક્ષુપ્રતિમાના દિવસ વગેરેનું વર્ણન છે.

૮૨) **સમવાયમાં** જંબૂદ્વીપના સૂર્યના મંડળ વગેરે વર્ણિત છે.

૮૩) **સમવાયમાં** ભગવાન મહાવીરના ગર્ભહરણદિન વગેરેનું વર્ણન છે.

૮૪) **સમવાયમાં** ભગવાન ઋષભદેવ, ભગવાન શ્રેયાંસનાથ, ભરત, બાહુબલી, બ્રાહ્મી સુંદરીના સર્વ આયુનું વર્ણન અને અંતે સર્વ વિમાનોનું વર્ણન છે.

૮૫) **સમવાયમાં** ચૂલિકાસહિત આચારાંગના ઉદ્દેશક વગેરે વર્ણિત છે.

૮૬) **સમવાયમાં** ભગવાન સુવિધિનાથના ગણ-ગણધર, ભગવાન સુપાર્શ્વનાથના વાદી મુનિ વગેરેનું વર્ણન છે.

૮૭) **સમવાયમાં** મેરુપર્વતના પૂર્વભાગનો અંત અને ગોસ્તંભ આવાસ પર્વતના પશ્ચિમ ભાગનો અંત- આ બે વચ્ચેનું અંતર વગેરે વર્ણિત છે.

૮૮) **સમવાયમાં** એક ચંદ્ર-સૂર્યના ગ્રહ, દૃષ્ટિવાદના સૂત્ર વગેરેનું વર્ણન છે.

૮૯) **સમવાયમાં** ભગવાન ઋષભદેવ અને ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણકાળ વગેરે વર્ણિત છે.

૯૦) **સમવાયમાં** ભગવાન શીતલનાથની ઊંચાઈ વગેરે વર્ણિત છે.

૯૧) **સમવાયમાં** વૈયાવૃત્ત પ્રતિમા, કાલોદધિ સમુદ્ર ની પરિધિ વગેરેનું વર્ણન છે.

૯૨) **સમવાયમાં** સર્વપ્રતિમા, સ્થવિર ઈન્દ્રભૂતિની આયુ વગેરેનું વર્ણન છે.

૯૩) **સમવાયમાં** ભગવાન ચંદ્રપ્રભુના ગણ અને ગણધર વગેરેનું વર્ણન છે.

૯૪) **સમવાયમાં** ભગવાન અજિતનાથના અવધિજ્ઞાની મુનિઓ, નિષધ પર્વતની જીવાનું આયામ વગેરે વર્ણિત છે.

૯૫) **સમવાયમાં** ભગવાન સુપાર્શ્વનાથના ગણ અને ગણધર સ્થવિર મૌર્યપુત્રની સર્વ આયુ વગેરેનું વર્ણન છે.

૯૬) **સમવાયમાં** ચક્રવર્તીના ગામ, વાયુકુમારના ભવન, દંડ ધનુષનું અંગુલ પ્રમાણ વગેરે વર્ણિત છે.

૯૭) **સમવાયમાં** આઠ કર્મોની ઉત્તર પ્રકૃતિઓ વગેરેનું વર્ણન છે.

૯૮) **સમવાયમાં** નંદનવનના ઉપરના ભાગથી પાંડુકવનના અધોભાગનું અંતર વર્ણિત છે.

૯૯) **સમવાયમાં** મેરુપર્વતની ઊંચાઈ વગેરે વર્ણન છે.

૧૦૦) **સમવાયમાં** ભગવાન સુવિધિનાથની ઊંચાઈ, ભગવાન પાર્શ્વનાથનું આયુ વગેરે વર્ણિત છે.

દોઢસોમા સમવાયમાં ભગવાન ચંદ્રપ્રભુની ઊંચાઈ, આરજ, અચ્યુતકલ્પના વિમાન વગેરેનું વર્ણન છે.

બસોમા સમવાયમાં સુપાર્શ્વનાથની ઊંચાઈ વગેરે વર્ણિત છે.

અઢીસોમા સમવાયમાં ભગવાન પદ્મપ્રભુની ઊંચાઈ, અસુરકુમારોના પ્રાસાદોની ઊંચાઈ વગેરે વર્ણિત છે.

ત્રણસોમા સમવાયમાં ભગવાન સુમતિનાથની ઊંચાઈ, ભગવાન મહાવીર સ્વામીના ચૌદ પૂર્વીય મુનિ વગેરેનું વર્ણન છે.

સાડી ત્રણસોમા સમવાયમાં ભગવાન પાર્શ્વનાથના ચૌદ પૂર્વધારી મુનિ, ભગવાન અભિનંદનની ઊંચાઈ વગેરે વર્ણન છે.

ચારસોમા સમવાયમાં ભગવાન સંભવનાથની ઊંચાઈ વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે ભગવાન મહાવીરના ઉત્કૃષ્ટવાદી મુનિનું વર્ણન છે.

સાડી ચારસોમા સમવાયમાં ભગવાન અજિતનાથની અને સગર ચક્રવર્તીની ઊંચાઈ વગેરેનું વર્ણન છે.

પાંચસોમા સમવાયમાં ભગવાન ઋષભદેવની, ભરત ચક્રવર્તીની તથા વિવિધ પર્વતોની ઊંચાઈ વગેરેનું વર્ણન છે.

છસોમા સમવાયમાં ભગવાન પાર્શ્વનાથના આદિમુનિ, ભગવાન વાસુપૂજ્યની સાથે થયેલા દીક્ષિત મુનિઓ વગેરેનું વર્ણન છે.

સાતસોમા સમવાયમાં ભગવાન મહાવીરના કેવલજ્ઞાની શિષ્યો અને ભગવાન અરિષ્ટનેમિનો કેવલી-પર્યાય વગેરે વર્ણિત છે.

આઠસોમા સમવાયમાં ભગવાન અરિષ્ટનેમિના ઉત્કૃષ્ટવાદી મુનિઓ તથા વિવિધ વિમાનોની ઊંચાઈનું વર્ણન છે.

નવસોમા સમવાયમાં વિવિધ વિમાનોની ઊંચાઈ વગેરે વર્ણન છે.

હજારમા સમવાયમાં સર્વ ગ્રૈવેયક વિમાનોની ઊંચાઈ વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે પદ્મદ્રહ, પુંડરીક દ્રહના આયામની વાત કરી છે.

અગિયારસોમા સમવાયમાં ભગવાન પાર્શ્વનાથના વૈક્રિય લબ્ધિવાળા શિષ્યોનું વર્ણન છે.

બે હજારમા સમવાયમાં મહાપદ્મદ્રહ, મહાપુંડરીકદ્રહના આયામોનું વર્ણન છે.

ત્રણ હજારમા સમવાયમાં રત્નપ્રભાના વજ્રકાંડના ચરમાન્તથી લોહિતાક્ષ કાંડના ચરમાન્ત સુધીના અંતરનું વર્ણન છે.

ચાર હજારમા સમવાયમાં તિગિચ્છદ્રહના અને કેશરીદ્રહના આયામોનું વર્ણન છે.

પાંચ હજારમા સમવાયમાં ધરણીતલમાં મેરુના મધ્યભાગથી અંતિમ ભાગ સુધીનું અંતર વર્ણિત છે.

છ હજારમા સમવાયમાં સહસ્રસાર -કલ્પના વિમાનોનું વર્ણન છે.

સાત હજારમા સમવાયમાં ઉપરના તલથી પુલકકાંડના નીચેના સ્થળના અંતરનું વર્ણન છે.

આઠ હજારમા સમવાયમાં હરિવર્ષ અને રમ્યક વર્ષના વિસ્તારનું વર્ણન છે.

નવ હજારમા સમવાયમાં દક્ષિણ અર્ધ ભરતની જીવાનું આયામ વર્ણિત છે.

દસ હજારમા સમવાયમાં મેરુપર્વતના વિષ્કંભનું વર્ણન છે.

એક લાખ થી આઠ લાખના સમવાયમાં જંબૂદ્વીપના આયામ અને વિષ્કંભથી માંડીને અંતે મહેન્દ્રકલ્પના વિમાનોનું વર્ણન છે.

કોટિ સમવાયમાં ભગવાન અજિતનાથના અવધિજ્ઞાની, પુરુષસિંહ વાસુદેવનું આયુ વગેરેનું વર્ણન છે.

કોટાકોટિ સમવાયમાં ભગવાન મહાવીરના પોટિલ ભવના શ્રમણ-પર્યાય, ભગવાન ઋષભદેવથી ભગવાન મહાવીરનું અંતર તથા તેર સૂત્રોમાં દ્વાદશ અંગોનો પરિચય, બે રાશિ, ચોવીસ દંડકમાં પર્યાપ્ત-અપર્યાપ્ત સર્વ નરકાવાસ, સર્વ ભવનાવાસ, સર્વ વિમાનાવાસ વગેરેનું વિસ્તૃત વર્ણન કરી, ચોવીસ તીર્થંકરો, બાર ચક્રવર્તીઓ, નવ બલદેવો, નવ વાસુદેવો, નવ પ્રતિવાસુદેવો વગેરેના માતાપિતા વગેરેની ગતિ-આગતિ, પૂર્વભવના ધર્માચાર્યો અને અંતે નવ વાસુદેવોની નિદાન ભૂમિઓ અને નિદાનના કારણો જણાવી ઉપસંહારમાં સમવાયાંગમાં વર્ણિત વિષયો સંક્ષિપ્તમાં જણાવ્યા છે.

આ રીતે સમવાયાંગ પૂર્ણ થાય છે.

सिरि उसाहदेव सामिस्स णमो। सिरि गोडी-जिराउला-सव्वोदय पास णाहाणं णमो। णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स। सिरि-गोयम-सोहम्माइ सव्व गणहराणं णमो। सिरि सुगुरु-देवाणं णमो। णमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महइमहावीरवद्धमाणसामिस्स ॥ ॥卐卐卐 **पंचमगणहरभयवंसिरिसुहम्मसामिविरइयं चउत्थमंगं समवायंगसुत्तं**卐卐卐'॥ ॐ नमो वीतरागाय॥' १ (१) सुयं मे आउसं! तेणं भगवता एवमक्खातं (२) इह खलु समणेणं भगवता महावीरेणं आदिकरेणं तित्थकरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणालोगोत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहितेणं लोगपईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं जीवदएणं बोहिदयणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मणायगेणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहतवरणाणदंसणधरेणं विअट्टच्छउमेणं जिणेणं जाणएणं तिन्नेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वण्णुणा सव्वदरिसिणा सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगतिणामधेयं ठाणं संपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पण्णत्ते, तंजहा आयारे १, सूयगडे २, ठाणे ३, समवाए ४, विवाहपण्णत्ती ५, णायाधम्मकहाओ ६, उवासगदसातो ७, अंतगडदसातो ८, अणुत्तरोववातियदसातो ९, पण्हावागरणाइं १०, विवागसुते ११, दिट्ठिवाए १२। तत्थ णं जे से चउत्थे अंगे समवाए त्ति आहिते तस्स णं अयमट्ठे, तंजहा (३) एके आता, एके अणाया। एगे दंडे, एगे अदंडे। एगा किरिया, एगा अकिरिया। एगे लोए, एगे अलोए। एगे धम्मे, एगे अधम्मे। एगे पुण्णे, एगे पावे। एगे बंधे, एगे मोक्खे। एगे आसवे, एगे संवरे। एगा वेयणा, एगा णिज्जरा। (४) जंबुदीव्वे दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। अपइट्ठाणे णरते एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। पालए जाणविमाणे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। (५) अद्दाणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते।चित्ताणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते।सातिणक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते। (६) इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं णेरइयाणं एगं पलितोवमं ठिती पण्णत्ता। इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिती पण्णत्ता। दोच्चाए णं पुढवीए णेरतियाणं जहण्णेणं एगं सागरोवमं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं एगं पलितोवमं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं साहियं सागरोवमं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमेज्जाणं देवाणं अत्थेगतियाणं एगं पलितोवमं ठिती पण्णत्ता। असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अत्थेगतियाणं एगं पलितोवमं ठिती पण्णत्ता। असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियसन्निमणुयाणं अत्थेगतियाणं एगं पलितो, वमं ठिती पण्णत्ता। वाणमंतराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलितोवमं ठिती पण्णत्ता। जोइसियाणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मे कप्पे देवाणं जहण्णेणं एगं पलितोवमं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मे कप्पे अत्थेगतियाणं देवाणं एगं सागरोवमं ठिती पण्णत्ता। ईसाणे कप्पे देवाणं जहण्णेणं सातिरेगं [एगं] पलितोवमं ठिती पण्णत्ता। ईसाणे कप्पे देवाणं अत्थेगतियाणं एगं सागरोवमं ठिती पण्णत्ता। (७) जे देवा सागरं सुसागरं सागरकंतं भवं मणुं माणुसुत्तरं लोगहियं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा एगस्स अद्धमासस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा णीससंति वा। तेसि णं देवाणं एगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति। (८) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे एगेणं भवग्गहणेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिणिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति। [२] ☆☆☆ (१) दो दंडा पण्णत्ता, तंजहा अट्ठादंडे चेव अणट्ठादंडे चेव। दुवे रासी पण्णत्ता, तंजहा जीवरासी चेव अजीवरासी चेव। दुविहे बंधणे पण्णत्ते, तंजहा रागबंधणे चेव दोसबंधणे चेव। (२) पुव्वाफग्गुणीणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते। उत्तराफग्गुणीणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते। पुव्वाभद्दवताणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते। उत्तराभद्दवताणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते। (३) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं णेरतियाणं दो पलितोवमाइं ठिती पण्णत्ता। दोच्चाए पुढवीए णं अत्थेगतियाण णेरतियाणं दो सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं दो पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। असुरिंदवज्जियाणं भोमेज्जाणं देवाणं उक्कोसेणं देसूणातिं दो पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। असंखेज्जावासाउयसउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अत्थेगतियाणं दो पलितोवमातिं ठिती

सौजन्य : प.पू. साध्वीश्री चारुलताश्रीजी म.सा. नी प्रेरणाथी भुलुन्ड अचलगच्छ जैन संघना भाईबहेनो तरफथी

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ता। असंखेज्जावासाउयसण्णिमणुस्साणं अत्थेगतियाणं दो पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मे कप्पे अत्थेगतियाणं देवाणं दो पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। ईसाणे कप्पे देवाणं अत्थेगतियाणं दो पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साहियातिं दो सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं दो सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। माहिंदे कप्पे देवाणं जहण्णेणं साहियातिं दो सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। (४) जे देवा सुभं सुभकंतं सुभवणं सुभगंधं सुभलेसं सुभफासं सोहम्मवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा दोण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं दोहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (५) अत्थेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे दोहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति। [३] ☆☆☆ (१) तओ दंडा पण्णत्ता, तंजहा मणदंडे वयदंडे कायदंडे। तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती। तओ सल्ला पण्णत्ता, तंजहा मायासल्ले णं नियाणसल्ले णं मिच्छादंसणसल्ले णं। तओ गारवा पण्णत्ता, तंजहा इड्ढीगारवे रसगारवे सायागारवे। तओ विराहणाओ पण्णत्ताओ, तंजहा नाणविराहणा दंसणविराहणा चरित्तविराहणा। (२) मिगसिरणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। पुस्सणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। जेट्ठाणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। अभीइणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। सवणणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। अस्सिणिणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। भरणिणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते। (३) इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं णेरतियाणं तिण्णि पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। दोच्चाए णं पुढवीए णेरतियाणं उक्कोस्सेणं तिण्णि सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। तच्चाए णं पुढवीए णेरतियाणं जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं तिण्णि पलितोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिण्णि पलितोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असंखेज्जवासाउयसण्णिगब्भवक्कंतियमणुस्साणं उक्कोसेणं तिण्णि पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं तिण्णि पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं तिण्णि सागरोवमातिं ठिति पण्णत्ता। (४) जे देवा आभंकरं पभंकरं आभंकरपभंकरं चंदं चंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवण्णं चंदलेसं चंदज्झयं चंदरूवं चंदसिंगं चंदसिट्ठं चंदकूडं चंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमातिं ठिति पण्णत्ता। ते णं देवा तिण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं तिहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। ५() संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे तिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति। [४]☆☆☆ (१) चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तंजहा कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए। चत्तारि झाणा पण्णत्ता, तंजहा अट्टे झाणे, रुद्दे झाणे, धम्मे झाणे सुक्के झाणे। चत्तारि विगहातो पण्णत्तातो, तंजहा इत्थिकहा भत्तकहा रायकहा देसकहा। चत्तारि सण्णा पण्णत्ता, तंजहा आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा। चउव्विहे बंधे पण्णत्ते, तंजहा पगडिबंधे ठितिबंधे अणुभावबंधे पदेसबंधे। चउगाउए जोयणे पण्णत्ते। (२) अणुराहाणक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते।पुव्वासाढणक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते।उत्तरासाढनक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते। (३) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं चत्तारि पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं चत्तारि सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं चत्तारि पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलितोवमाइं ठिती पण्णत्ता। सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। ४. जे देवा किट्ठिं सुकिट्ठिं किट्ठियावत्तं किट्ठिप्पभं किट्ठिजुत्तं किट्ठिवण्णं किट्ठिलेसं किट्ठिज्झयं किट्ठिसिंगं किट्ठिसिट्ठं किट्ठिकूडं किट्ठुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा चउण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं दंवाणं चउहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। ५. अत्थेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे चउहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति। [५] ☆☆☆ (१) पंच किरियातो पण्णत्तातो, तंजहा काइया

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिगरणिया पाओसिया पारितावणिया पाणातिवातकिरिया। पंच महव्वया पण्णत्ता, तंजहा सव्वातो पाणातिवातातो वेरमणं, सव्वातो मुसावायातो वेरमणं, सव्वातो जाव परिग्गहाओ वेरमणं। पंच कामगुणा पण्णत्ता, तंजहा सद्दा रूवा रसा गंधा फासा। पंच आसवदारा पण्णत्ता, तंजहा मिच्छत्तं अविरति पमाए कसाए जोगा। पंच संवरदारा पण्णत्ता, तंजहा सम्मत्तं विरति अप्पमादो अकसायया अजोगया। पंच निज्जरट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा पाणातिवातातो वेरमणं मुसावायातो वेरमणं अदिण्णादाणातो वेरमणं मेहुणातो वेरमणं परिग्गहातो वेरमणं। पंच समितीतो पण्णत्ताओ, तंजहा इरियासमिती भासासमिती एसणासमिती आयाणभंडनिक्खेवणासमिती ऊच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण- जल्लपारिट्ठावणियासमिती। पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तंजहा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए। (२) रोहिणीनक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते। पुणव्वसू नक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते। हत्थे नक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते। विसाहानक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते। धणिट्ठानक्खत्ते पंचतारे पण्णत्ते। (३) इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं पंच पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं पंच सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं पंच पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं पंच पलितोवमातिं ठिती पण्णत्ता। सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं पंच सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। (४) जे देवा वायं सुवायं वातवत्तं वातप्पभं वातकंतं वातवण्णं वातलेसं वातज्झयं वातसिंगं वातसिट्ठं वातकूडं वाउत्तरवडेंसगं सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवण्णं सूरलेसं सूरज्झयं सूरसिंगं सूरसिट्ठं सूरकूडं सूरुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पंच सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा पंचण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं पंचहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (५) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे पंचहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतं करेस्संति। **[६]** ☆☆☆ (१) छल्लेसातो पण्णत्तातो, तंजहा कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा। छज्जीवनिकाया पण्णत्ता, तंजहा पुढवीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सतिकाए तसकाए। छव्विहे बाहिरे तवोकम्मे पण्णत्ते, तंजहा अणसणे ओमोदरिया वित्तीसंखेवो रसपरिच्चातो कायकिलेसे संलीणया। छव्विहे अब्भंतरए तवोकम्मे पण्णत्ते, तंजहा पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं सज्झाओ झाणं उस्सग्गो। छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा वेयणासमुग्घाते कसायसमुग्घाते मारणंतियसमुग्घाते वेउव्वियसमुग्घाते तेयससमुग्घाते आहारसमुग्घाते। छव्विहे अत्थोग्गहे पण्णत्ते, तंजहा सोतेंदियअत्थोग्गहे चक्खुइंदियअत्थोग्गहे घाणिंदियअत्थोग्गहे जिब्भिंदियअत्थोग्गहे फासिंदियअत्थोग्गहे नोइंदियअत्थोग्गहे। (२) कत्तियानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते। असिलेसानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते। (३) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरतियाणं छ पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरतियाणं छ सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं छ पलितोवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं छ पलितोवमाइं ठिती पण्णत्ता। सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं छ सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (४) जे देवा सयंभुं सयंभुरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किट्ठिघोसं वीरं सुवीरं वीरगतं वीरसेयणियं वीरावतं वीरप्पभं वीरकंतं वीरवण्णं वीरलेसं वीरज्झयं वीरसिंगं वीरसिट्ठं वीरकूडं वीरुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं छ सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा छण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं छहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (५) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे छहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतं करेस्संति। **[७]** ☆☆☆ (१) सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलोगभए। सत्त समुग्घाता पण्णत्ता, तंजहा वेयणासमुग्घाते कसायसमुग्घाते मारणंतियसमुग्घाते वेउव्वियसमुग्घाते तेयससमुग्घाते आहारसमुग्घाते केवलिसमुग्घाते। समणे भगवं महावीरे सत्त रयणीतो उड्ढंउच्चतेणं होत्था। सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता, तंजहा चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मंदरे। सत्त वासा पण्णत्ता, तंजहा भरहे हेमवते हरिवासे महाविदेहे रम्मए हेरण्णवते एरावते। खीणमोहे णं भगवं मोहणिज्जवज्जातो सत्त कम्मपगतीओ वेदेति। (२) महानक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते। पाठान्तरेण अभियाईया सत्त नक्खत्ता कत्तियादीया सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता। महादीया सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता। अणुराहाइया

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्त नक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता। धणिट्ठाइया सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। तच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। चउत्थीए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सणंकुमारे कप्पे अत्थेगतियाणं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। माहिंदे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सातिरेगाइं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। बंभलोए कप्पे देवाणं जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा समं समप्पभं महापभं पभासं भासरं विमलं कंचणकूडं सणंकुमारवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा सत्तण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं सत्तहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे सत्तहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जाव अंतं करेस्संति। **[८]**

☆☆☆ (१) अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुतमए लाभमए इस्सरियमए। अट्ठ पवयणमाताओ पण्णत्ताओ, तंजहा इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडनिक्खेवणासमिई उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्लपरिट्ठावणियासमिई मणगुत्ती वतिगुत्ती कायगुत्ती। वाणमंतराणं देवाणं चेतियरूक्खा अट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। जंबू णं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। कूडसामली णं गरुलावासे अट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ते। जंबुद्दीविया णं जगती अट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। अट्ठसमइए केवलिसमुग्घाते पण्णत्ते, तंजहा पढमे समए दंडकरेति, बीए समए कवाडं करेति, ततिए समए मंथं करेति, चउत्थे समए मंथंतराइं पूरेति, पंचमे समए मंथंतराइं पडिसाहरति, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरति, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरति, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरति, ततो पच्छा सरीरत्थे भवति। पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तंजहा सुभे य सुभघोसे य वसिट्ठे बंभयारि य। सोमे सिरिधरे चेव, वीरभद्दे जसे इ य ॥१॥ (२) अट्ठ नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं पमद्दं जोगं जोएंति, तंजहा कत्तिया१, रोहिणी २, पुणव्वसू ३, महा ४, चित्ता ५, विसाहा ६, अणुराहा ७, जेट्ठा ८। (३) इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। चउत्थीए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। बंभलोए कप्पे अत्थेगतियाणं देवाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (४) जे देवा अच्चिं अच्चिमालिं वइरोयणं पभंकरं चंदाभं सुराभं सुपतिट्ठाभं अग्गिच्चाभं रिट्ठाभं अरुणाभं अरुणुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा अट्ठण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं अट्ठहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (५) संतेगतिया भवसिद्धिया जाव अट्ठहिं अंतं करेस्संति। **[९]**

☆☆☆ (१) नव बंभचेरगुत्तीओ पण्णत्तातो, तंजहा नो इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणि सेज्जासणाणि सेवित्ता भवति १, नो इत्थीणं कहं कहित्ता भवइ २, नो इत्थीणं ठाणाइं सेवित्ता भवति ३, नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएत्ता निज्झाएत्ता [भवति] ४, नो पणीयरसभोई ५, नो पाण-भोयणस्स अइमायं आहारइत्ता ६, नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलिआइं सुमरइत्ता भवइ ७, नो सद्दाणुवाती नो रूवाणुवाती नो गंधाणुवाती नो रसाणुवाती नो फासाणुवाती नो सिलोगाणुवाती ८, नो सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवति ९। नव बंभचेरअगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणं सेज्जासणाणं सेवणया जाव सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवति। नव बंभचेरा पण्णत्ता, तंजहा -"सत्थपरिण्णा लोगविजओ सीओसणिज्जं सम्मत्तं। आवंती धुतं विमोहायणं उवहाणसुतं महपरिण्णा" ॥२॥ पासे णं अरहा पुरिसादाणीए नव रयणीओ उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। (२) अभीजिणक्खत्ते साइरेगे णव मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति। अभीजियाइया णं णव णक्खत्ता चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, तंजहा अभीजि, सवणो, जाव भरणी। इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो नव जोयणसते उड्ढं अबाहाते उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति। जंबुद्दीवे णं दीवे णवजोयणिया मच्छा पविसिंसु वा (३)।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजयस्स णं दारस्स एगमेगाए बाहाए णव णव भोमा पण्णत्ता। वाणमंतराणं देवाणं सभाओ सुधम्माओ णव जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ताओ। दंसणावरणिज्जस्स णं कम्मस्स णव उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ, तंजहा णिद्दा पयला णिद्दाणिद्दा पयलापयला थीणगिद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे। (३) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं नव पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। चउत्थीए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं नव सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं नव पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं नव पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। बंभलोए कप्पे अत्थेगतियाणं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (४) जे देवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पभं पम्हकंतं पम्हवण्णं पम्हलेसं जाव पम्हुत्तरवडेंसंगं सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जप्पभं सुज्जकंतं जाव सुज्जुत्तरवडेंसगं रुतिल्लं रुतिल्लावत्तं रुतिल्लप्पभं जाव रुतिल्लुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसिं णं देवाणं [उक्कोसेणं] ? नव सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा नवण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं नवहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (५) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे नवहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेस्संति ॥ [१०] ☆☆☆ (१) दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तंजहा खंती १, मुत्ती २, अज्जवे ३, मद्दवे ४, लाघवे ५, सच्चे ६, संजमे ७, तवे ८, चियाते ९, बंभचेरवासे १०। दस चित्तसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुव्वा समुप्पज्जेज्जा सव्वं धम्मं जाणित्तए १, सुमिणदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा अहातच्चं सुमिणं पासित्तए २, सण्णिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेजा पुव्वभवे सुमरित्तए ३, देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए ४, ओहिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा ओहिणा लोगं जाणित्तए ५, ओहिदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा ओहिणा लोगं पासित्तए ६, मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा मणोगए भावे जाणित्तए ७, केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलं लोगं जाणित्तए ८, केवलदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलं लोयं पासित्तए ९, केवलिमरणं वा मरेज्जा सव्वदुक्खप्पहाणाए १०। मंदरे णं पव्वते मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ते। अरहा णं अरिट्ठनेमी दस धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। कण्हे णं वासुदेवे दस धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। रामे णं बलदेवे दस धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। (२) दस नक्खत्ता नाणविद्धिकरा पण्णत्ता, तंजहा मिगसिर अद्दा पूसो, तिण्णि य पुव्वाइं मूलमस्सेसा। हत्थो चिता य तहा, दस विद्धिकराइं नाणस्स ॥२॥ अकम्मभूमियाणं मणुयाणं दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताते उवत्थिया पण्णत्ता, तंजहा मत्तंगया य भिंगा, तुडियंगा दीव जोइ चित्तंगा। चित्तरसा मणियंगा, गेहागारा अनियणा य ॥४॥ (३) इमीसे [णं] रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता। इमीसे णं रयणपभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं दस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। चउत्थीए पुढवीए दस निरयावाससतसहस्सा पण्णत्ता। चउत्थीए पुढवीए [नेरइयाणं] उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। पंचमाए पुढवीए [नेरइयाणं] जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता। असुरिंदवज्जाणं भोमेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं दस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। बादरवणप्फतिकाइयाणं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता। वाणमंतराणं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं दस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। बंभलोए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। लंतए कप्पे देवाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (४) जे देवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुस्सरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावतिं बंभलोगवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा दसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (५) अत्थेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे दसहिं भवग्गहणेहिं जाव करेस्संति ॥ [११] ☆☆☆ (१). एक्कारस उवासगपडिमातो पण्णत्तातो, तंजहा दंसणसावए १, कतव्वयकम्मे २, सामातियकडे ३, पोसहोववासणिरते ४, दिया बंभयारी, रत्तिं परिमाणकडे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५, दिआ वि राओ वि बंभयारी, असिणाती, विअडभोती, मोलिकडे ६, सचित्तपरिण्णाते ७, आरंभपरिण्णाते ८, पेसपरिण्णाते ९, उद्दिट्ठभत्तपरिण्णाते १०, समणभूते यावि भवति समणाउसो ११। (२) लोगंताओ णं एक्कारसहिं एक्कारेहिं जोयणसतेहिं अबाहाए जोतिसंते पण्णत्ते। जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वतस्स एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसतेहिं [अबाहाए] जोतिसे चारं चरति। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स एक्कारस गणहरा होत्था तंजहा इंदभूती अग्गिभूती वायुभूती वियत्ते सुहम्मे मंडिते मोरियपुत्ते अकंपिते अयलभाया मेतज्जे पभासे। मूलनक्खत्ते एक्कारसतारे पण्णत्ते। हेट्ठिमगेवेज्जगाणं देवाणं एक्कारसुत्तरं गेवेज्जविमाणसतं भवति त्ति मक्खायं। मंदरे णं पव्वते धरणितलाओ सिहरतले एक्कारसभागपरिहीणे उच्चत्तेणं पण्णत्ते। (३). इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। पंचमाए पुढवीए [अत्थेगतियाणं नेरइयाणं] एक्कारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु [अत्थेगतियाणं देवाणं] एक्कारस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। ४. लंतए कप्पे अत्थेगतियाणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। जे देवा बंभं सुबंभं बंभावत्तं बंभप्पभं बंभकंतं बंभवण्णं बंभलेसं बंभज्झयं बंभसिंगं बंभसिट्ठं बंभकूडं बंभुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं [उक्कोसेणं ?] एक्कारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा एकारसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं एक्कारसण्हं वाससहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जति। ५. संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे एक्कारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति। [१२] ☆☆☆(१). बारस भिक्खुपडिमातो पण्णत्तातो, तंजहा मासिया [भिक्खुपडिमा], दोमासिया [भिक्खुपडिमा], तेमासिया [भिक्खुपडिमा], चाउम्मासिया [भिक्खुपडिमा], पंचमासिया [भिक्खुपडिमा], छम्मासिया [भिक्खुपडिमा], सत्तमासिया [भिक्खुपडिमा], पढमा सत्तरातिंदिया भिक्खुपडिमा, दोच्चा सत्तरातिंदिया भिक्खुपडिमा, तच्चा सत्तरातिंदिया भिक्खुपडिमा, अहोरातिया भिक्खुपडिमा, एक्करातिया भिक्खुपडिमा। दुवालसविहे संभोगे पण्णत्ते, तंजहा -''उवहि सुय भत्तपाणे अजंलीपग्गहे ति य। दायणे य निकाए य, अब्भुट्ठाणे ति यावरे'' ॥५॥ ''कितिकम्मस्स य करणे, वेयावच्चकरणे ति य। समोसरण सन्निसेज्जा य, कहाते य पबंधणे'' ॥६॥ ''दुवालसावत्ते कितिकम्मे पण्णत्ते, तंजहा दुओणयं जहाजायं, कितिकम्मं बारसावयं। चउसिरं तिगुत्तं, दुपवेसं एगनिक्खमणं'' ॥७॥ विजया णं रायधाणी दुवालस जोयणसहस्साइं आयमविक्खंभेणं पण्णत्ता। रामे णं बलदेवे दुवालस वाससताइं सव्वाउयं पालइत्ता देवत्ति गए। मंदरस्स णं पव्वतस्स चूलिया मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स वेतिया मूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। सव्वजहण्णिया राती दुवालसमुहुत्तिया पण्णत्ता। एवं दिवसो वि णायव्वो। सव्वट्ठसिद्धस्स णं महाविमाणस्स उवरिल्लातो थूभियग्गातो दुवालस जोयणाइं उड्ढं उप्पतित्ता ईसिंपब्भारा नामं पुढवी पण्णत्ता। ईसिंपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा ईसि त्ति वा ईसिपब्भार त्ति वा तणू ति वा तणुयतरि त्ति वा सिद्धी ति वा सिद्धालए ति वा मुत्ती ति वा मुत्तालए ति वा बंभे ति वा बंभवडेंसग ति वा लोकपडिपूरणे त्ति वा लोगग्गचूलिया ति वा। (२). इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतिआणं नेरइआणं बारस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। पंचमाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं बारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं बारस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं बारस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। लंतए कप्पे अत्थेगतियाणं देवाणं बारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३). जे देवा महिंदं महिंदज्झयं कंबुं कंबुग्गीवं पुंखं सुपुंखं महापुंखं पुंडं सुपुंडं महापुंडं नरिंदं नरिंदोकंतं नरिंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा बारसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं बारसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४). अत्थेगतिया भवसिद्धिआ जीवा जे बारसहिं भग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतं करेस्संति। [१३] ☆☆☆ (१). तेरस किरियट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा अट्ठादंडे, अणट्ठादंडे, हिंसादंडे, अकम्हादंडे, दिट्ठिविपरियासियादंडे, मुसावायवत्तिए, अदिन्नादाणवत्तिए, अब्भ(ज्झ ?)त्थिए, माणवत्तिए, मित्तदोसवत्तिए, मायावत्तिए, लोभवत्तिए, इरिआवहिए णामं तेरसमे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरस विमाणपत्थडा पण्णत्ता। सोहम्मवडेंसगे णं विमाणे णं अद्धतेरस जोयणसतसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। एवं ईसाणवडेंसगे वि। जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं अद्धतेरस जातिकुलकोडीजोणिपमुहसतसहस्सा पण्णत्ता। पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता। गब्भवक्कंति अपंचेंदिअतिरिक्खजोणिआणं तेरसविहे पओगे पण्णत्ते, तंजहा सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे असच्चामोसमणपओगे सच्चवतिपओगे मोसवतिपओगे सच्चामोसवतिपओगे असच्चामोसवतीपओगे ओरालियसरीरकायपओगे ओरालियमीससरीरकायपओगे वेउव्वियअसरीरकायपओगे वेउव्वियमीससरीरकायपओगे कम्मसरीरकायपओगे। सूरमंडले जोयणेणं तेरसहिं एक्कसट्ठिभागेहिं जोयणस्स ऊणे पण्णत्ते। (२). इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं तेरस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। पंचमाए णं पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं तेरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं तेरस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं तेरस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। लंतए कप्पे अत्थेगतियाणं देवाणं तेरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३). जे देवा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्तं वज्जप्पभं वज्जकंतं वज्जवण्णं वज्जलेसं वज्जज्झयं वज्जसिंगं वज्जसिट्ठं वज्जकूडं वज्जुत्तरवडेंसगं वइरं वइरावत्तं जाव वइरुत्तरवडेंसगं लोगं लोगावत्तं लोगप्पभं जाव लोगुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तेरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा तेरसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४). अत्थेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे तेरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति। १४ ☆☆☆ (१). चोद्दस भूयग्गामा पण्णत्ता, तंजहा सुहुमा अपज्जत्तया, सुहुमा पज्जत्तया, बादरा अपज्जत्तया, बादरापज्जत्तया, बेइंदिया अपज्जत्तया, बेइंदिया पज्जत्तया, तेइंदिया अपज्जत्तया, तेइंदिया पज्जत्तया, चउरिंदिया अपज्जत्तया, चउरिंदिया पज्जत्तया, पंचिंदिया असन्निअपज्जत्तया, पंचिंदिया असन्निपज्जत्तया, पंचिंदिया सन्निअपज्जत्तया, पंचिंदिया सन्निपज्जत्तया। चोद्दस पुव्वा पण्णत्ता, तंजहा -''उप्पायपुव्वमग्गेणियं च ततियं च वीरियं पुव्वं। अत्थीणत्थिपवायं तत्तो नाणप्पवायं च'' ॥८॥ ''सच्चप्पवायपुव्वं तत्तो आयप्पवायपुव्वं च। कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं भवे नवमं ॥९॥ ''विज्जाअणुप्पवायं अवंझ पाणाउ बारसं पुव्वं। तत्तो किरियविसालं पुव्वं तह बिंदुसारं च'' ॥१०॥ अग्गेणीयस्स णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू पण्णत्ता। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स चोद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपदा होत्था। कम्मविसोहिमग्गणं पडुच्च चोद्दस जीवट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा मिच्छदिट्ठी, सासायणसम्मदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठि, अविरतसम्मद्दिट्ठी, विरताविरतसम्मदिट्ठी, पमत्तसंजते, अप्पमत्तसंजते, नियट्टि, अनियट्टिबायरे, सुहुमसंपराए उवसामए वा खमए वा, उवसंतमोहे, खीणमोहे, सजोगी केवली, अजोगी केवली। भरहेरवयाओ णं जीवाओ चोद्दस चोद्दस जोयणसहस्साइं चत्तारि य एक्कुत्तरे जोयणसते छच्च एकूणवीसइभागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ते। एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चोद्दस रयणा पण्णत्ता, तंजहा इत्थीरयणे सेणावतिरयणे गाहावतिरयणे पुरोहितरयणे वड्ढइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे असिरयणे दंडरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागणिरयणे। जंबुद्दीवे णं दीवे चोद्दस महानदीओ पुव्वावरेणं लवणं समुद्दं समप्पेंति, तंजहा गंगा सिंधू रोहिया रोहियंसा हरी हरिकंता सीता सीतोदा णरकंता णारिकंता सुवण्णकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवती। (२). इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं चोद्दस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। पंचमाए णं पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं चोद्दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं चोद्दस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं चोद्दस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। लंतए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं चोद्दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। महासुक्के कप्पे देवाणं जहण्णेणं चोद्दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा सिरिकंतं सिरिमहिअं सिरिसोमणसं लंतयं काविट्ठं महिंदं महिंदोकंतं महिंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं चोद्दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा चोद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं चोद्दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे चोद्दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति।

[१५] ☆☆☆ (१). पण्णरस परमाहम्मिया पण्णत्ता, तंजहा अंबे अंबरिसी चेव, सामे सबले त्ति यावरे। रुद्दोवरुद्द काले य, महाकाले त्ति यावरे ॥११॥ असिपत्ते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणु कुम्भे वालुए वेयरणी ति य। खरस्सरे महाघोसे एते पण्णरसाहिया ॥ ॥१२॥ णमी णं अरहा पण्णरस धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। धुवराहू णं बहुलपक्खस्स पाडिवयं पन्नरसतिभागं पन्नरसतिभागेणं चंदस्स लेसं आवरेत्ता णं चिट्ठति, तंजहा पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं। तं चेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे चिट्ठति, तंजहा पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं। २. छण्णक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता पण्णत्ता, तंजहा सतभिसय भरणि अद्दा, असिलेसा साइ तह य जेट्ठा य। एते छण्णक्खत्ता, पण्णरसमुहुत्तसंजुत्ता ॥१३॥ चेत्तासोएसु मासेसु पन्नरसमुहुत्तो दिवसो भवति, सइ पण्णरसमुहुत्ता राती भवति। अणुप्पवायस्स णं पुव्वस्स पन्नरस वत्थू पण्णत्ता। मणूसाणं पण्णरसविहे पओगे पण्णत्ते, तंजहा सच्चमणपओगे, एवं मोसमणपओगे, सच्चामोसमणपओगे, असच्चामोसमणपओगे, एवं सच्चवतीपओगे, मोसवतीपओगे, सच्चामोसवतीपओगे, असच्चामोसवतीपओगे, ओरालियसरीरकायपओगे, ओरालियमीससरीरकायपओगे, वेउव्वियसरीरकायपओगे, वेउव्वियमीससरीरकायपओगे, आहारयसरीरकायप्पओगे, आहारयमीससरीरकायप्पओगे कम्मयसरीरकायपओगे। (३). इमीसे णं रयणपभाए पुढवीए [अत्थेगतियाणं नेरइआणं] पण्णरस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। पंचमाए णं पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं पण्णरस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। महासुक्के कप्पे अत्थेगतियाणं देवाणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (४). जे देवा णंदं सुणंदं णंदावत्तं णंदप्पभं णंदकंतं णंदवण्णं णंदलेसं जाव णंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा पण्णरसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं पण्णरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (५). अत्थेगतिया भवसिद्धया जीवा जे पन्नरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतं करिस्संति। [१६] ☆☆☆ (१). सोलस य गाहासोलसगा पण्णत्ता, तंजहा समए १, वेयालिए २, उवसग्गपरिण्णा ३, इत्थिपरिण्णा ४, निरयविभत्ती ५, महावीरथुई ६, कुसीलपरिभासिए ७, वीरिए ८, धम्मे ९, समाही १०, मग्गे ११, समोसरणे १२, अहातहिए १३, गंथे १४, जमतीते १५, गाहा १६। सोलस कसाया पण्णत्ता, तंजहा अणंताणुबंधी कोहे, एवं माणे, माया, लोभे। अपच्चक्खाणकसाए कोहे, एवं माणे माया, लोभे। पच्चक्खाणावरणे कोहे, एवं माणे, माया, लोभे। संजलणे कोहे, एवं माणे, माया, लोभे। मंदरस्स णं पव्वतस्स सोलस नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा मंदर १ मेरु २ मणोरम ३ सुदंसण ४ सयंपभे ५ य गिरिराया ६। रयणुच्चय ७ पियदंसण ८ मज्झे लोगस्स ९ नाभी १० य ॥१४॥ अत्थे य ११ सूरियावत्ते १२ सूरियावरणे १३ ति य। उत्तरे य १४ दिसाई य १५ वडेंसे १६ इ य सोलसे ॥१५॥ (२). पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स सोलस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपदा होत्था। आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता। चमर-बलीणं ओवारियालेणे सोलस जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। लवणे णं समुद्दे सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेहपरिवुड्ढीए पण्णत्ते। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। पंचमाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं सोलस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं सोलस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं सोलस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। महासुक्के कप्पे अत्थेगतियाणं देवाणं सोलस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३). जे देवा आवत्तं वियावत्तं नंदियावत्तं महाणंदियावत्तं अंकुसं अंकुसपलंबं भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वओभद्दं भद्दुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सोलस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा सोलसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं सोलसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे सोलसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतं करेस्संति। [१७] ☆☆☆ (१) सत्तरसविहे असंजमे पण्णत्ते, तंजहा पुढविकाइयअसंजमे आउकाइयअसंजमे तेउकाइयअसंजमे वाउकाइयअसंजमे वणस्सइकाइयअसंजमे बेइंदियअसंजमे तेइंदियअसंजमे चउरिंदियअसंजमे पंचिंदियअसंजमे अजीवकायअसंजमे पेहाअसंजमे उपेहाअसंजमे अवहट्टुअसंजमे अपमज्जणाअसंजमे मणअसंजमे वतिअसंजमे कायअसंजमे।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तरसविहे संजमे पण्णत्ते, तंजहा पुढवीकायसंजमे एवं जाव कायसंजमे। माणुसुत्तरे णं पव्वते सत्तरस एक्कवीसे जोयणसते उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ते। सव्वेसिं पि णं वेलंधर-अणुवेलंधरणागराईणं आवासपव्वया सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। लवणे णं समुद्दे सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते। इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो सातिरेगाइं सत्तरस जोयणसहस्साइं उड्ढं उप्पतित्ता ततो पच्छा चारणाणं तिरियं गती पवत्तती। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो तिगिंछिकूडे उप्पातपव्वते सत्तरस एकवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ते। बलिस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो रुयगिंदे उप्पातपव्वते सत्तरस जोयणसयाइं सातिरेगाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ते। सतरसविहे मरणे पण्णत्ते, तंजहा आवीइमरणे ओहिमरणे आयंतियमरणे वलातमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भयमरणे बालमरणे पंडितमरणे बालपंडितमरणे छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहासमरणे गद्धपट्ठमरणे भत्तपच्चक्खाणमरणे इंगिणिमरणे पाओवगमणमरणे। सुहुमसंपराए णं भगवं सुहुमसंपरायभावे वट्टमाणे सत्तरस कम्मपगडीओ णिबंधति, तंजहा आभिणिबोहियणाणावरणे, एवं सुतोहि-मण-केवल [णाणावरणे]। चक्खुदंसणावरणं, एवं अचक्खु-ओही-केवलदंसणावरणं। सायावेयणिज्जं, जसोकित्तिनामं, उच्चागोतं। दाणंतराइयं, एवं लाभ-भोग-उवभोग-वीरियअंतराइयं। (२) इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। पंचमाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। छट्ठीए पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। महासुक्के कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। सहस्सारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा सामाणं सुसामाणं महासामाणं पउमं महापउमं कुमुदं महाकुमुदं नलिणं महाणलिणं पोंडरियं महापोंडरियं सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहोकंतं सीहवियं भावियं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा सत्तरसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं सत्तरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। ४ संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे सत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति। [१८] ☆☆☆(१) अट्ठारसविहे बंभे पण्णत्ते, तंजहा ओरालिए कामभोगे णेव सयं मणेणं सेवइ, नो वि अण्णं मणेणं सेवावेइ, मणेणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणइ, ओरालिए कामभोगे णेव सयं वायाए सेवति, नो वि अण्णं वायाए सेवावेइ, वायाए सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणइ, ओरालिए कामभोगे णेव सयं कायेणं सेवइ, णो वि अण्णं काएणं सेवावेइ, काएणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणति, दिव्वे कामभोगे णेव सयं मणेणं सेवति, तह चेव णव आलावगा। अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपदा होत्था। समणेणं भगवता महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं सखुड्डयवियत्ताणं अट्ठारस ठाणा पण्णत्ता, तंजहा वयछक्क ६ कायछक्कं १२, अकप्पो १३ गिहिभायणं १४। पलियंक १५ निसिज्जा य, १६ सिणाणं १७ सोभवज्जणं १८ ॥१६॥ आयारस्स णं भगवतो सचूलियागस्स अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णताइं। बंभीए णं लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ते, तंजहा बंभी जवणालिया दासऊरिया खरोट्ठिया पुक्खरसाविया पहाराइया उच्चत्तरिया अक्खरपुट्ठिया भोगवयता वेयणतिया णिण्हइया अंकलिवि गणियलिवि गंधव्वलिवि आदंसलिवि माहेसरलिवि दमिडलिवि पोलिंदि [लिवि]। अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू पण्णत्ता। धूमप्पभा णं पुढवी अट्ठारसुत्तरं जोयणसयसहस्सं बाहल्लेणं पण्णत्ता। पोसासाढेसु णं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, सइ उक्कोसेणं अट्ठारस मुहुत्ता राती [भवइ]। (२) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सहस्सारे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। आणए कप्पे देवाणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिट्ठं सालं समाणं दुमं महादुमं विसालं सुसालं पउमं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीयं पुंडरीयगुम्मं सहस्सारवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसिं णं देवाणं [उक्कोसेणं] अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा अट्ठारसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं अट्ठारसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया [भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति] जाव अंतं करेस्संति। [१९] ☆☆☆ (१). एकूणवीसं णायज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा -"उक्खित्तणाए १ संघाडे २, अंडे ३ कुम्मे य ४ सेलये ५। तुंबे य ६ रोहिणी ७ मल्ली ८, मागंदी ९ चंदिमा ति य १०" ॥१७॥ "दावद्दवे ११ उदगणाते १२ मंडुक्के १३ तेतली १४ इ य। नंदिफले १५ अवरकंका १६ आइण्णे १७ सुंसमा ति य १८" ॥१८॥ अवरे य पुंडरीए णाए एगूणवीसइमे १९। जंबूद्दीवे णं दीवे सूरिया उक्कोसेणं एगूणवीसं जोयणसताइं उड्ढमहो तवंति। सुक्के णं महग्गहे अवरेणं उदिए समाणे एगूणवीसं णक्खत्ताइं समं चारं चरित्ता अवरेणं अत्थमणं उवागच्छति। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स कलाओ एगूणवीसं छेयणाओ पण्णत्ताओ। एगूणवीसं तित्थयरा अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइया। (२). इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं एगूणवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। आणयकप्पे देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। पाणए कप्पे देवाणं जहण्णेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३). जे देवा आणतं पाणतं णतं विणतं घणं सुसिरं इंदं इंदोकंतं इंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा एगूणवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं एगूणवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) अत्थेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे एगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति। [२०] ☆☆☆ (१). वीसं असमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा दवदवचारि यावि भवति १, अपमज्जितचारि यावि भवति २, दुप्पमज्जितचारि यावि भवति ३, अतिरित्तसेज्जासणिए ४, रातिणियपरिभासी ५, थेरोवघातिए ६, भूओवघातिए ७, संजलणे ८, कोधणे ९, पिट्ठिमंसिए १०, अभिक्खणं अभिक्खणं ओधारइत्ता भवति ११, णवाणं अधिकरणाणं अणुप्पण्णाणं उप्पाएत्ता भवति १२, पोराणाणं अधिकरणाणं खामितविओसवियाणं पुणो उदीरेता भवति १३, ससरक्खपाणिपाए १४, अकालसज्झायकारए यावि भवति १५, कलहकरे १६, सद्दकरे १७, झंझकरे १८, सूरप्पमाणभोई १९, एसणाऽसमिते यावि भवति २०। मुणिसुव्वते णं अरहा वीसं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। सव्वे वि णं घणोदही वीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ता। पाणयस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वीसं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। णपुंसयवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बंधओ बंधट्ठिती पण्णत्ता। पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता। उसप्पिणि-ओसप्पिणिमंडले वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ काले पण्णत्ते। (२) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं वीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं वीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं वीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। पाणते कप्पे देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। आरणे कप्पे देवाणं जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा सातं विसातं सुविसायं सिद्धत्थं उप्पलं रुतिलं तिगिच्छं दिसासोवत्थियं वद्धमाणयं पलंबं पुप्फं सुपुप्फं पुप्फावत्तं पुप्फपभं पुप्फकंतं पुप्फवण्णं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिट्ठं पुप्फकूडं पुप्फत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा वीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति [जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेस्संति]। [२१] ☆☆☆ (१). एक्कवीसं सबला पण्णत्ता, तंजहा हत्थकम्मं करेमाणे सबले १, मेहुणं पडिसेवमाणे सबले २, रातीभोयणं भुंजमाणे [सबले] ३, आहाकम्मं भुंजमाणे [सबले] ४, सागारियं पिंडं भुंजमाणे सबले ५, उद्देसियं कीतमाहट्टु जाव अभिक्खणं अभिक्खणं सीतोदयवियडवग्घारियपाणिणा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहित्ता भुंजमाणे सबले

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

। णियट्टिबादरस्स णं खवितसत्तयस्स मोहणिज्जस्स एक्कवीसं कम्मंसा संतकम्मं पण्णत्ता, तंजहा अपच्चक्खाणकसाए कोहे, एवं माणे माया लोभे। पच्चक्खाणकसाए कोहे, एवं माणे माया लोभे। संजलणे कोधे, एवं माणे माया लोभे। इत्थिवेदे, पुमवेदे, णपुंसयवेदे, हासे अरति, रति, भय, सोके, दुगुंछा। एक्कमेक्काए णं ओसप्पिणीए पंचम-छट्ठीतो समातो एक्कवीसं एक्कवीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्तातो, तंजहा दूसमा, दूसमदूसमा य। एगमेगाए णं उस्सप्पिणीए पढम-बितियातो समातो एक्कवीसं एक्कवीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्तातो, तंजहा दुसमदूसमा, दूसमा य। (२). इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। आरणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। अच्चुते कप्पे देवाणं जहण्णेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३). जे देवा सिरिवच्छं सिरिदामगंडं मल्लं किट्ठिं चावोण्णतं आरणवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा एक्कवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४). संतेगतिया भवसिद्धिया [जीवा जे एक्कवीसाए भवग्गहणेहिं सिझस्संति] जाव सव्वदुक्खाणमंतं] करेस्संति॥ [२२] ☆☆☆ (१) बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तंजहा दिगिंछापरीसहे १, पिवासापरीसहे २, सीतपरीसहे ३, उसिणपरीसहे ४, दंसमसगफासपरीसहे ५, अचेलपरीसहे ६, अरतिपरीसहे ७, इत्थिपरीसहे ८, चरियापरीसहे ९, णिसीहियापरीसहे १०, सेज्जापरीसहे ११, अक्कोसपरीसहे १२, वधपरीसहे १३, जायणपरीसहे १४, अलाभपरीसहे १५, रोगपरीसहे १६, तणपरीसहे १७, जल्लपरीसहे १८, सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९, अण्णाणपरीसहे २० दंसणपरीसहे २१, पण्णापरीसहे २२। दिट्ठिवायस्स णं बावीसं सुत्ताइं छिन्नछेयणयियाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए, बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नछेयणयियाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए, बावीसं सुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए, बावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए। बावीसतिविधे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तंजहा कालयवण्णपरिणामे, नीलवण्णपरिणामे, लोहियवण्णपरिणामे, हालिद्दवण्णपरिणामे, सुक्किलवण्णपरिणामे। सुब्भिगंधपरिणामे, एवं दुब्भिगंधे वि। तित्तरसपरिणामे, एवं पंच वि रसा। कक्खडफासपरिणामे मउयफासपरिणामे, गुरुफासपरिणामे, लहुफासपरिणामे, सीतफासपरिणामे, उसिणफासपरिणामे, णिद्धफासपरिणामे, लुक्खफासपरिणामे, गरुयलहुयपरिणामे, अगरुयलहुयपरिणामे। (२) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं बावीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। छट्ठीए पुढवीए णेरइयाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहेसत्तमाए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं बावीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अच्चुत्ते कप्पे देवाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा महितं विस्सुत्तं विमलं पभासं वणमालं अच्चुत्तवडेंसगं विमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसिं णं देवाणं [उक्कोसेणं ?] बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा बावीसं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं बावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे बावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति॥ [२३] ☆☆☆ (१). तेवीसं सूयगडज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा समए १, वेतालिए२, उवसग्गपरिण्णा ३, थीपरिण्णा ४, नरयविभत्ती ५, महावीरथुई ६, कुसीलपरिभासिते ७, वीरिए ८, धम्मे ९, समाही १०, मग्गे ११, समोसरणे १२, आहत्तहिए १३, गंथे १४, जमतीते १५, गाथा १६, पुंडरीए १७, किरियट्ठाणे १८, आहारपरिण्णा १९, पच्चक्खाणकिरिया २०, अणगारसुतं २१, अद्दइज्जं २२, णालंदतिज्जं २३। (२). जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसाए जिणाणं सूरग्गमणमुहुत्तंसि केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे। जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे एक्कारसंगिणो होत्था, तंजहा अजित संभव अभिणंदण जाव पासो वद्धमाणो य। उसभे णं अरहा कोसलिए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोद्दसपुव्वी होत्था। जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे मंडलियरायाणो होत्था, तंजहा अजित संभव जाव वद्धमाणो य। उसभे णं अरहा कोसलिए चक्कवट्टी होत्था। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहेसत्तमाए णं पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। हेट्ठिममज्झिमगेवेज्झाणं देवाणं जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३). जे देवा हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।ते णं देवा तेवीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति॥ [२४] ☆☆☆ (१) चउवीसं देवाहिदेवा पण्णत्ता, तंजहा उसभ अजित जाव वद्धमाणे। चुल्लहिमवंत-सिहरीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ चउवीसं चउवीसं जोयणसहास्साइं णव बत्तीसे जोयणसते एगं च अट्ठतीसभागं जोयणस्स किंचिविसेसाहिताओ आयामेणं पण्णत्ताओ। चउवीसंदेवट्ठाणा सइंदया पण्णत्ता। सेसा अहमिंदा अणिंदा अपुरोहिता। उत्तरायणगते णं सूरिए चउवीसंगुलिए पोरिसीछायं णिव्वत्तइत्ता णं णियट्टति। गंगा-सिंधूओ णं महाणदीओ पवहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं पण्णत्ताओ। रत्त-रत्तवतीओ णं महाणदीओ पवहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं पण्णत्तातो। (२) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं णेरइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ३. जे देवा हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।ते णं देवा चउवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं चउवीसाए वाससहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जति। ४ संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे चउवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति [जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति]॥ [२५] ☆☆☆ (१) पुरिमपच्छिमताणं तित्थगराणं पंचजामस्स पणुवीसं भावणाओ पण्णत्ताओ, तंजहा इरियासमिति, मणगुत्ती, वइगुत्ती, आलोयभायणभोयणं, आदाणभंडनिक्खेवणासमिति ५, अणुवीतिभासणया, कोहविवेगे, लोभविवेगे, भयविवेगे, हासविवेगे १०, उग्गहअणुण्णवणता, उग्गहसीमजाणणता, सयमेव उग्गहअणुगेण्हणता, साहम्मियउग्गहं अणुण्णविय परिभुंजणता, साहारणभत्तपाणं अणुण्णविय परिभुंजणता १५, इत्थी-पसु-पंडगसंसत्तसयणासणवज्जणता, इत्थीकहविवज्जणया, इत्थीए इंदियाणमालोयणवज्जणता, पुव्वरत-पुव्वकीलियाणं अणणुसरणता, पणीताहारविवज्जणता २०, सोइंदियरागोवरती, एवं पंच वि इंदिया २५। मल्ली णं अरहा पणुवीसं धणूतिं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। सव्वे वि णं दीहवेयड्ढपव्वया पणुवीसं पणुवीसं जोयणाणि उड्ढंउच्चत्तेणं, पणुवीसं पणुवीसं गाउयाणि उव्वेधेणं पण्णत्ता। दोच्चाए णं पुढवीए पणुवीसं णिरयावाससयवसहस्सा पण्णत्ता। आयरस्स णं भगवतो सचूलियायस्स पणुवीसं अज्झीणा पण्णत्ता। मिच्छादिट्ठिविगलिंदिए णं अपज्जत्तए संकिलिट्ठपरिणामे णामस्स कम्मस्स पणुवीसं उत्तरपगडीओ णिबंधति, तंजहा तिरियगतिणामं, वियलिंदियजातिणामं, ओरालियसरीरणामं, तेयगसरीरणामं, कम्मगसरीरणामं, हुंडसंठाणणामं, ओरालियसरीरंगोवंगणामं, सेवट्ठसंघयणणामं, वण्णनामं, गंधणामं, रसणामं, फासणामं, तिरियाणुपुव्विणामं, अगरूलहुनामं, उवघातणामं, तसणामं, बादरणामं, अपज्जत्तयणामं, पत्तेयसरीरणामं, अथिरणामं, असुभणामं, दुभगणामं, अणादेज्जणामं, अजसोकित्तीणामं, निम्माणणामं २५। गंगा-सिंधूओ णं महाणदीओ पणुवीसं गाउयाणि पुहत्तेणं दुहतो घडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठितेणं पवातेणं पवडंति। रत्ता-रत्तवतीओ णं महाणदीओ पणुवीसं गाउयाणि पुहत्तेणं जाव पवातेणं पवडंति। लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणुवीसं वत्थू पण्णत्ता। (२) इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं पणुवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं पणुवीसं सागरोवमाइं ठिती

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं पणुवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं पणुवीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं पणुवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं [उक्कोसेणं ?] पणुवीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा पणुवीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं पणुवीसाए वाससस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। ४ संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे पणुवीसाए [भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतं करेस्संति।] [२६.] ☆☆☆ (१) छव्वीसं दस-कप्प-ववहाराणं उद्देसणकाला पण्णत्ता, तंजहा दस दसाणं, छ कप्पस्स, दस ववहारस्स। अभवसिद्धियाणं जीवाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता, तंजहा मिच्छत्तमोहणिज्जं, सोलस कसाया, इत्थीवेदे पुरिसवेदे, नपुंसकवेदे, हासं, अरति, रति, भयं, सोगो, दुगुंछा। (२) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। मज्झिममज्झिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा छव्वीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं छव्वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे छव्वीसाए भवग्गहणेहिं [सिज्झिस्संति] जाव अंतं करेस्संति। [२७.] ☆☆☆(१) सत्तावीसं अणगारगुणा पण्णत्ता, तंजहा पाणातिवातवेरमणे, एवं पंच वि। सोतिंदियनिग्गहे जाव फासिंदियनिग्गहे। कोधविवेगे जाव लोभविवेगे। भावसच्चे, करणसच्चे, जोगसच्चे, खमा, विरागता, मणसमाहरणता, वतिसमाहरणता, कायसमाहरणता, णाणसंपण्णया, दंसणसंपण्णया, चरित्तसंपण्णया, वेयणअधियासणता, मारणंतियअहियासणया। जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसाए णक्खत्तेहिं संववहारे वट्टति। एगमेगे णं णक्खत्तमासे सत्तावीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसताइं बाहल्लेणं पण्णत्ता। वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगडीओ सतकम्मंसा पण्णत्ता। सावणसुद्धसत्तमीए णं सूरिए सत्तावीसंगुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ता णं दिवसखेत्तं निवड्ढेमाणे रयणिखेत्तं अभिणिवड्ढेमाणे चारं चरति। (३) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। मज्झिमउवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा मज्झिममज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा सत्तावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं सत्तावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे सत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतं करेस्संति। [२८]☆☆☆ (१) अट्ठावीसतिविहे आयारपकप्पे पण्णत्ते, तंजहा मासिया आरोवणा, सपंचरायमासिया आरोवणा, सदसरातमासिया आरोवणा, सपण्णरसरातमासिया आरोवणा, सवीसतिरायमासिया आरोवणा, सपंचवीसरातमासिया आरोवणा, एवं चेव दोमासिया आरोवणा, सपंचरातदोमासिया आरोवणा, एवं तेमासिया आरोवणा, चउमासिया आरोवणा, उग्घातिया आरोवणा, अणुग्घातिया आरोवणा, कसिणा आरोवणा, अकसिणा आरोवणा। इत्ताव ताव आयारपकप्पे, इत्तावताव आयरियव्वे। भवसिद्धियाणं जीवाणं अत्थेगतियाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीसं कम्मंसा संतकम्मं पण्णत्ता, तंजहा सम्मत्तवेयणिज्जं, मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं, सोलस कसाया, णव णोकसाया। आभिणिबोहियणाणे अट्ठावीसतिविहे पण्णत्ते, तंजहा सोतिंदियत्थोग्गहे, चक्खिंदियत्थोग्गहे, घाणिंदियत्थोग्गहे, जिब्भिंदियत्थोग्गहे, फासिंदियत्थोग्गहे, णोइंदियत्थोग्गहे,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोतिंदियवंजणोग्गहे, घाणिंदियवंजणोग्गहे, जिब्भिंदियवंजणोग्गहे, फासिंदियवंजणोग्गहे, सोतिंदियईहा जाव फासिंदियईहा, णोइंदियईहा, सोतिंदियावाते णोइंदियअवाते, सोइंदियधारणा जाव णोइंदियधारणा। ईसाणे णं कप्पे अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता। जीवे णं देवगतिं निबंधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीसं उत्तरपगडीओ णिबंधति, तंजहा देवगतिनामं, पंचेंदियजातिनामं, वेउव्वियसरीरनामं, तेययसरीरनामं, कम्मयसरीरनामं, समचउरंससंठाणणामं, वेउव्वियसरीरंगोवंगणामं, वण्णणामं, गंधणामं, रसणामं, फासणामं, देवाणुपुव्वीणामं, अगरुयलहुअनामं, उवघायनामं, पराघायनामं, ऊसासनामं, पसत्थविहायगइणामं, तसनामं, बायरणामं, पज्जत्तनामं, पत्तेयसरीरनामं, थिराथिराणं दोण्हं अण्णयरं एगनामं णिबंधति, सुंभासुभाणं दोण्हमण्णयरं एगनामं निबंधइ, सुभगणामं, सुस्सरणामं, आएज्ज-अणाएज्जनामाणं दोण्हमण्णयरं एगनामं निबंधइ, जसकित्तिनामं, निम्माणनामं। एवं चेव नेरइए वि, णाणतं अपसत्थविहायगइणामं, हुंडसंठाणनामं, अथिरणामं, दुब्भगणामं, असुभनामं, दुस्सरनामं, अणादेज्जणामं, अजसोकित्तीणामं, निम्माणनामं। (२) इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगतियाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा मज्झिमउवरिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा अट्ठावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं अट्ठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति। [२९] ☆☆☆ (१) . एगूणतीसतिविहे पावसुतपसंगे पण्णत्ते, तंजहा भोमे, उप्पाए, सुमिणे, अंतलिक्खे, अंगे, सरे, वंजणे, लक्खणे। भोमे तिविहे पण्णत्ते, तंजहा सुत्तं, वित्ती, वत्तिए। एवं एक्केक्कं तिविहं। विकहाणुयोगे, विज्जाणुजोगे, मंताणुजोगे, जोगाणुजोगे, अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे। आसाढे णं मासे एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते। भद्दवते णं मासे [एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते]। कत्तिए णं [मासे एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते] । पोसे णं मासे [एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते]। फग्गुणे णं [मासे एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते]।वइसाहे णं मासे [एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते]। चंददिणे णं एकूणतीसं मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तग्गेणं पण्णत्ते। जीवे णं पसत्थज्झवसाणजुत्ते भविए सम्मद्दिट्ठी तित्थकरनामसहिताओ णामस्स णियमा एगूणतीसं उत्तरपगडीओ निबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जति। (२) इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। उवरिममज्झिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा एगूणतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं एगूणतीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे एगूणतीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति [जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति]। [३०] ☆☆☆ (१) तीसं मोहणिज्जठाणा पण्णत्ता, तंजहा - जे यावि तसे पाणे वारिमज्झे विगाहिया। उदएणक्कम्म मारेति महामोहं पकुव्वति ॥१९॥ सीसावेढेण जे केई आवेढेति अभिक्खणं। तिव्वासुभसमायारे महामोहं पकुव्वति ॥२०॥ पाणिणा संपिहित्ताणं सोयमावरिय पाणिणं। अंतो नदंतं मारेइ महामोहं पकुव्वइ ॥२१॥ जायतेयं समारब्भ बहुं ओरुंभिया जणं। अंतोधूमेण मारेइ महामोहं पकुव्वइ ॥२२॥ सीसम्मि जे पहणइ उत्तमंगम्मि चेयसा। विभज्ज मत्थयं फाले महामोहं पकुव्वति ॥२३॥ पुणो पुणो पणिहीए हणित्ता उवहसे जणं। फलेणं अदुव दंडेणं महामोहं पकुव्वइ ॥२४॥ गूढायारी निगूहेज्जा मायं मायाए छायए। असच्चवाई णिण्हाई महामोहं पकुव्वइ ॥२५॥ धंसेइ जो अभूएणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकम्मं अत्तकम्मुणा। अदुवा तुममकासि त्ति महामोहं पकुव्वइ ॥२६॥ जाणमाणो परिसओ सच्चामोसाणि भासति। अक्खीणझंझे पुरिसे महामोहं पकुव्वति ॥२७॥ अणायगस्स नयवं दारे तस्सेव धंसिया। विउलं विक्खोभइत्ताणं किच्चा णं पडिबाहिरं ॥२८॥ उवगसंतं पि झंपित्ता पडिलोमाहिं वग्गूहिं। भोगभोगे वियारेति महामोहं पकुव्वति ॥२९॥ अकुमारभूए जे केइ कुमारभूए त्ति हं वए। इत्थीहिं गिद्धे वसए महामोहं पकुव्वति ॥३०॥ अबंभयारी जे केइ बंभयारि त्ति हं वए। गद्दभे व्व गवं मज्झे विस्सरं नदई नदं ॥३१ अप्पणो अहिए बाले मायामोसं बहुं भसे। इत्थीविसयगेहीए महामोहं पकुव्वइ ॥३२॥ जं निस्सिए उव्वहती जससा अहिगमेण वा। तस्स लुब्भइ वित्तम्मि महामोहं पकुव्वइ ॥३३॥ इस्सरेण अदुवा गामेणं अणिस्सरे इस्सरीकए। तस्स संपग्गहीयस्स सिरी अतुलमागया ॥३४॥ ईसादोसेण आइट्ठे कलुसाविलचेयसे। जे अंतरायं चेएइ महामोहं पकुव्वति ॥३५॥ सप्पी जहा अंडउडं भत्तारं जो विहिंसइ। सेणावइं पसत्थारं महामोहं पकुव्वइ ॥३६॥ जे नायगं व रट्ठस्स नेयारं निगमस्स वा। सेट्ठिं बहुरवं हंता महामोहं पकुव्वति ॥३७॥ बहुजणस्स णेयारं दीवं ताणं च पाणिणं। एयारिसं नरं हंता महामोहं पकुव्वति ॥३८॥ उवट्ठियं पडिविरयं संजयं सुतवस्सियं। वोकम्म धम्मओ भंसे महामोहं पकुव्वति ॥३९॥ तहेवाणंतणाणीणं जिणाणं वरदंसिणं। तेसिं अवण्णिमं बाले महामोहं पकुव्वति ॥४०॥ नेयाउयस्स मग्गस्स दुट्ठे अवयरई बहुं। तं तिप्पयंतो भावेति महामोहं पकुव्वति ॥४१॥ आयरियउवज्झाएहिं सुयं विणयं च गाहिए ते चेव खिंसती बाले महामोहं पकुव्वति ॥४२॥ आयरियउवज्झायाणं सम्मं नो पडितप्पइ। अप्पडिपूयए थद्धे महामोहं पकुव्वति ॥४३॥ अबहुस्सुए य जे केइ सुएण पविकत्थई। सज्झायवायं वयति महामोहं पकुव्वति ॥४४॥ अतवस्सिए य जे केइ तवेण पविकत्थइ। सव्वलोयपरे तेणे महामोहं पकुव्वति ॥४५॥ साहारणट्ठा जे केइ गिलाणम्मि उवट्ठिए। पभू ण कुणई किच्चं मज्झं पि से न कुव्वति ॥४६॥ सढे नियडिपण्णाणे कलुसाउलचेयसे॥ अप्पणो य अबोहीए महामोहं पकुव्वति ॥४७॥ जे कहाहिगरणाइं संपउंजे पुणो पुणो। सव्वतित्थाण भेयाय महामोहं पकुव्वति ॥४८॥ जे य आहम्मिए जोए संपउंजे पुणो पुणो। साहाहेउं सहीहेउं महामोहं पकुव्वति ॥४९॥ जे य माणुस्सए भोए अदुवा पारलोइए। तेऽतिप्पयंतो आसयति महामोहं पकुव्वति ॥५०॥ इड्ढी जुती जसो वण्णो देवाणं बलवीरियं। तेसिं अवण्णिमं बाले महामोहं पकुव्वति ॥५१॥ अपस्समाणो पस्सामि देवे जक्खे य गुज्झगे। अण्णाणी जिणपूयट्ठी महामोहं पकुव्वति ॥५२॥ थेरे णं मंडियपुत्ते तीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। एगमेगे णं अहोरत्ते तीसं मुहुत्ता मुहुत्तग्गेणं पण्णत्ते। एतेसि णं तीसाए मुहुत्ताणं तीसं नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा रोद्दे, सेते, मित्ते, वाऊ, सुपीए ५, अभियंदे, माहिंदे, बलवं, बंभे, सच्चे १०, आणंदे, विजए, वीससेणे, पायावच्चे, उवसमे १५, ईसाणे, तट्ठे, भावियप्पा, वेसमणे, वरुणे २०, सतरिसभे, गंधव्वे, अग्गिवेसायणे, आतवं, आवत्तं २५, तट्ठवं, भूमहं, रिसभे, सव्वट्ठसिद्धे, रक्खसे ३०। अरे णं अरहा तीसं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। सहस्सारस्स णं देविंदस्स देवरण्णो तीसं सामाणियसाहस्सीतो पण्णत्ताओ। पासे णं अरहा तीसं वासाइं अगारमज्झावसित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते। समणे भगवं महावीरे तीसं वासाइं अगार जाव पव्वतिते। रयणप्पभाए णं पुढवीए तीसं निरयावाससतसहस्सा पण्णत्ता। (२) इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं तीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। [सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं तीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ?] उवरिम [उवरिम] गेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा उवरिममज्झिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताते उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा जाव तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे [समुप्पज्जति]। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति। [३१] ☆☆☆(१) एक्कतीसं सिद्धाइगुणा पण्णत्ता, तंजहा खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे, सुयणाणावरणे, ओहिणाणावरणे, मणपज्जवणाणावरणे, खीणे केवलणाणावरणे। खीणे चक्खुदंसणावरणे, एवं अचक्खुदंसणावरणे, ओहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे, निद्दा, णिद्दाणिद्दा, पयला, पयलापयला, खीणे थिणगिद्धी। खीणे सातावेयणिज्जे, खीणे असायावेयणिज्जे। खीणे दंसणमोहे, खीणे चरित्तमोहणिज्जे। खीणे नेरइयाउए, तिरियाउए, माणुसाउए, देवाउए। खीणे उच्चागोए, खीणे निच्चागोए, एवं सुभणामे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

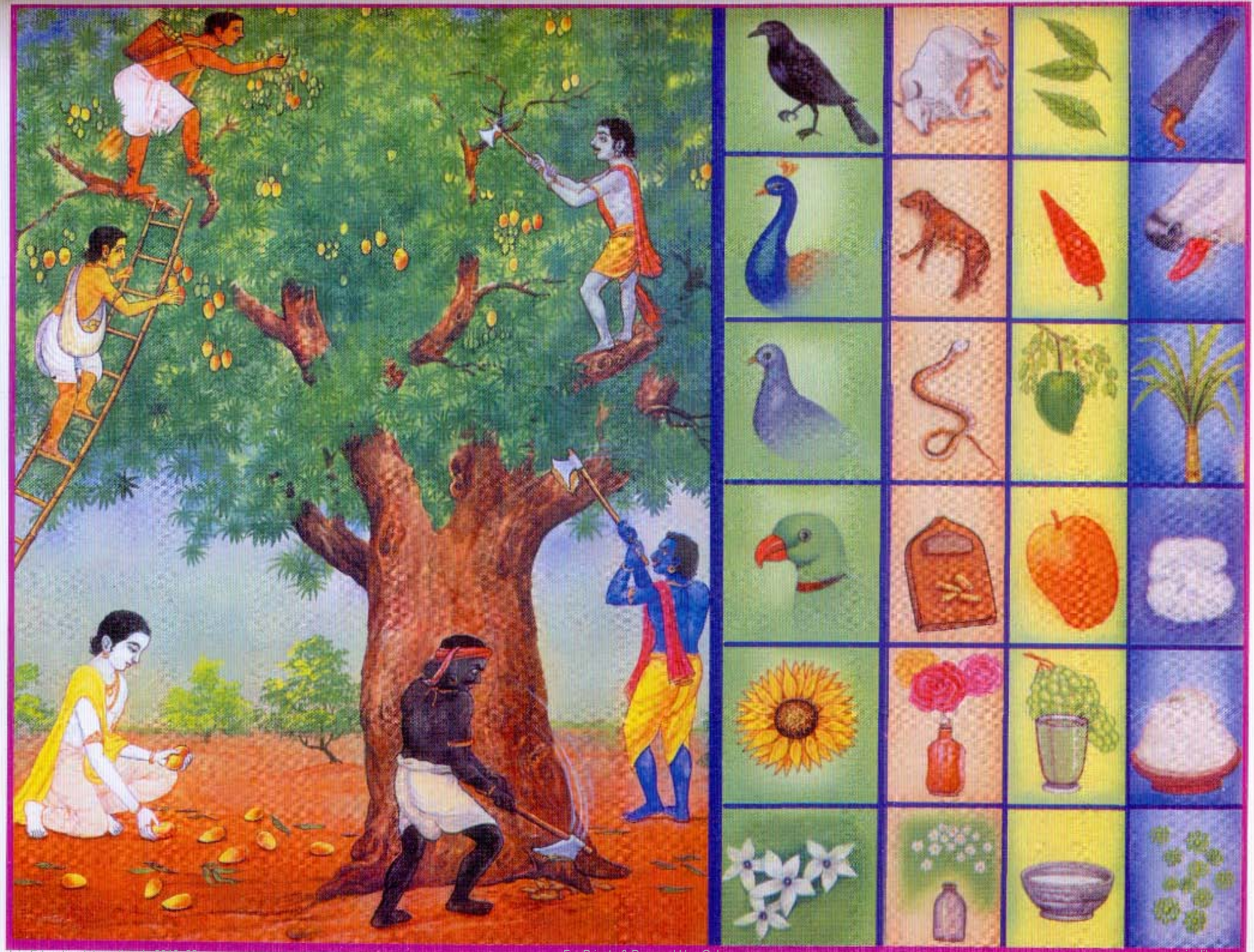

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

★ સમવાયાંગસૂત્ર :

ક્રમ	લેશ્યા	વર્ણ	ગંધ	રસ	સ્પર્શ
૧.	કૃષ્ણ	કોયલ	મરેલી ગાય	લીંબડો	કરવત
૨.	નીલ	મોર	કૂતરો	મરચું	ગાયની જીભ
૩.	કપોત	કબૂતર	સાપ	કાચી કેરી	શાક-વનસ્પતિ
૪.	તેજો	પોપટ	ચંદન	પાકી કેરી	મૂલ-વનસ્પતિ
૫.	પદ્મ	સૂર્યમુખી	ગુલાબજળ	દ્રાક્ષાસવ	માખણ
૬.	શુક્લ	કુન્દફૂલ	ચમેલીનું અત્તર	ખીર	ફૂલ

❊ समवायांग सूत्र :

क्रम	लेश्या	वर्ण	गंध	रस	स्पर्श
१.	कृष्ण	कोकिल	मृत गाय	नीम	करवत
२.	नील	मोर	कुत्ता	मिर्च	गाय-जीभ
३.	कापोत	कबूतर	साप	कच्चा आम	सब्जी-तरकारी
४.	तेजो	तोता	चंदन	पक्का आम	कन्दमूल
५.	पद्म	सूर्यमुखी	गुलाबजल	द्राक्षासव	मक्खन
६.	शुक्ल	कुन्दफूल	चमेली इत्र	पायस-खीर	फूल

* Samavāyāṅga-sūtra:

No.	leśyā	colour	odour	taste	touch
1.	black	cuckoo	dead cow	Neem-leaf	sow
2.	blue	peacock	dog	chilli	cow-tongue
3.	pigeonic	pigeon	serpent	raw mango	vegetables
4.	bright	parrot	sandal	ripe mango	root-vegetables
5.	lotus	sunflower	rose-water	wine	butter
6.	white	jasmine	cameli-scent	milk rice	flower

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असुभणामे। खीणे दाणंतराए, एवं लाभ-भोग-उवभोग-वीरियंतराए ३१। मंदरे णं पव्वते धरणितले एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसते किंचिदेसूणे परिक्खेवेणं पण्णत्ते। जया सूरिए सव्वबाहिरयं मंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरति तया णं इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहि य एक्कतीसेहिं जोयणसतेहिं सीसाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छति। अभिवड्ढिए णं मासे एक्कतीसं सातिरेगाणि रातिंदियाणि रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते। आइच्चे णं मासे एक्कतीसं रातिंदियाणि किंचिविसेसूणाणि रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते। (२) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाण एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिताणं देवाणं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा उवरिमउवरिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा एक्कतीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं एक्कतीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे एक्कतीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति। [३२] ☆☆☆ (१) बत्तीसं जोगसंगहा पण्णत्ता, तंजहा - आलोयणा १ निरवलावे २, आवतीसु दढधम्मया ३। अणिस्सितोवहाणे य ४, सिक्खा ५ निप्पडिकम्मया ६ ॥५३॥ अण्णातता ७ अलोभे य ८, तितिक्खा ९ अज्जवे १० सुई ११। सम्मद्दिट्ठी १२ समाही य १३, आयारे १४ विणओवए १५ ॥५४॥ धितीमती य १६ संवेगे १७, पणिही १८ सुविहि १९ संवरे २०। अत्तदोसोवसंहारे २१, सव्वकामविरत्तया २२ ॥५५॥ पच्चक्खाणे २४-२४ विओसग्गे २५, अप्पमादे २६ लवालवे २७। झाणसंवरजोगे य २८, उदए मारणंतिए २९ ॥५६॥ संगाणं च परिण्णा य ३०, पायच्छित्तकरणे ति य ३१। आराहणा य मरणंते ३२, बत्तीसं जोगसंगहा ॥५७॥ बत्तीसं देविंदा पण्णत्ता, तंजहा चमरे, बलि, धरणे, भूयाणंदे, जाव घोसे, महाघोसे, चंदे, सूरे, सक्के, ईसाणे, सणंकुमारे जाव पाणते, अच्चुते। कुंथुस्स णं अरहओ बत्तीसं जिणा बत्तीसं जिणसया होत्था। सोहम्मे कप्पे बत्तीसं विमाणावाससतसहस्सा पण्णत्ता। रेवतिणक्खत्ते बत्तीसतितारे पण्णत्ते। बत्तीसतिविहे णट्टे पण्णत्ते। (२) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं बत्तीस पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजितविमाणेसु देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं अत्थेगतियाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं बत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे बत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति। [३३] ☆☆☆ (१) तेत्तीसं आसायणातो पण्णत्तातो, तंजहा सेहे रातिणियस्स आसन्नं गंता भवति, [आसायणा सेहस्स] १, सेहे राइणियस्स पुरतो गंता भवति, [आसायणा सेहस्स २], सेहे राइणियस्स [स?] पक्खं गंता भवति, आसायणा सेहस्स ३, सेहे रातिणियस्स आसन्नं ठिच्चा भवति, आसायणा सेहस्स ४, जाव रातिणियस्स आलवमाणस्स तत्थगते चिय पडिसुणेति, [आसायणा सेहस्स] ३३, इति खलु एतातो तेत्तीसं आसायणातो। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए एक्कमेक्के बारे तेत्तीसं तेत्तीसं भोमा पण्णत्ता। महाविदेहे णं वासे तेत्तीसं जोयणसहस्साइं सातिरेगाइं विक्खंभेणं पण्णत्ताइं। जया णं सूरिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरति तया णं इहंगतस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं किंचिविसेसूणेहिं चक्खुफासं हव्वमागच्छति। (२) इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगतियाणं नेरइयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णता। अहेसत्तमाए पुढवीए काल-महाकाल-रोरुय-महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। अप्पतिट्ठाणे नरए नेरइयाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगतियाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगतियाणं देवाणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजितेसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। (३) जे देवा सव्वट्ठसिद्धं महाविमाणं देवत्ताते उववण्णा तेसि णं देवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। ते णं देवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जति। (४) संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे तेत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति [जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्संति]।[३४.] ☆☆☆ चोत्तीसं बुद्धातिसेसा पण्णत्ता, तंजहा अवट्ठिते केसु-मंसु-रोम-णहे १, निरामया निरुवलेवा गायलट्ठी २, गोखीरपंडुरे मंससोणिते ३, पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे ४, पच्छन्ने आहारनीहारे अदिस्से मंसचक्खुणा ५, आगासगयं चक्कं ६, आगासगं छत्तं ७, आगासियाओ सेयवरचामरातो ८, आगासफालियामयं सपायपीढं सीहासणं ९, आगासगतो कुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामो इंदज्झओ पुरतो गच्छति १०, जत्थ जत्थ वि य णं अरहंता भगवंतो चिट्ठंति वा निसीयंति वा तत्थ तत्थ वि य णं तक्खणादेव संछन्नपत्तपुप्फपल्लवसमाउलो सच्छत्तो सज्झओ सघंटो सपडातो असोगवरपायवो अभिसंजायति ११, ईसिं पिट्ठओ मउडट्ठाणम्मि तेयमंडलं अभिसंजायति, अंधकारे वि य णं दस दिसातो पभासेति १२, बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे १३, अहोसिरा कंटया भवंति १४, उडु अविवरीया सुहफासा भवंति १५, सीतलेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वओ समंता संपमज्जिज्जइ त्ति १६, जुत्तफुसिएण य मेहेण निहयरयरेणुयं कज्जति १७, जलथलयभासुरपभूतेणं विंटट्ठाइणा दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमेत्ते पुप्फोवयारे कज्जति १८, अमणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं अवकरिसो भवति १९, मणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं पाउब्भावो भवति २०, पच्चाहरतो वि य णं हियगमणीओ जोयणनीहारीसरो २१, भगवं च णं अद्धमागधाए भासाए धम्ममातिक्खति २२, सा वि य णं अद्धमागधा भासा भासिज्जमाणी तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं दुप्पय-चउप्पयमिय-पसु-पक्खि-सिरीसिवाणं अप्पप्पणो हितसिवसुहदा भासत्ताए परिणमति २३, पुव्वबद्धवेरा वि य णं देवासुर-नाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किंनर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगा अरहतो पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामेंति २४, अण्णतित्थियपावयणी वि य णं आगया वंदंति २५, आगया समाणा अरहओ पायमूले निप्पडिवयणाभवंति २६, जतो जतो वि य णं अरहंता भगवंतो विहरंति ततो ततो वि य णं जोयणपणुवीसाएणं ईती न भवति २७, मारी न भवति २८, सचक्कं न भवति २९, परचक्कं न भवति ३०, अतिवुट्ठी न भवति ३१, अणावुट्ठी न भवति ३२, दुब्भिक्खं न भवति ३३, पुव्वप्पण्णा वि य णं उप्पातिया वाही खिप्पामेव उवसमंति ३४। जंबुद्दीवे णं दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता, तंजहा बत्तीसं महाविदेहे भरहे, एरवए। जंबुद्दीवे णं दीवे चोत्तीसं दीहवेयड्ढा पण्णत्ता। जंबुद्दीवे णं दीवे उक्कोसपदे चोत्तीसं तित्थकरा समुप्पज्जंति। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो चोत्तीसं भवणावाससतसहस्सा पण्णत्ता। पढम-पंचम-छट्ठी-सत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससतसहस्सा पण्णत्ता। [३५]. ☆☆☆ पणतीसं सच्चवयणाइसेसा पण्णत्ता। कुंथू णं अरहा पणतीसं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। दत्ते णं वासुदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। नंदणे णं बलदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। सोहम्मे कप्पे सभाए सोहम्माए माणवए चेतियक्खंभे हेट्ठा उवरिं च अद्धतेरस अद्धतेरस जोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीसाए जोयणेसु वतिरामएसु गोलवट्टसमुग्गतेसु जिणसकहातो पण्णत्तातो। बितिय-चउत्थीसु दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता। [३६]. ☆☆☆ छत्तीसं उत्तरज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा विणयसुयं १, परीसहा २, चाउरंगिज्जं ३, असंखयं ४, अकाममरणिज्जं ५, पुरिसविज्जा ६, उरब्भिज्जं ७, काविलिज्जं ८, नमिपव्वज्जा ९, दुमपत्तयं १०, बहुसुतपुज्जा ११, हरितेसिज्जं १२, चित्तसंभूयं १३, उसुकारिज्जं १४, सभिक्खुगं १५, समाहिट्ठाणाइं १६, पावसमणिज्जं १७, संजइज्जं १८, मियचारिता १९, अणाहपव्वज्जा २०, समुद्दपालिज्जं २१, रहनेमिज्जं २२, गोतमकेसिज्जं २३, समितीओ २४, जण्णतिज्जं २५, सामायारी २६, खलुंकिज्जं २७, मोक्खमग्गगती २८, अप्पमातो २९, तवोमग्गो ३०, चरणविही ३१, पमायट्ठाणाइं ३२, कम्मपगडि ३३, लेसज्झयणं ३४, अणगारमग्गे ३५, जीवाजीवविभत्ती य ३६। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो सभा सुधम्मा छत्तीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणं साहस्सीतो होत्था। चेतासोएसु णं मासेसु सति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसिच्छायं निव्वत्तति। [३७] ☆☆☆. कुंथुस्स णं अरहओ सत्तत्तीसं गणा सत्तत्तीसं गणहरा होत्था। हेमवय-हेरण्णवतियातो णं जीवातो सत्तत्तीसं सत्तत्तीसं जोयणसहस्साइं छच्च चोवत्तरे जोयणसते सोलस य एकूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणातो आयामेणं पण्णत्तातो। सव्वासु णं विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजितासु रायधाणीसु पागारा सत्तत्तीसं सत्तत्तीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। खुड्डियाए णं विमाणप्पविभत्तीए पढमे वग्गे सत्तत्तीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता। कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसिच्छायं निव्वत्तइत्ता णं चारं चरति। [३८]☆☆☆. पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स अट्ठत्तीसं अज्जिआसाहस्सीतो उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था। हेमवतेरण्णवतियाणं जीवाणं धणूवट्ठा अट्ठत्तीसं अट्ठत्तीसं जोयणसहस्साइं सत्त य चत्ताले जोयणसते दस एगूणवीसतिभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणा परिक्खेवेणं पण्णत्ता। अत्थस्स णं पव्वयरण्णो बितिए कंडे अट्ठत्तीसं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ते। खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए बितिए वग्गे अट्ठत्तीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता। [३९]☆☆☆ नमिस्स णं अरहतो एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था। समयखेत्ते णं एकूणचत्तालीसं कुलपव्वया पण्णत्ता, तंजहा तीसं वासहरा, पंचमंदरा, चत्तारि उसुकारा। दोच्च-चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एकूणचत्तालीसं निरयावाससतसहस्सा पण्णत्ता। नाणावरणिज्जस्स मोहणिजस्स गोत्तस्स आउस्स वि एतासि णं चउण्हं कम्मपगडीणं एकूणचत्तालीसं उत्तरपगडीतो पण्णत्ताओ। [४०]☆☆☆ अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीतो होत्था। मंदरचूलिया णं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। संती अरहा चत्तालीसं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। भूयाणंदस्स णं णागिंदस्स ? नागरण्णो चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता। खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए ततिए वग्गे चत्तालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता। फग्गुणपुण्णिमासिणीए णं सूरिए चत्तालीसंगुलियं पोरिसिच्छायं निव्वट्टइत्ता णं चारं चरति। एवं कत्तियाए वि पुण्णिमाए। महासुक्के कप्पे चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता। [४१]☆☆☆ नमिस्स णं अरहतो एक्कचत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था। चउसु पुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, तंजहा रयणप्पभाए पंकप्पभाए तमाए तमतमाए। महल्लियाए णं विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे एक्कचत्तालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता। [४२]☆☆☆ समणे भगवं महावीरे बायलीसं वासाइं साहियाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे जाव प्पहीणे। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पुरत्थिमिलाओ चरिमंताओ गोथुभस्स णं आवासपव्वतस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं बातालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाते अंतरे पण्णत्ते। एवं चउद्दिसिं पि दओभासे संखे दयसीमे य। कालोए णं समुद्दे बायालीसं चंदा जोतिंसु वा जोइंति वा जोतिस्संति वा। बायालीसं सूरिया पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिस्संति वा। संमुच्छिमभुयपरिसप्पाणं उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता। नामे णं कम्मे बायालीसविहे पण्णत्ते, तंजहा गतिणामे जातिणामे सरीरणामे सरीरंगोवंगणामे सरीरबंधणणामे सरीरसंघायणणामे संघयणणामे संठाणणामे वण्णणामे गंधणामे रसनामे फासणामे अगरूलहुयणामे उवघायणामे पराघातणामे आणुपुव्वीणामे उस्सासणामे आतवणामे उज्जोयणामे विहगगतिणामे तसणामे थावरणामे सुहुमणामे बादरणामे पज्जत्तणामे अपज्जत्तणामे साधारणसरीरणामे पत्तेयसरीरणामे थिरणामे अथिरणामे सुभणामे असुभणामे सुभगणामे दुब्भगणामे सुसरणामे दुस्सरणामे आदेज्जणामे अणादेज्जणामे जसोकित्तिणामे अजसोकित्तिणामे निम्माणणामे तित्थकरणामे। लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीओ अब्भिंतरियं वेलं धारेंति। महालियाए णं विमाणपविभतीए बितिए वग्गे बायालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता। एगमेगाए णं ओसप्पिणीए पंचम-छट्ठीतो समातो बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्तातो। एगमेगाए णं उस्सप्पिणीए पढम-बितियातो समातो बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्तातो। [४३]☆☆☆ तेतालीसं कम्मविवागज्झयणा पण्णत्ता। पढम-चउत्थ-पंचमासु तीसु पुढवीसु तेतालीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स णं आवासपव्वतस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं चउद्दिसिं पि दओभासे संखे दयसीमे। महालियाए णं विमाणपविभत्तीए ततिए वग्गे तेतालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता। [४४] ☆☆☆चोत्तालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियलोगचुताभासिया पण्णत्ता। विमलस्स णं अरहतो चोतालीसं पुरिसजुगाइं अणुपट्ठिसिद्धाइं जाव प्पहीणाइं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

। धरणस्स णं नागिंदस्स नागरण्णो चोत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता। महालियाए णं विमाणपविभत्तीए चउत्थे वग्गे चोत्तालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता। [४५] ☆☆☆समयखेत्ते णं पणतालीसं जोयणसतसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। सीमंतए णं नरए पणतालीसं जोयणसतसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। एवं उडुविमाणे पण्णत्ते। ईसिपब्भारा णं पुढवी पण्णत्ता एवं चेव। धम्मे णं अरहा पणतालीसं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। मंदरस्स णं पव्वतस्स चउद्दिसिं पि पणतालीसं पणतालीसं जोयणसहस्साइं अबाधाते अंतरे पण्णत्ते। सव्वे वि णं दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणतालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा -"तिन्नेव उत्तराइं, पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य। एते छन्नक्खत्ता, पणतालमुहुत्तसंजोगा" ॥५८॥ महालियाए णं विमाणपविभत्तीए पंचमे वग्गे पणतालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता। [४६] ☆☆☆ दिट्ठिवायस्स णं छायालीसं माउयापया पण्णत्ता। बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा पण्णत्ता। पभंजणस्स णं वातकुमारिंदस्स छायालीसं भवणावाससतसहस्सा पण्णत्ता। [४७] ☆☆☆जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरति तया णं इहगतस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसतेहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छति। थेरे णं अग्गिभूती सत्तचत्तालीसं वासाइं अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगारातो अणगारियं पव्वइते। [४८]☆☆☆ एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अडयालीसं पट्टणसहस्सा पण्णत्ता। धम्मस्स णं अरहतो अडयालीसं गणा अडयालीसं गणहरा होत्था। सूरमंडले णं अडयालीसं एकसट्ठिभागे जोयणस्स विक्खंभेणं पण्णत्ते। [४९] ☆☆☆सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपडिमा एकूणपण्णाए रातिंदिएहिं छण्णउएण भिक्खासतेणं अहासुत्तं आराहिया भवइ। देवकुरु-उत्तरकुरासु णं मणुया एकूणपण्णाए रातिंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति। तेइंदियाणं उक्कोसेणं एकूणपण्णं रातिंदिया ठिती पण्णत्ता। [५०]☆☆☆ मुणिसुव्वयस्स णं अरहतो पंचासं अज्जियासाहस्सीतो होत्था। अणंती णं अरहा पण्णासं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। पुरिसोत्तमे णं वासुदेवे पण्णासं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। सव्वे वि णं दीहवेयड्ढा मूले पण्णासं २ जोयणाणि विक्खंभेणं पण्णत्ता। लंतए कप्पे पण्णासं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता। सव्वातो णं तिमिसगुहा-खंडगप्पवातगुहातो पण्णासं २ जोयणाइं आयामेणं पण्णत्तातो। सव्वे वि णं कंचणगपव्वया सिहरतले पण्णासं २ जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। [५१]☆☆☆ नवण्हं बंभचेराणं एकावण्णं उद्देसणकाला पण्णत्ता। चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररन्नो सभा सुधम्मा एकावण्णखंभसतसन्निविट्ठा पण्णत्ता। एवं चेव बलिस्स वि। सुप्पभे णं बलदेवे एकावण्णं वाससतसहस्साइं परमाउ पालइता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे। दंसणावरण-नामाणं दोण्हं कम्माणं एकावण्णं उत्तरपगडीतो पण्णत्तातो। [५२]☆☆☆ मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स बावण्णं नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे विवाए १०, माणे मदे दप्पे थंभे अत्तुक्कोसे गव्वे परपरिवाए उक्कोसे अवकोसे उण्णते उण्णामे २१, माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुते दंभे कूडे झिम्मे किब्बिसिए आवरणया गूहणया वंचणया पलिकुंचणया सातिजोगे ३८, लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेही तण्हा भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवितासा मरणासा नंदी रागे ५२। गोथुभस्स णं आवासपव्वतस्स पुरत्थिमिल्लातो चरिमंतातो वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चत्थिमिले चरिमंते एस णं बावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाते अंतरे पण्णत्ते। दओभासस्स णं [आवासपव्वतस्स दाहिणिल्लातो चरिमंतातो] केउगस्स [महापायालस्स उत्तरिल्ले चरिमंते एस णं बावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाते अतंरे पण्णत्ते]। संखस्स [णं आवासपव्वतस्स पच्चत्थिमिल्लातो चरिमंतातो] जुयकस्स [महापायालस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं बावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाते अतंरे पण्णत्ते]। दगसीमस्स णं आवासपव्वतस्स उत्तरिल्लातो चरिमंतातो ईसरस्स महापायालस्स दाहिणिल्ले चरिमंते एस णं बावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाते अंतरे पण्णत्ते। नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरातियस्स एतेसि णं तिण्हं कम्मपगडीणं बावण्णं उत्तरपगडीतो पण्णत्तातो। सोहम्म-सणंकुमार-माहिंदेसु तिसु कप्पेसु बावण्णं विमाणवाससतसहस्सा पण्णत्ता। [५३] ☆☆☆ देवकुरु-उत्तरकुरियातो णं जीवातो तेवण्णं २, जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं पण्णत्तातो। महाहिमवंत-रुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवातो तेवण्णं २, जोयणसहस्साइं नव य एक्कतीसे जोयणसते छच्च एकूणवीसतिभाए जोयणस्स आयामेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्तातो । समणस्स णं भगवतो महावीरस्स तेवण्णं अणगारा संवच्छरपरियाया पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताते उववन्ना । संमुच्छिमउरगपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवण्णं वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता । [५४] ☆☆☆ भरहेरवएसु णं वासेसु एगमेगाए उस्सप्पिणीए एगमेगाए ओसप्पिणीए चउप्पण्णं २ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा, तंजहा चउवीसं तित्थकरा, बारस चक्कवट्टी, णव बलदेवा, णव वासुदेवा । अरहा णं अरिट्ठनेमी चउप्पण्णं रातिंदियाइं छउमत्थपरियागं पाउणित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी । समणे भगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसेज्जाते चउप्पण्णं वागरणाइं वागरित्था । अणंतइस्स णं अरहतो चउप्पण्णं गणा चउप्पण्णं गणहरा होत्था । [५५] ☆☆☆ मल्ली णं अरहा पणपन्नं वाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे । मंदरस्स णं पव्वतस्स पच्चत्थिमिल्लातो चरिमंतातो विजयबारस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं पणपण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते । एवं चउद्दिसिं पि वेजयंतं जयंत अपराजियं ति । समणे भगवं महावीरे अंतिमरातियंसि पणपण्णं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवागाइं पणपण्णं अज्झयणाणि पावफलविवागाणि वागरेत्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे । पढम-बितियासु दोसु पुढवीसु पणपण्णं निरयावाससतसहस्सा पण्णत्ता । दंसणावरणिज्ज-णामाऽऽउयाणं तिण्हं कम्मपगडीणं पणपण्णं उत्तरपगडीतो पण्णत्तातो । [५६] ☆☆☆ जंबुद्दीवे णं दीवे छप्पण्णं नक्खत्ता चंदेण सद्धिं जोगं जोएंसु वा ३ । विमलस्स णं अरहतो छप्पण्णं गणा छप्पण्णं गणहरा होत्था । [५७] ☆☆☆ तिण्हं गणिपिडगाणं आयारचूलियवज्जाणं सत्तावण्णं अज्झीणा पण्णत्ता, तंजहा आयारे सूतगडे ठाणे । गोथुभस्स णं आवासपव्वतस्स पुरत्थिमिल्लातो चरिमंतातो वलयामुहस्स महापातालस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं सत्तावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते । एवं दओभासस्स केउकस्स य, संखस्स जुयकस्स य, दयसीमस्स ईसरस्स य । मल्लिस्स णं अरहतो सत्तावण्णं मणपज्जवनाणिसता होत्था । महाहिमवंत-रुप्पीणं वासधरपव्वयाणं जीवाणं धणुपट्ठा सत्तावण्णं २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य तेणउते जोयणसते दस य एकूणवीसतिभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ता । [५८] ☆☆☆ पढम-दोच्च-पंचमासु तीसु पुढवीसु अट्ठावण्णं निरयावाससतसहस्सा पण्णत्ता । नाणावरणिज्जस्स वेयणिय [स्स] आउय [स्स] नाम [स्स] अंतराइयस्स य एतेसि णं पंचण्हं कम्मपगडीणं अट्ठावण्णं उत्तरपगडीतो पण्णत्तातो । गोथुभस्स णं आवासपव्वतस्स पच्चत्थिमिल्लातो चरिमंतातो वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एसं णं अट्ठावण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते । एवं चउद्दिसिं पि नेतव्वं । [५९] ☆☆☆ चंदस्स णं संवच्छरस्स एगमेगे उदू एगूणसट्ठिं रातिंदियाणि रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते । संभवे णं अरहा एकूणसट्ठिं पुव्वसतसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे जाव पव्वतिते । मल्लिस्स णं अरहतो एगूणसट्ठिं ओहिण्णाणिसता होत्था । [६०] ☆☆☆ एगमेगे णं मंडले सूरिए सट्ठीए सट्ठीए मुहुत्तेहिं संघाएइ । लवणस्स णं समुद्दस्स सट्ठिं नागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारेंति । विमले णं अरहा सट्ठिं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था । बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स सट्ठिं सामाणियसाहस्सीतो पण्णत्तातो । बंभस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सट्ठिं सामाणियसाहस्सीतो पण्णत्तातो । सोहम्मीसाणेसु दोसु कप्पेसु सट्ठिं विमाणावाससतसहस्सा पण्णत्ता । [६१] ☆☆☆ पंचसंवच्छरियस्स णं जुगस्स रिदुमासेणं मिज्जमाणस्स एगसट्ठिं उदुमासा पण्णत्ता । मंदरस्स णं पव्वतस्स पढमे कंडे एगसट्ठिं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ते । चंदमंडले णं एगसट्ठिविभागभतिए समंसे पण्णत्ते । एवं सूरस्स वि । [६२] ☆☆☆ पंचसंवच्छरिए णं जुगे बावट्ठिं पुण्णिमातो बावट्ठिं अमावासातो [पण्णत्तातो] । वासुपुज्जस्स णं अरहतो बावट्ठिं गणा बावट्ठिं गणहरा होत्था । सुक्कपक्खस्स णं चंदे बावट्ठिं बावट्ठिं भागे दिवसे दिवसे परिवड्ढति, ते चेव बहुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायति । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमे पत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए बावट्ठिं बावट्ठिं विमाणा पण्णत्ता । सव्वे वेमाणियाणं बावट्ठिं विमाणपत्थडा पत्थडग्गेणं पण्णत्ता । [६३] ☆☆☆ उसभे णं अरहा कोसलिए तेवट्ठिं पुव्वसतसहस्साइं महारायवासमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगारातो अणगारियं पव्वइते । हरिवास-रम्मयवासेसु मणूसा तेवट्ठीए रातिंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति । निसढे णं पव्वते तेवट्ठिं सूरोदया पण्णत्ता । एवं नीलवंते वि । [६४] ☆☆☆ अट्ठट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए रातिंदिएहिं दोहि य अट्ठासीतेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं जाव भवति । चउसट्ठिं असुरकुमारावाससतसहस्सा पण्णत्ता । चमरस्स णं रण्णो चउसट्ठिं सामाणियसाहस्सीतो पण्णत्तातो । सव्वे वि णं दधिमुहपव्वया पल्लासंठाणसंठिता सव्वत्थ समा विक्खंभुस्सेहेणं चउसट्ठिं चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं

पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु बंभलोए य तीसु कप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावाससतसहस्सा पण्णत्ता। सव्वस्स वि य णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउसट्ठोलट्ठीए महग्घे मुत्तामणिमए हारे पण्णत्ते। [६५] ☆☆☆ जंबुद्दीवे णं दीवे पणसट्ठिं सूरमंडला पण्णत्ता। थेरेणं मोरियपुत्ते पणसट्ठिं वासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगारातो अणगारियं पव्वतिते। सोहम्मवडेंसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसट्ठिं पणसट्ठिं भोमा पण्णत्ता। [६६] ☆☆☆ दाहिणड्ढमणुस्सखेत्ता णं छावट्ठिं चंदा पभासिंसु वा ३, छावट्ठिं सूरिया तवइंसु वा ३। उत्तरड्ढमणुस्सखेत्ता णं छावट्ठिं चंदा पभासिंसु वा ३। छावट्ठिं सूरिया तवइंसु वा ३। सेज्जंसस्स णं अरहतो छावट्ठिं गणा छवट्ठिं गणहरा होत्था। आभिणिबोहियनाणस्स णं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। [६७] ☆☆☆ पंचसंवच्छरियस्स णं जुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा पण्णत्ता। हेमवतेरण्णवतियातो णं बाहातो सत्तसट्ठिं सत्तसट्ठिं जोयणसत्ताइं पणपण्णाइं तिण्णि य भागा जोयणस्स आयामेणं पण्णत्तातो। मंदरस्स णं पव्वतस्स पुरित्थिमिल्लातो चरिमंतातो गोयमदीवस्स णं दीवस्स पुरित्थिमिल्ले चरिमंते एस णं सत्तसट्ठिं जोयणसहस्साइं अबाधाते अंतरे पण्णत्ते। सव्वेसिं पि णं नक्खत्ताणं सीमाविक्खंभे णं सत्तसट्ठिंभाग्भइते समंसे पण्णत्ते। [६८]☆☆☆ धायइसंडे णं दीवे अट्ठसट्ठिं चक्कवट्टिविजया अट्ठसट्ठिं रायधाणीतो पण्णत्ताओ। उक्कोसपदे अट्ठसट्ठिं अरहंता समुप्पज्जिंसु वा ३। एवं चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा। पुक्खरवरदीवड्ढे णं अट्ठसट्ठिं विजया एवं चेव जाव वासुदेवा। विमलस्स णं अरहतो अट्ठसट्ठिं समणसाहस्सीतो उक्कोसिया समणसंपदा होत्था। [६९] ☆☆☆ समयखेत्ते णं मंदरवज्जा एकूणसत्तरिं वासा वासधरपव्वत्ता पण्णत्ता, तंजहा पणतीसं वासा, तीसं वासहरा, चत्तारि उसुयारा। मंदरस्स पव्वतस्स पच्चत्थिमिल्लातो चरिमंतातो गोतमद्दीवस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं एकूणसत्तरिं जोयणसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते। मोहणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्मपगडीणं एकूणसत्तरिं उत्तरपगडीतो पण्णत्तातो। [७०] ☆☆☆ समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसतिराते मासे वीतिक्कंते सत्तरीए रातिंदिएहिं सेसेहिं वासावासं पज्जोसविते। पासे णं अरहा पुरिसादाणीए सत्तरिं वासाइं बहुपडिपुण्णाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे। वासुपुज्जे णं अरहा सत्तरिं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तरिं सागरोवमकोडाकोडीओ अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मणिसेगे पण्णत्ते। माहिंदस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सत्तरिं सामाणियसाहस्सीतो पण्णत्तातो। [७१] ☆☆☆ चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्कसत्तरीए राइंदिएहिं वीतिक्कंतेहिं सव्वबाहिरातो मंडलातो सूरिए आउट्टिं करेति। वीरियपुव्वस्स णं पुव्वस्स एक्कसत्तरिं पाहुडा पण्णत्ता। अजिते णं अरहा एक्कसत्तरिं पुव्वसतसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते। एवं सगरे वि राया चाउरंतचक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्व जाव पव्वतिते। [७२]☆☆☆बावत्तरिं सुवण्णकुमारावाससतसहस्सा पण्णत्ता। लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीतो बाहिरियं वेलं धारेंति। समणे भगवं महावीरे बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालयित्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे। थेरे णं अयलभाया बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालयित्ता सिद्धे जाव प्पहीणे। अब्भंतरपुक्खरद्धे णं बावत्तरिं चंदा पभासिंसुवा पभासंति वा पभासिस्संति वा, बावत्तरिं सूरिया तवइंसु वा तवइंति वा तवइस्संति वा। एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स बावत्तरिं पुरवरसाहस्सीतो पण्णत्तातो। बावत्तरिं कलातो पण्णत्तातो, तंजहा लेहं १, गणितं २, रूवं ३, नट्टं ४, गीयं ५, वाइतं ६, सरगयं ७, पुक्खरगयं ८, समतालं ९, जूयं १०, जाणवयं ११, पोरेकव्वं १२, अट्ठावयं १३, दयमट्टियं १४, अण्णविधिं १५, पाणविधिं १६, लेणविहिं १७, सयणविहिं १८, अज्जं १९, पहेलियं २०, मागधियं २१, गाधं २२, सिलोगं २३, गंधजुत्तिं २४, मधुसित्थं २५, आभरणविहिं २६, तरुणीपडिकम्मं २७, इत्थीलक्खणं २८, पुरिसलक्खणं २९, हयलक्खणं ३०, गयलक्खणं ३१, गोणलक्खणं ३२, कुक्कुडलक्खणं ३३, मेंढयलक्खणं ३४, चक्कलक्खणं ३५, छत्तलक्खणं ३६, दंडलक्खणं ३७, असिलक्खणं ३८, मणिलक्खणं ३९. काकणिलक्खणं ४०. चम्मलक्खणं ४१, चंदचरियं ४२, सूरचरितं ४३, राहुचरितं ४४, गहचरितं ४५, सोभाकरं ४६, दोभाकरं ४७, विज्जागतं ४८, मंतगयं ४९, रहस्सगयं ५०, सभासं ५१, चारं ५२, पडिचारं ५३, वूहं ५४, पडिवूहं ५५, खंधावारमाणं ५६, नगरमाणं ५७, वत्थुमाणं ५८, खंधावारनिवेसं ५९, नगरनिवेसं ६०, वत्थुनिवेसं ६१, ईसत्थं ६२, छरुपगयं ६३, आससिक्खं ६४, हत्थिसिक्खं ६५, घणुव्वेयं ६६, हिरण्णवायं, सुवण्णवायं, मणिपागं, धाउपागं ६७, बाहुजुद्धं, दंडजुद्धं, मुट्ठिजुद्धं, अट्ठिजुद्धं, जुद्धं, निजुद्धं, जुद्धातिजुद्धं ६८, सुत्तखेड्डं, नालियाखेड्डं, वट्टखेड्डं, धम्मखेड्डं ६९,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पतच्छेज्जं, कडगच्छेज्जं, पतगच्छेज्जं ७०, सज्जीवं, निज्जीवं ७१, सउणरुतमिति ७२। संमुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता। [७३]☆☆☆ हरिवस्स-रम्मयवस्सियातो णं जीवातो तेवत्तरिं २ जोयणसहस्साइं नव य एक्कुत्तरे जोयणसते सत्तरस य एकूणवीसतिभागे जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं पण्णत्तातो। विजये णं बलदेवे तेवत्तरिं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे। [७४]☆☆☆ थेरे णं अग्गिभूती चोवत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहिणे। निसभातो णं वासहरपव्वतातो तिगिंच्छिद्दहातो णं दहातो सीतोता महानदी चोवत्तरिं जोयणसताइं सहियाइं उत्तराहुत्ती पवहित्ता वतिरामतियाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पण्णासजोयणविक्खंभाए वइरतले कुंडे महता घडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठाणसंठितेणं पवातेणं महया सद्देणं पवडति। एवं सीता वि दक्खिणाहुत्ती भाणियव्वा। चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरिं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता। [७५] ☆☆☆सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहतो पण्णत्तरिं जिणा पण्णत्तरिं जिणसता होत्था। सीतले णं अरहा पण्णत्तरिं पुव्वसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते। संती णं अरहा पण्णत्तरिं वाससहस्साइं अगारवासमज्झावसित्ता जाव पव्वतिते। [७६] ☆☆☆छावत्तरिं विज्जुकुमारावाससतसहस्सा पण्णत्ता। एवं दीव-दिसा उदहीणं विज्जुकुमारिंद-थणियमग्गीणं। छण्हं पि जुगलयाणं छावत्तरि मो सतसहस्सा ॥५९॥ [७७]☆☆☆भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्तत्तरिं पुव्वसतसहस्साइं कुमारवासमज्झावसित्ता महरायाभिसेयं पत्ते। अंगवंसातो णं सत्तत्तरिं रायाणो मुंडे जाव पव्वइया। गद्दतोय-तुसियाणं देवाणं सत्तत्तरिं देवसहस्सा परिवारो पण्णत्ता। एगमेगे णं मुहुत्ते सत्तत्तरिं लवे लवग्गेणं पण्णत्ते। [७८]☆☆☆ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणे महाराया अट्ठसत्तरीए सुवण्णकुमार-दीवकुमारावाससतसहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं भट्टित्तं सामित्तं महारायत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरति। थेरे णं अकंपिते अट्ठत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालयित्ता सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। उत्तरायणनियट्टे णं सूरिए पढमातो मंडलातो एगूणचत्तालीसइमे मंडले अट्ठत्तरिं एगसट्ठिभाए दिवसखेतस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं चारं चरति, एवं दक्खिणायणनियट्टे वि। [७९]☆☆☆ वलयामुहस्स णं पातालस्स हेट्ठिल्लातो चरिमंतातो इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते एस णं एकूणासीति जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं केउस्स वि जुययस्स वि ईसरस्स वि। छट्ठीए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभायाओ छट्ठस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते एस णं एकूणासीतिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। जंबुदीवस्स णं दीवस्स बारस्स य बारस्स य एस णं एगूणासीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। [८०]☆☆☆ सेज्जंसे णं अरहा असीतिं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। तिविट्ठू णं वासुदेवे असीतिं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। अयले णं बलदेवे असीतिं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। तिविट्ठू णं वासुदेवे असीतिं वाससतसहस्साइं महाराया होत्था। आउबहुले णं कंडे असीतिं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते। ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो असीतिं सामाणियसाहस्सीतो पण्णत्तातो। जंबुद्दीवे णं दीवे असीउत्तरं जोयणसतं ओगाहेत्ता सूरिए उत्तरकट्ठोवगते पढमं उदयं करेती। [८१]☆☆☆ नवनवमिया णं भिक्खुपडिमा एक्कासीतिए रातिंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं जाव आराहिता [यावि भवति]। कुंथुस्स णं अरहतो एक्कासीतिं मणपज्जवणाणिसया होत्था। वियाहपण्णत्तीए एक्कासीतिं महाजुम्मसया पण्णत्ता। [८२]☆☆☆ जंबुद्दीवे दीवे बासीतं मंडलसतं जं सूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ता णं चारं चरति, तंजहा निक्खममाणे य पविसमाणे य। समणे भगवं महावीरे बासीतीए रातिंदिएहिं वीतिक्कंतेहिं गब्भातो गब्भं साहरिते। महाहिमवंतस्स णं वासहरपव्वयस्स अवरिल्लाओ चरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिले चरिमंते एस णं बासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं रुप्पिस्स वि। [८३]☆☆☆ समणे भगवं महावीरे बासीतीए रातिंदिएहिं वीतिक्कंतेहिं तेयासीइमे रातिंदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भं साहरिते। सीतलस्स णं अरहतो तेसीति गणा तेसीति गणधरा होत्था। थेरे णं मंडियपुत्ते तेसीति वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे। उसभे णं अरहा कोसलिए तेसीतिं पुव्वसतसहस्साइं अगारवासमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं जाव पव्वइत्ते। भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी तेसीतिं पुव्वसतसहस्साइं अगारवासमज्झावसित्ता जिणे जाते केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी। [८४] ☆☆☆ चउरासीतिं निरयावाससतसहस्सा पण्णत्ता। उसभे णं अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसतसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव [प्पहीणे]। एवं भरहे बाहुबलि बंभि सुंदरि। सेज्जंसे णं अरहा

चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे। तिविट्ठू णं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं परमाउयं पालयित्ता अप्पतिट्ठाणे नरए नेरइयत्ताते उववन्ने। सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो चउरासीतिं सामाणियसाहस्सीतो पण्णत्तातो। सव्वे वि णं बाहिरया मंदरा चउरासीतिं चउरासीतिं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं अंजणगपव्वया चउरासीतिं चउरासीतिं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। हरिवस्स-रम्मयवासियाणं जीवाणं धणुपट्ठा चउरासीतिं चउरासीतिं जोयणसहस्साइं सोलस जोयणाइं चत्तारि य भागा जोयणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ता। पंकबहुलस्स णं कंडस्स उवरिल्लातो चरिमंतातो हेट्ठिले चरिमंते एस णं चउरासीतिं जोयणसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते। वियाहपण्णत्तीए णं भगवतीए चउरासीतिं पदसहस्सा पदग्गेणं पण्णत्ता। चउरासीतिं नागकुमारावाससतसहस्सा पण्णत्ता। चउरासीतिं पइण्णगसहस्सा पण्णत्ता। चउरासीतिं जोणिप्पमुहसतसहस्सा पण्णत्ता। पुव्वाइयाणं सीसपहेलियपज्जवसाणाणं सट्ठाणट्ठाणंतराणं चउरासीतिए गुणकारे पण्णत्ते। उसभस्स णं अरहतो कोसलियस्स चउरासीतिं गणा चउरासीतिं गणधरा होत्था। उसभस्स णं अरहतो कोसलियस्स उसभसेणपामोक्खातो चउरासीतिं समणसाहस्सीओ होत्था। चउरासीतिं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउतिं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खाया। [८५]☆☆☆ आयारस्स णं भगवतो सचूलियागस्स पंचासीतिं उद्देसणकाला पण्णत्ता। धायइसंडस्स णं मंदरा पंचासीतिं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता। रुयए णं मंडलियपव्वए पंचासीतिं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते। नंदणवणस्स णं हेट्ठिल्लातो चरिमंतातो सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिले चरिमंते एस णं पंचासीतिं जोयणसयाइं आबाहाते अंतरे पण्णत्ते। [८६]☆☆☆ सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीतिं गणा छलसीतिं गणहरा होत्था। सुपासस्स णं अरहतो छलसीतिं वाइसया होत्था। दोच्चाए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते एस णं छलसीतिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। [८७]☆☆☆ मंदरस्स णं पव्वतस्स पुरत्थिमिल्लातो चरिमंतातो गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं सत्तासीतिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। मंदरस्स [णं पव्वयस्स] दक्खिणिल्लातो चरिमंतातो दओभासस्स आवासपव्वतस्स उत्तरिल्ले चरिमंते एस णं सत्तासीतिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिलातो चरिमंतातो संखस्स आवासपव्वतस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते एवं चेव। एवं मंदरस्स [णं पव्वतस्स] उत्तरिल्लातो चरिमंतातो दगसीमस्स आवासपव्वतस्स दाहिणिल्ले चरिमंते एस णं सत्तासीतिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। छण्हं कम्मपगडीणं आतिमउवरिल्लवज्जाणं सत्तासीतिं उत्तरपगडीतो पण्णत्तातो। महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लातो चरिमंतातो सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिले चरिमंते एस णं सत्तासीतिं जोयणसयाइं अबाहाते अंतरे पण्णत्ते। एवं रुप्पीकूडस्स वि। [८८]☆☆☆ एगमेगस्स णं चंदिमसूरियस्स अट्ठासीतिं अट्ठासीतिं महग्गहा परिवारो पण्णत्तो। दिट्ठिवायस्स णं अट्ठासीतिं सुत्ताइं पण्णत्ताइं, तंजहा उज्जुसुयं, परिणतापरिणतं, एवं अट्ठासीतिं सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा णंदीए। मंदरस्स णं पव्वतस्स पुरत्थिमिल्लातो चरिमंतातो गोथुभस्स आवासपव्वतस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं अट्ठासीतिं जोयणसहस्साइं अबाधाते अंतरे पण्णत्ते। एवं चउसु वि दिसासु णातव्वं। बाहिराओ उत्तरातो णं कट्ठातो सूरिए पढमं छम्मासं अयमीणे चोयालीसइमे मंडलगते अट्ठासीति एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स-दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिणिवुड्ढेत्ता सूरिए चारं चरतीति। दक्खिणकट्ठातो णं सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमीणे चोयालीसतिमे मंडलगते अट्ठासीतिं एगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स णिवुड्ढेता दिवसखेत्तस्स अभिणिवुड्ढेता णं सूरिए चारं चरति। [८९]☆☆☆ उसभे णं अरहा कोसलिए इमीसे ओसप्पिणीए ततियाए समाए पच्छिमे भागे एकूणणउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगते वीतिक्कंते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थीए समाए पच्छिमे भागे एगूणनउतीए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवटीएगूणनउई वाससयाइं महाराया होत्था। संतिस्स णं अरहतो एगूणनउई अज्जासाहस्सीतो उक्कोसिया अज्जासंपदा होत्था। [९०] ☆☆☆सीयले णं अरहा णउइं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। अजियस्स णं अरहओ णउइं गणा नउइं गणहरा होत्था। एवं संतिस्स वि। सयंभुस्स णं वासुदेवस्स णउतिं वासाइं विजए होत्था। सव्वेसि णं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लातो

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिहरतलातो सोगंधियकंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते एस णं नउतिं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। [९१] ☆☆☆ एक्काणउइं परवेयावच्चकम्मपडिमातो पण्णत्तातो। कालोयणे णं समुद्दे एक्काणउतिं जोयणसयसहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते। कुंथुस्स णं अरहतो एक्काणउतिं आहोहियसता होत्था। आउय-गोयवज्जाणं छण्हं कम्मपगडीणं एक्काणउतिं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ। [९२] ☆☆☆ बाणउइं पडिमातो पण्णत्ताओ। थेरे णं इंदभूती बाणउतिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे [जाव प्पहीणे]। मंदरस्स णं पव्वतस्स बहुमज्झदेसभागातो गोथुभस्स आवासपव्वतस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं बाणउतिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं चउण्ह वि आवासपव्वयाणं। [९३] ☆☆☆ चंदप्पभस्स णं अरहतो तेणउतिं गणा तेणउतिं गणहरा होत्था। संतिस्स णं अरहतो तेणउइं चोद्दसपुव्विसया होत्था। तेणउतिमंडलगते णं सूरिए अतिवट्टमाणे वा नियट्टमाणे वा समं अहोरत्तं विसमं करेति। [९४] ☆☆☆ निसह-नेलवंतियाओ णं जीवातो चउणउइं चउणउइं जोयणसहस्साइं एक्कं छप्पण्णं जोयणसतं दोण्णि य एकूणविसतिभागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ता(तो) अजितस्सणं णं अरहतो चउणउतिं ओहिनाणिसया होत्था। [९५] ☆☆☆ सुपासस्स णं अरहतो पंचाणउतिं गणा पंचाणउतिं गणहरा होत्था। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चरिमंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउतिं पंचाणउतिं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता चतारि महापायाला पण्णत्ता, तंजहा वलयामुहे केउए जुयते ईसरे। लवणसमुद्दस्स उभओपासिं पि पंचाणउतिं पंचाणउतिं पदेसा उव्वेधुस्सेधपरिहाणीए पण्णत्ता। कुंथू णं अरहा पंचाणउतिं वाससहस्साइं परमाउयं पालयित्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे। थेरे णं मोरियपुत्ते पंचाणउतिं वासाइं सव्वाउयं पालयित्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे। [९६] ☆☆☆ एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छण्णउतिं छण्णउतिं गामकोडीओ होत्था। वायुकुमाराणं छण्णउइं भवणावाससतसहस्सा पण्णत्ता। वावहारिए णं दंडे छण्णउतिं अंगुलाणि अंगुलपमाणेणं, एवं धणू नालिया जुगे अक्खे मुसले वि। अब्भंतराओ आइमुहुत्ते छण्णउतिं अंगुलच्छाये पण्णत्ते। [९७] ☆☆☆ मंदरस्स णं पव्वतस्स पच्चत्थिमिल्लातो चरिमंतातो गोथुभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं सत्ताणउतिं जोयणसहस्साइं अबाधाते अंतरे पण्णत्ते। एवं चउद्दिसिं पि। अट्ठण्हं कम्मपगडीणं सत्ताणउतिं उत्तरपगडीतो पण्णत्तातो। हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउतिं वाससयाइं अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगारातो जाव पव्वतिते। [९८] ☆☆☆ नंदणवणस्स णं उवरिल्लातो चरिमंतातो पंडयवणस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते एस णं अट्ठाणउतिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। मंदरस्स णं पव्वतस्स पच्चत्थिमिल्लातो चरिमंतातो गोथुभस्स आवासपव्वतस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं अट्ठाणउतिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं चउदिसिं पि। दाहिणभरहद्धस्स णं धणुपट्ठे अट्ठाणउतिं जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पण्णत्ते। उत्तरातो णं कट्ठातो सूरिए पढमं छम्मासं अयमीणे एक्कूणपन्नासतिमे मंडलगते अट्ठाणउतिं एक्कसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेतस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरति। दक्खिणातो णं कट्ठातो सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमीणे एक्कूणपन्नासतिमे मंडलगते अट्ठाणउतिं एक्कसट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेतस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरति। रेवतिपढमजेट्ठपज्जवसाणाणं एक्कूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउतिं तारातो तारग्गेणं पण्णत्तातो। [९९] ☆☆☆ मंदरे णं पव्वते णवणउतिं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ते। नंदणवणस्स णं पुरत्थिमिल्लातो चरिमंतातो पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं णवणउतिं जोयणसत्ताइं अबाहाते अंतरे पण्णत्ते। एवं दक्खिणिल्लातो उत्तरे। पढमे सूरियमंडले णवणउतिं जोयणसहस्साइं सातिरेगाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। दोच्चे सूरियमंडले णवणउतिं जोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। ततिए सूरियमंडले नवनउतिं जोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए अंजणस्स कंडस्स हेट्ठिल्लातो चरिमंतातो वाणमंतरभोमेज्जविहाराणं उवरिमंते एस णं नवनउतिं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। [१००] ☆☆☆ दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा एगेणं राइंदियसतेणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं जाव आराहिया यावि भवति। सयभिसयानक्खत्ते सएक्कतारे पण्णत्ते। सुविधी पुप्फदंते णं अरहा एगं धणुसतं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। पासे णं अरहा पुरिसादाणीए एक्कं वाससयं सव्वाउयं पालयित्ता सिद्धे जाव प्पहीणे। एवं थेरे वि अज्जसुहम्मे। सव्वे वि णं दीहवेयड्ढपव्वया एगमेगं गाउयसतं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं चुल्लहिमवंत-सिहरिवासहरपव्वया एगमेगं जोयणसतं उड्ढंउच्चत्तेणं एगामेगं गाउयसतं उव्वेधेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढंउच्चत्तेणं,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगमेगं गाउयसतं उव्वेधेणं, एगमेगं जोयणसयं मूले विक्खंभेणं पण्णत्ता। [१०१]☆☆☆ चंदप्पभे णं अरहा दिवड्ढं धणुसतं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणावाससतं पण्णतं। एवं अच्चुए वि। [१०२]☆☆☆ सुपासे णं अरहा दो धणुसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। सव्वे वि णं महाहिमवंत-रुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं, दो दो गाउयसताइं उव्वेधेणं पण्णत्ता। जंबुद्दीवे णं दीवे दो कंचणपव्वतसया पण्णत्ता। [१०३]☆☆☆ पउमप्पभे णं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। [१०४]☆☆☆ सुमती णं अरहा तिण्णि धणुसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। अरिट्ठनेमी णं अरहा तिण्णि वाससयाइं कुमारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिते। वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिण्णि तिण्णि जोयणसताइं उड्ढंउच्चतेणं पण्णत्ता। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स तिन्नि सयाणि चोद्दसपुव्वीणं होत्था। पंचधणुसतियस्स णं अंतिमसारीरियस्स सिद्धिगतस्स सातिरेगाणि तिण्णि धणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा पण्णत्ता। [१०५]☆☆☆ पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स अद्धट्ठाइं सयाइं चोद्दसपुव्वीणं होत्था। अभिनंदणे णं अरहा अद्धट्ठाइं धणुसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। [१०६]☆☆☆ संभवे णं अरहा चतारि धणुसताइं उड्ढंउच्चतेणं होत्था। सव्वे वि णं णिसभ-नीलवंता वासहरपव्वया चतारि चतारि जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं, चत्तारि चत्तारि गाउयसताइं उव्वेधेणं पण्णत्ता। सव्वे वि य णं वक्खारपव्वया णिसभ-नीलवंतवासहरपव्वयं तेणं चत्तारि चत्तारि जोयणसत्ताइं उड्ढंउच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसताइं उव्वेधेणं पण्णत्ता। आणय-पाणएसु णं दोसु कप्पेसु चत्तारि विमाणसया पण्णत्ता। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स चत्तारि सता वादीणं सदेवमणुयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजिताणं उक्कोसिया वादिसंपया होत्था। [१०७]☆☆☆ अजिते णं अरहा अद्धपंचमाइं धणुसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। सगरे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसताइं उड्ढंउच्चतेणं होत्था। [१०८]☆☆☆ सव्वे वि णं वक्खारपव्वया सीया-सीओयाओ महानईओ मंदरं वा पव्वयं तेणं पंच जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं, पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं वासहरकूडा पंच पंच जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं, मूले पंच पंच जोयणसताइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। उसभे णं अरहा कोसलिए पंच धणुसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंच धणुसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। सोमणस-गंधमादण-विज्जुप्पभ-मालवंता णं वक्खारपव्वया णं मंदरपव्वयं तेणं पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं, पंच पंच गाउयसताइं उव्वेधेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं वक्खारपव्वयकूडा हरि-हरीसहकूडवज्जा पंच पंच जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं, मूले पंच पंच जोयणसताइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं णंदणकूडा बलकूडवज्जा पंच पंच जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं, मूले पंच पंच जोयणसताइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। [१०९]☆☆☆ सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छ जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। चुल्लहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरिमंतातो चुल्लहिमवंतस्सवासहरपव्वतस्स समे धरणितले एस णं छ जोयणसताइं अबाहाते अंतरे पण्णत्ते। एवं सिहरिकूडस्स वि। पासस्स णं अरहतो छ सता वादीणं सदेवमणुयासुरे लोए वाए अपराजियाणं उक्कोसा वादिसंपदा होत्था। अभिचंदे णं कुलगरे छ धणुसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। वासुपुज्जे णं अरहा छहिं पुरिससतेहिं मुंडे भविता णं अगारातो अणगारियं पव्वतिते। [११०]☆☆☆ बंभ-लंतएसु कप्पेसु विमाणा सत्त सत्त जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त जिणसता होत्था। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त वेउव्वियसया होत्था। अरिट्ठनेमी णं अरहा सत्त वाससताइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे। महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लातो चरिमंतातो महाहिमवंतस्स वासधरपव्वयस्स समे धरणितले एस णं सत्त जोयणसताइं अबाहाते अंतरे पण्णत्ते। एवं रूप्पिकूडस्स वि। [१११]☆☆☆ महासुक्क-सहस्सारेसु दोसु कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए पढमे कंडे अट्ठसु जोयणसतेसु वाणमंतरभोमेज्जविहारा पण्णत्ता। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववातियाणं देवाणं गतिकल्लाणाणं ठितिकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववातियसंपदा होत्था। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो अट्ठहिं जोयणसएहिं सूरिए चारं चरति। अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ सताइं वादीणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सदेवमणुयासुरम्मि लोगम्मि वाते अपराजियाणं उक्कोसिया वादिसंपदा होत्था। [११२]☆☆☆ आणय-पाणय-आरण-ऽच्चुतेसु कप्पेसु विमाणा णव जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं पण्णत्ता। निसढकूडस्स णं उवरिल्लातो सिहरतलातो णिसढस्स वासहरपव्वतस्स समे धरणितले एस णं नव जोयणसताइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं नीलवंतकूडस्स वि। विमलवाहणे णं कुलगरे णव धणुसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था। इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो णवहिं जोयणसतेहिं सव्वुपरिमे तारारूवे चारं चरति। निसढस्स णं वासधरपव्वयस्स उवरिल्लातो सिहरतलातो इमीसे रतणप्पभाए पुढवीए पढमस्स कंडस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं णव जोयणसताइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं नीलवंतस्स वि। [११३]☆☆☆ सव्वे वि णं गेवेज्जविमाणा दस दस जोयणसताइं उड्ढंउच्चतेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं जमगपव्वया दस दस जोयणसताइं उड्ढंउच्चतेणं पण्णत्ता, दस दस गाउयसताइं उव्वेधेणं, मूले दस दस जोयणसत्ताइं आयामविक्खंभेणं। एवं चित्त-विचित्तकूडा वि भाणियव्वा। सव्वे वि णं वट्टवेयड्ढपव्वया दस दस जोयणसताइं उड्ढंउच्चत्तेणं, दस दस गाउयसताइं उव्वेधेणं, मूले दस दस जोयणसताइं विक्खंभेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिया, दस दस जोयणसताइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं हरि-हरिस्सहकूडा वक्खारकूडवज्जा दस दस जोयणसयाइं उठ्ढंउच्चत्तेणं, मूले दस दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। एवं बलकूडा वि नंदणकूडवज्जा। अरहा वि अरिट्ठनेमी दस वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव प्पहीणे। पासस्स णं अरहतो दस सयाइं जिणाणं होत्था। पासस्स णं अरहतो दस अंतेवासिसयाइं कालगताइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं। पउमद्दह-पुंडरीयद्दहा दस दस जोयणसयाइं आयामेणं पण्णत्ता। [११४]☆☆☆ अणुत्तरोववातियाणं देवाणं विमाणा एक्कारस जोयणसताइं उड्ढंच्चत्तेणं पण्णत्ता। पासस्स णं अरहतो एक्कारस सताइं वेउव्वियाणं होत्था। [११५]☆☆☆ महापउम-महापुंडरीयद्दहा णं दो दो जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता। [११६]☆☆☆ इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए वतिरकंडस्स उवरिल्लाओ चरिमंताओ लोहितक्खस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते एस णं तिण्णि जोयणसहस्साइं अबाहाते अंतरे पण्णत्ते। [११७]☆☆☆ तिगिंच्छि-केसरिद्दहा णं दहा चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता। [११८]☆☆☆ धरणितले मंदरस्स णं पव्वतस्स बहुमज्झदेसभागाओ रुयगणाभीतो चउद्दिसिं पंच पंच जोयणसहस्साइं अबाहाए मंदरे पव्वते पण्णत्ते। [११९]☆☆☆ सहस्सारे णं कप्पे छ विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता। [१२०] ☆☆☆ इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लातो चरिमंतातो पुलगस्स कंडस्स हेट्ठिले चरिमंते एस णं सत्त जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। [१२१]☆☆☆ हरिवस्स-रम्मया णं वासा अट्ठ जोयणसहस्साइं सातिरेगाइं वित्थरेणं पण्णत्ता। [१२२]☆☆☆ दाहिणड्ढभरहस्स णं जीवा पाईणपडिणायया दुहतो समुद्दं पुट्ठा णव जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता। [१२३]☆☆☆ मंदरे णं पव्वते धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ते। [१२४]☆☆☆ जंबूदीवे णं दीवेएगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। [१२५]☆☆☆ लवणे णं समुद्दे दो जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते। [१२६]☆☆☆ पासस्स णं अरहतो तिण्णि सयसाहस्सीतो सत्तावीसं च सहस्साइं उक्कोसिया सावियासंपदा होत्था। [१२७]☆☆☆ धायइसंडे णं दीवे चत्तारि जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते। [१२८]☆☆☆ लवणस्स णं समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लातो चरिमंतातो पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं पंच जोयणसयसहस्साइं अबाधाते अंतरे पण्णत्ते। [१२९]☆☆☆ भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी छ पुव्वसतसहस्साइं रायमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगारातो अणगारियं पव्वतिते। [१३०]☆☆☆ जंबूदीवस्स णं दीवस्स पुरत्थिमिल्लातो वेइयंतातो धायइसंडचक्कवालस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते एस णं सत्त जोयणसतसहस्साइं अबाधाते अंतरे पण्णत्ते। [१३१]☆☆☆ माहिंदे णं कप्पे अट्ठविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता। [१३२]☆☆☆ अजियस्स णं अरहतो सातिरेगाइं नव ओहिणाणिसहस्साइं होत्था। [१३३]☆☆☆ पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससतसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए णरएसु नेरइयत्ताते उववन्ने। [१३४]☆☆☆ समणे भगवं महावीरे तित्थकरभवग्गहणातो छट्ठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं वासकोडिं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठे विमाणे देवत्ताते उववन्ने। [१३५]☆☆☆ उसभसिरिस्स भगवतो चरिमस्स य महावीरवद्धमाणस्स एगा सागरोवमकोडाकोडी अबाधाए अंतरे पण्णत्ते। [१३६] ☆☆☆ दुवालसंगे गणिपिडगे पण्णत्ते, तंजहा आयारे सूतगडे ठाणे समवाए वियाहपण्णत्ती णायाधम्मकहाओ उवासगदसातो अंतगडदसातो अणुत्तरोववातियदसातो पण्हावागरणाइं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवागसुते दिट्ठिवाए। से किं तं आयारे ? आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयारगोयर- विणयवेणइयट्ठाण -गमणचंकमणपमाण -जोगजुंजणभासासमितिगुत्ती-सेज्जोवहिभत्तपाण -उग्गमउप्पायणएसणा -विसोहिसुद्धासुद्धग्गहण -वयणियमतवोवधाण -सुप्पसत्थमाहिज्जति। से समासतो पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे। आयारस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जाअणुओगदारा, संखेज्जातो पडिवत्तीतो, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जातो निज्जुत्तीतो। से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो सुतक्खंधा, पणुवीसे अज्झयणा, पंचासीती उद्देसणकाला, पंचासीई समुद्देसणकाला, अट्ठारस पदसहस्साइं पदग्गेणं पण्णत्ते। संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा णिबद्धा णिकाइता जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आता, एवं णाता, एवं विण्णाता।एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति। से त्तं आयारे। [१३७]☆☆☆ से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं ससमया सूइज्जंति, परसमया सूइज्जंति, ससमया-परसमया सूइज्जंति,जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति, लोगे सूइज्जति, अलोगे सूइज्जति, लोगालोगे सूइज्जति। सूयगडे णं जीवा-ऽजीवा-पुण्ण-पावा-ऽऽसव-संवर-णिज्जर-बंध-मोक्खावसाणा पयत्था सूइज्जंति। समणाणं अचिरकालपव्वइयाणं कुसमयमोहमोहमतिमोहिताणं संदेहजायसहजबुद्धिपरिणामसंसइयाणं पावकरमइलमतिगुणविसोहणत्थं आसीतस्स किरियावादिसतस्सचउरासीतीए अकिरियावादीणं सत्तट्ठीए अण्णाणियवादीणं बत्तीसाए वेणइयवादीणं तिण्हं तेसट्ठाणं अण्णदिट्ठियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जति। णाणादिट्ठंतवयणणिस्सारं सुट्ठु दरिसयंता विविहवित्थाराणुगमपरमसब्भावगुणविसिट्ठा मोक्खपहोदारगा उदारा अण्णाणतमंधकारदुग्गेसु दीवभूता सोवाणा चेव सिद्धिसुगतिघरुत्तमस्स णिक्खोभनिप्पकंपा सुत्तत्था। सूयगडस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जातो पडिवत्तीतो, संखेज्जा वेढा, [संखेज्जा] सिलोगा, [संखेज्जाओ] निज्जुत्तीतो। से णं अंगट्ठताए दोच्चे अंगे, दो सुतक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पदसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ते। संखेज्जा अक्खरा, तं चेव जाव परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा णिबद्धा णिकाइता जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति। से [एवं आता,?] एवं णाते (णाता?) एवं विण्णाते(ता ?) जाव चरणकरणपरूवणया आघविज्जति [पण्णविज्जति परूविज्जति निदंसिज्जति उवदंसिज्जति ?] से त्तं सूयगडे।[१३८]☆☆☆ से किं तं ठाणे ? ठाणे णं ससमया ठाविज्जंति, परसमया ठाविज्जंति, ससमय-परसमया [ठाविज्जंति] , जीवा ठाविज्जंति, अजीवा [ठाविज्जंति] , जीवाजीवा [ठाविज्जंति], लोगो अलोगो लोगालोगो वा ठाविज्जति। ठाणे णं दव्व-गुण-खेत्त-काल-पज्जवपयत्थाणं। सेला सलिला य समुद्द सूर भवण विमाण आगरा णदीतो। णिधयो पुरिसज्जाया सरा य गोत्ता य जोतिसंचाला ॥६०॥ एक्काविधवत्तव्वयं दुविह जाव दसविहवत्तव्वयं जीवाण पोग्गलाण य लोगट्ठाइं च णं परूवणया आघविज्जति जाव ठाणस्स णं परित्ता वायणा जाव संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जातो संगहणीतो। से तं(णं) अंगट्ठताए ततिए अंगे, एगे सुतक्खंधे, दस अज्झयणा, एक्कवीसं उद्देसणकाला, एक्कवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरिं पयसहस्साइं पदग्गेणं पण्णत्ते। संखेज्जा अक्खरा जाव चरणकरणपरूवणया आघविज्जति। से त्तं ठाणे। [१३९]☆☆☆ से किं तं समवाए ? समवाए णं ससमया सूइज्जंति, परसमया सूइज्जंति, ससमय-परसमया सूइज्जंति, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति, लोगे सूइज्जति, अलोगे सूइज्जति, लोगालोगे सूइज्जति। समवाए णं एकादियाणं एगत्थाणं एगुत्तरिय परिवड्ढी य दुवालसंगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समणुगाइज्जति। ठाणगसयस्स बारसविहवित्थरस्स सुतणाणस्स जगजीवहितस्स भगवतो समासेणं समायारे आहिज्जति। तत्थ य णाणाविहप्पगारा जीवाजीवा य वण्णिता वित्थरेणं, अवरे वि य बहुविहा विसेसा नरग-तिरिय-मणुय-सुरगणाणं आहारुस्सास-लेस-आवास-संख-आययप्पमाण-उववाय-चवण-ओगाहणोहि-वेयण-विहाण-उवओग-जोग-इंदिय-कसाय, विविहा य जीवजोणी, विक्खंभुस्सेहपरिरयप्पमाणं विधिविसेसा य मंदरादीणं महीधराणं, कुलगरतित्थगरगणधराणं समत्तभरहाहिवाण चक्कीण चेव चक्कहर-हलहराण य, वासाण य निग्गमा य, समाए एते अण्णे य एवमादि एत्थ वित्थरेणं अत्था समाहिज्जंति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

। समवायस्स णं परित्ता वायणा जाव से णं अंगट्ठताए चउत्थे अंगे, एगे अज्झयणे, एगे सुयक्खंधे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले पदसतसहस्से पदग्गेणं पण्णत्ते। संखेज्जाणि अक्खराणि जाव से त्तं समवाए। [१४०]☆☆☆ से किं तं वियाहे ? वियाहे णं ससमया विआहिज्जंति, परसमया विआहिज्जंति, ससमय-परसमया विआहिज्जंति, जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जंति, जीवाजीवा विआहिज्जंति, लोए विआहिज्जति, अलोए विआहिज्जति, लोगालोगे विआहिज्जति । वियाहे णं नाणाविहसुरनरिंदरायरिसिविविहसंसइयपुच्छियाणं जिणेण वित्थरेण भासियाणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जवपदेसपरिणामजहत्थिभावअणुगमनिक्खेवणयप्पमाण-सुनिउणोवक्कमविविहप्पकारपागडपयंसियाणं लोगालोगप्पगासियाणं संसारसमुद्दरुंदउत्तरणसमत्थाणं सुरवतिसंपूजियाणं भवियजणपयहिययाभिनंदियाणं तमरयविद्धंसणाण सुदिट्ठदीवभूयईहामतिबुद्धिवद्धणाणं छत्तीससहस्समणूणयाणं वागरणाण दंसणाओ सुयत्थबहुविहप्पगारा सीसहितत्थाय गुणहत्था। वियाहस्स णं परित्ता वायणा जाव अंगट्ठताए पंचमे अंगे, एगे सुतक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसते, दस उद्देसगसहस्साइं, दस समुद्देसगसहस्साइं, छत्तीसं वागरणसहस्साइं, चउरासीति पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ते। संखेज्जाइं अक्खराइं, अणंता गमा जाव सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति जाव एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जति। से त्तं वियाहे। [१४१]☆☆☆ से किं तं णायाधम्मकहाओ ? णायाधम्मकहासु णं णायाणं णगराइं, उज्जाणाइं, चेतियाइं, वणसंडा, रायाणो, अम्मापितरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मकहातो, इहलोइया पारलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जातो, सुतपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, परियागा, संलेहणातो, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चायाती, पुण बोहिलाभो, अंतकिरियातो य आघविज्जंति जाव नायाधम्मकहासु णं पव्वइयाणं विणयकरणजिणसामिसासणवरे संजमपतिण्णापालणधिइमतिववसायदुब्बलाणं तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरभरभग्गाणि-सहाणिसट्ठाणं घोरपरीसहपराजियासहप(पा ?)रद्धरुद्धसिद्धालयमग्गनिग्गयाणं विसयसुहतुच्छआसावसदोसमुच्छियाणं विराहियचरित्तणाणदंसणजतिगुणवि-विहप्पगारणिस्सारसुन्नयाणं संसारअपारदुक्खदुग्गतिभवविविहपरंपरापवंचा, धीराण य जियपरीसहकसायसेण्णधितिधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं आराहियणाणदंसणचरित्तजोगणिस्सल्लसुद्धसिद्धालयमग्गमभिमुहाणं सुरभवणविमाणसोक्खाइं अणोवमाइं भोत्तूण चिरं च भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि ततो य कालक्कमचुयाणं जह य पुणो लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया, चलियाण य सदेवमाणुसधीरकरणकारणाणि बोधणअणुसासणाणि गुणदोसदरिसणाणि, दिट्ठंते पच्चये य सोऊण लोगमुणिणो जह य द्वियसासणम्मि जरमरणणासणकरे, आराहितसंजमा य सुरलोगपडिनियत्ता उवेंति जह सासतं सिवं सव्वदुक्खमोक्खं, एते अण्णे य एवमादित्थ वित्थरेण य। णायाधम्मकहासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जातो संगहणीतो। से णं अंगट्ठताए छट्ठे अंगे, दो सुतक्खंधा, एकूणवीसं अज्झयणा, ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तंजहा चरिता य कडता य। दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयसताइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयसताइं, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयसताइं, एवामेव सपुव्वावरेणं अद्धट्ठातो अक्खाइयकोडीओ भवंती मक्खायाओ। एगूणतीसं उद्देसणकाला, एगूणतीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसतसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ते। संखेज्जा अक्खरा जाव चरणकरणपरूवणया आघविज्जति। से तं णायाधम्मकहातो। [१४२]☆☆☆ से किं तं उवासगदसातो ? उवासगदसासु णं उवासयाणं णगराइं, उज्जाणाइं, चेतियाइं, वणसंडा, रायाणो, अम्मापितरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइया पारलोइया इड्ढिविसेसा, उवासयाणं च सीलव्वयवेरमणगुणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जणतातो, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, पडिमातो, उवसग्गा, संलेहणातो, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चायाती, पुण बोहिलाभो, अंतकिरियातो य आघविज्जंति। उवासगदसासु णं उवासयाणं रिद्धिविसेसा, परिसा, वित्थरधम्मसवणाणि, बोहिलाभ, अभिगमणं, सम्मत्तविसुद्धता, थिरत्तं, मूलगुणुत्तरगुणातियारा, ठितिविसेसा य बहुविसेसा, पडिमाभिग्गहगहणपालणा, उवसग्गाहियासणा, णिरुवसग्गा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य, तवा य चित्ता, सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासा, अपच्छिममारणंतियायसंलेहणाज्झोसणाहिं अप्पाणं जह य भावइत्ता बहूणि भत्ताणि अणसणाए य छेयइत्ता उववण्णा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति सुरवरविमाणवरपोंडरीएसु सोक्खाइं अणोवमाइं कमेण भोत्तूण उत्तमाइं, तओ आउक्खएणं चुया समाणा जह जिणमयम्मि बोहिं लद्धूण य संजमुत्तमं तमरयोघविप्पमुक्का उवेंति जह अक्खयं सव्वदुक्खमोक्खं, एते अन्ने य एवमादी [अत्था वित्थरेण य] । उवासयदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणु ओगदारा जाव संखेज्जातो संगहणीतो। से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुतक्खंधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ते। संखेज्जाइं अक्खराइं जाव एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जति। से त्तं उवासगदसातो। [१४३]☆☆☆ से किं तं अंतगडदसातो ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं णगराइं, उज्जाणाइं, चेतियाइं, वणसंडा, रायणो, अम्मापितरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मकहातो, इहलोइया पारलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जातो, सुतपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, पडिमातो बहुविहातो, खमा, अज्जवं, मद्दवं च, सोयं च सच्चसहियं, सत्तरसविहो य संजमो, उत्तमं च बंभं, आकिंचणिया, तवो, चियातो, किरियातो, समितिगुत्तीओ चेव, तह अप्पमायजोगो, सज्झायज्झाणाण य उत्तमाणं दोण्हं पि लक्खणाइं, पत्ताण य संजमुत्तमं जियपरीसहाणं चउव्विहकम्मक्खयम्मि जह केवलस्स लंभो, परियाओ जत्तिओ य जह पालिओ मुणीहिं, पायोवगतो य जो जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेयइत्ता अंतगडो मुणिवरो तमरयोघविप्पमुक्को, मोक्खसुहमणुत्तरं च पत्ता, एते अन्ने य एवमादी अत्था परू [विज्जंति] जाव से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुतक्खंधे, दस अज्झयणा, सत्त वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसतसहस्साइं पयग्गेणं। संखेज्जा अक्खरा जाव एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जति। से तं अंतगडदसातो। [१४४]☆☆☆ से किं तं अणुत्तरोववातियदसातो ? अणुत्तरोववातियदसासु णं अणुत्तरोववातियाणं णगराइं, उज्जाणाइं, चेतियाइं, वणसंडा, रायाणो, अम्मापितरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मकहातो, इहलोइया पारलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, सुतपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, पडिमातो, संलेहणातो, भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं, अणुत्तरोववत्ति, सुकुलपच्चायाती, पुण बोहिलाभो, अंतकिरिया [तो] य आघविज्जंति। अणुत्तरोववातियदसासु णं तित्थकरसमोसरणाइं परममंगल्लजगहिताणि, जिणातिसेसा य बहुविसेसा, जिणसीसाणं चेव समणगणपवरगंधहत्थीणं थिरजसाणं परिसहसेण्णरिवुबलपमद्दणाणं तवदित्तचरित्त-णाण-सम्मत्तसारविविहप्पगारवित्थरपसत्थगुणसंजुयाणं अणगारमहरिसीणं अणगारगुणाण वण्णओ उत्तमवरतवविसिट्ठणाणजोगजुत्ताणं, जह य जगहियं भगवओ, जारिसा य रिद्धिविसेसा देवासुरमाणुसाण। परिसाणं पाउब्भावा य जिणसमीवं, जह य उवासंति जिणवरं, जह य परिकहेंति धम्मं लोगगुरू अमर-नरा-ऽसुरगणाणं, सोऊण य तस्स भासियं अवसेसकम्मा विसयविरत्ता नरा जहा अब्भुवेंति धम्मं ओरालं संजमं तवं चावि बहुविहप्पगारं जह बहूणि वासाणि अणुचरित्ता आराहियनाणदंसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगयमहियभासिता जिणवराण हिययेणमणुणेत्ता जे य जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेयइत्ता लद्धूण य समाहिमुत्तमं झाणजोगजुत्ता उववन्ना मूणिवरुत्तमा जह अणुत्तरेसु पावंति जह अणुत्तरं तत्थ विसयसोक्खं तत्तो य चुया कमेण काहिंति संजया जह य अंतकिरियं, एते अन्ने य एवमादित्थ जाव परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, [जाव] संखेज्जातो संगहणीतो। से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, तिन्नि वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ते। संखेज्जाणि अक्खराणि जाव एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जति। से त्तं अणुत्तरोववातियदसातो। [१४५] ☆☆☆ से किं तं पण्हावागरणाणि ? पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तरं पसिणसतं, अट्ठुत्तरं अपसिणसतं, अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसतं, विज्जातिसया, नागसुपण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति। पण्हावागरणदसासु णं ससमय-परसमयपण्णवयपत्तेयबुद्धविविधत्थभासाभासियाणं अतिसयगुणउवसमणाणपगारआयरियभासियाणं वित्थरेणं वीरमहेसीहिं विविहवित्थारभासियाणं च जगहिताणं अद्दागंगुट्ठबाहुअसिमणिखोमआइच्चमातियाणं विविहमहापसिणविज्जामणपसिणविज्जादइवयपयोगपाहण्णगुणप्पगासियाणं सब्भूयबिगुणप्पभावनरगणमतिविम्हयकरीणं अतिसयमतीतकालसमये

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दमतित्थकरुत्तमस्स थितिकरणकारणाणं दुरभिगमदुरोवगाहस्स सव्वसव्वण्णुसम्मतस्साबुधजणविबोहकरस्स पच्चक्खयप्पच्चयकरीणं पण्हाणं विविहगुणमहत्था जिणवरप्पणीया आघविज्जंति। पण्हावागरणेसु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा जाव संखेज्जातो संगहणीतो। से णं अंगट्ठताए दसमे अंगे, एगे सुतक्खंधे, [पणतालीसं अज्झयणा], पणतालीसं उद्देसणकाला, पणतालीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं पण्णत्ते, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा जाव चरणकरणपरूवणया आघविज्जति। से त्तं पण्हावागरणाणि। [१४६]☆☆☆ से किं तं विवागसुते ? विवागसुए णं सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जति। से समासओ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा दुहविवागे चेव सुहविवागे चेव, तत्थ णं दह दुहविवागाणि, दह सुहविवागाणि। से किं तं दुहविवागाणि ? दुहविवागेसु णं [दुहविवागाणं] णगराइं, चेतियाइं, उज्जाणाइं, वणसंडा, रायाणो, अम्मापितरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मकहातो, नरगगमणाइं, संसारपवंचदुहपरंपराओ य आघविज्जंति, से त्तं दुहविवागाणि। से किं तं सुहविवागाणि ? सुहविवागेसु सुहविवागाणं णगराइं जाव धम्मकहातो, इहलोइयपारलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, पडिमातो, संलेहणातो, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चायाती, पुण बोहिलाभो, अंतकिरियातो य आघविज्जंति। दुहविवागेसु णं पाणातिवायअलियवयण चोरिक्ककरण-परदारमेहुण-ससंगताए महतिव्वकसाय-इंदिय-प्पमायपावप्पओय-असुहज्झवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभागफलविवागा णिरयगति-तिरिक्खजोणिबहुविहवसणसयपरंपरापबद्धाणं मणुयत्ते वि आगताणं जह पावकम्मसेसेण पावगा होंति फलविवागा वह- -वसणविणास -णास -कण्णोट्ठंगुट्ठकर -चरण -नहच्छेयण -जिब्भच्छेयण -अंजण -कडग्गिदाहण -गयचलणमलण -फालण -उल्लंबण -सूल -लता -लउड -लट्ठिभंजण -तउ -सीसग -तत्ततेल्लकलकलअभिसिंचण -कुंभि -पाग -कंपण -थिरबंधण -वेह -वज्झकत्तण -पतिभयकरकरपलीवणादिदारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि, बहुविविहपरंपराणुबद्धा ण मुच्चंति पावकम्मवल्लीए, अवेयइत्ता हु णत्थि मोक्खो, तवेण धितिधणियबद्धकच्छेण सोहणं तस्स वा वि होज्जा। एत्तो य सुभविवागेसु सील-संजम-णियम-गुण-तवोवहाणेसु साहुसु सुविहिएसु अणुकंपासयप्पयोगतिकालमतिविसुद्धभत्तपाणाइं पययमणसा हितसुहनीसेसतिव्वपरिणामनिच्छियमती पयच्छिऊणं पयोगसुद्धाइं जह य निव्वत्तेंति उ बोहिलाभं जह य परित्तीकरेंति णर -णिरय -तिरिय -सुरगतिगमणविपुलपरियट्ट -अरति -भय -विसाय -सोक -मिच्छत्तसेलसंकडं अण्णाणतमंधकारचिक्खल्लसुदुत्तारं जर -मरण -जोणिसंखुभितचक्कवालं सोलसकसायसावयपयंडचंडं अणातियं अणवयग्गं संसारसागरमिणं, जह य णिबंधंति आउगं सुरगणेसु, जह य अणुभवंति सुरगणविमाणसोक्खाणि अणोवमाणि, ततो य कालंतरे चुयाणं इहेव नरलोगमागयाणं आउ -वपु -वण्ण -रूव -जाति -कुल -जम्म -आरोग्ग -बुद्धि -मेहाविसेसा मित्तजण -सयण -धणधण्णविभवसमिद्धिसारसमुदयविसेसा बहुविहकामभोगुब्भवाण सोक्खाण सुहविवागुत्तमेसु, अणुवरयपरंपराणुबद्धा असुभाणं सुभाणं चेव कम्माणं भासिया बहुविहा विवागा विवागसुयम्मि भगवता जिणवरेण संवेगकारणत्था, अन्ने वि य एवमादिया, बहुविहा वित्थरेणं अत्थपरूवणया आघविज्जति। विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा जाव संखेज्जातो संगहणीतो। से णं अंगट्ठताए एक्कारसमे अंगे, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ते, संखेज्जाणि अक्खराणि, जाव एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जति से तं विवागसुए। १४७☆☆☆ से किं तं दिट्ठिवाए ? दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणया आघविज्जति। से समासतो पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगो चूलिया। से किं तं परिकम्मे ? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तंजहा सिद्धसेणियापरिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे पुट्ठसेणियापरिकम्मे ओगहणसेणियापरिकम्मे उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे विप्पजहणसेणियापरिकम्मे चुताचुतसेणियापरिकम्मे। से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्धसेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा माउयापदाणि १, एगट्ठितातिं २, पाढो ३, अट्ठपयाणि ४, (अट्ठपयाणि ३, पाढो ४,) आगासपदाणि ५, केउभूयं ६, रासिबद्धं ७, एगगुणं ८, दुगुणं ९, तिगुणं १०, केउभूतपडिग्गहो ११, संसारपडिग्गहो १२, नंदावत्तं १३, सिद्धावत्तं १४, से त्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे। से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा ताइं चेव माउयापयाइं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव नंदावतं मणुस्सावत्तं, से त्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे। अवसेसाइं परिकम्माइं पाढाइयाइं एक्कारसविहाणि पन्नत्ताइं। इच्चेताइं सत्त परिकम्माइं, छ ससमइयाणि, सत्त आजीवियाणि। छ चउक्कणइयाणि, सत्त तेरासियाणि। एवामेव सपुव्वावरेणं सत्त परिकम्माइं ते सीतिं भवंतीति मक्खायातिं। से त्तं परिकम्माइं। से किं तं सुत्ताइं ? सुत्ताइं अट्ठासीतिं भवंतीति मक्खायातिं, तंजहा उज्जगं परिणयापरिणयं बहुभंगियं विपच्चवियं अणंतरपरंपरं सामाणं संजूहं भिन्नं आहव्वायं सोवत्थितं घंटं णंदावत्तं बहुलं पुट्ठापुट्ठं वियावत्तं एवंभूतं दुयावत्तं वत्तमाणुप्पयं समभिरूढं सव्वतोभद्दं पणसं दुपडिग्गहं २२। इच्चेताइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेयणइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए, इच्चेताइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नच्छेयनइयाणि आजीवियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेताइं बावीस सुत्ताइं तिकणइयाणि तेरासियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेताइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए। एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीती सुत्ताइं भवंतीति मक्खायाइं। से त्तं सुत्ताइं। से किं तं पुव्वगए ? पुव्वगए चोद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा उप्पायपुव्वं अग्गेणियं वीरियं अत्थिणत्थिप्पवायं णाणप्पवायं सच्चप्पवायं आतप्पवायं कम्मप्पवायं पच्चक्खाणं अणुप्पवायं अवंझं पाणाउं किरियाविसालं लोगबिंदुसारं १४। उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता। अग्गेणियस्स णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू, बारस चूलियावत्थू पण्णत्ता। वीरियपुव्वस्स अट्ठ वत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता। अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता। णाणप्पवायस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता। सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस्स दो वत्थू पण्णत्ता। आतप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता। कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता। पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता। अणुप्पवायस्स णं पुव्वस्स पण्णरस वत्थू पण्णत्ता। अवंझस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता। पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता। किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता। लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणुवीसं वत्थू पण्णत्ता। ''दस चोद्दस अट्ठऽट्ठारसेव बारस दुवे य वत्थूणि। सोलस तीसा वीसा पण्णरस अणुप्पवायम्मि'' ॥६१॥ ''बारस एक्कारसमे बारसमे तेरसेव वत्थूणि। तीसा पुण तेरसमे चोद्दसमे पण्णवीसाओ'' ॥६२॥ ''चत्तारि दुवालस अट्ठ चेव दस चेव चूलवत्थूणि। आतिल्लाण चउण्हं सेसाणं चूलिया णत्थि'' ॥६३॥ से त्तं पुव्वगतं। से किं तं अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा मूलपढमाणुओगे य गंडियाणुओगे य। से किं तं मूलपढमाणुओगे ? मूलपढमाणुओगे एत्थ णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा, देवलोगगमणाणि, आउं, चयणाणि, जम्मणाणि य, अभिसेया, रायवरसिरीओ, सीयाओ, पव्वज्जाओ, तवा य, भत्ता, केवलणाणुप्पाता, तित्थपवत्तणाणि य, संघयणं, संठाणं, उच्चत्तं, आउं, वण्णविभागो, सीसा, गणा, गणहरा य, अज्जा, पवत्तिणीओ, संघस्स चउव्विहस्स जं वा वि परिमाणं, जिणा, मणपज्जव-ओहिणाणि-समत्तसुयणाणिणो य वादी अणुत्तरगती य जत्तिया, जत्तिया सिद्धा, पातोवगतो य जो जहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेयइत्ता अंतगडो मुणिवरुत्तमो, तमरतोघविप्पमुक्का सिद्धिपहमणुत्तरं च पत्ता, एते अन्ने य एवमादी भावा पढमाणुओगे कहिया आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति [दंसज्जंति निंदसिज्जंत्ति उवदंसिज्जंति]। से त्तं मूलपढमाणुओगे। से किं तं गंडियाणुओगे ? गंडियाणुओगे अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा कुलकरगंडियाओ तित्थकरगंडियाओ गणधरगंडियाओ चक्कवट्टिगंडियाओ दसारगंडियाओ बलदेवगंडियाओ वासुदेवगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ भद्दबाहुगंडियाओ तवोकम्मगंडियाओ चित्तंतरगंडियाओ ओसप्पिणिगंडियाओ उस्सप्पिणिगंडियाओ अमर-नर-तिरिय-निरयगति-गमणविविहपरियट्टणाणुयोगे, एवमातियातो गंडियातो आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति [दंसिज्जंति निंदंसिज्जंति उवदंसिज्जं]। से त्तं गंडियाणुओगे। से किं तं चूलियाओ ? जण्णं आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलियाओ, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं। से त्तं चूलियाओ। दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जातो निज्जुत्तीओ। से णं अंगट्ठताए बारसमे अंगे, एगे सुतक्खंधे, चोद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा, संखेज्जातो पाहुडियातो, संखेज्जातो पाहुडपाहुडियातो, संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासता कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। एवं णाते, एवं विण्णाते, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जति। से त्तं दिट्ठिवाते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

। से त्तं दुवालसंगे गणिपिडगे। [१४८]☆☆☆ इच्चेतं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु, इच्चेतं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पन्ने काले परित्ता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति, इच्चेतं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागते काले अणंता जीवा आणाए विराहेता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति। इच्चेतं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीते काले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवतिंसु, एवं पडुपण्णे वि, अणागते वि। दुवालसंगे णं गणिपिडगे ण कयाति ण आसी, ण कयाति णत्थि, ण कयाति ण भविस्सइ, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णितिए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिते णिच्चे। से जहाणामए पंच अत्थिकाया ण कयाइ ण आसि, ण कयाइ णत्थी, ण कयाइ ण भविस्संति, भुविं च भवंति य भविस्संति य, धुवा णितिया जाव णिच्चा, एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाति ण आसि, ण कयाति णत्थी, ण कयाति ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सइ य, जाव अवट्ठिते णिच्चे। एत्थ णं दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा, अणंता अभावा, अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ, अणंता कारणा, अणंता अकारणा, अणंता जीवा, अणंता अजीवा, अणंता भवसिद्धिया, अणंता अभवसिद्धिया, अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।[१४९]☆☆☆ दुवे रासी पण्णत्ता, तंजहा जीवरासी य अजीवरासी य। अजीवरासी दुविहा पण्णत्ता, तंजहा रूविअजीवरासी य अरूविअजीवरासी य। से किं तं अरूविअजीवरासी ? अरूविअजीवरासी दसविहा पण्णत्ता, तंजहा धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए, जाव से किं तं अणुत्तरोववातिया ? अणुत्तरोववातिया पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिय-सव्वट्ठसिद्धया, से त्तं अणुत्तरोववातिया, से त्तं पंचेंदियसंसारसमावण्णजीवरासी। दुविहा णेरइया पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्ता य अपज्जत्ता य, एवं दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणिय त्ति। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए केवइयं ओगाहेत्ता केवइया णिरया पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए आसीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं तीसं निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खाया। ते णं णरया अंतो वट्टा, बाहिं चउरंसा, जाव असुभा निरया असुभातो णरएसु वेयणातो। एवं सत्त वि भाणियव्वाओ जं जासु जुज्जति आसीयं बत्तीसं अट्ठावीसं तहेव वीसं च। अट्ठारस सोलसगं अट्ठुत्तरमेव बाहल्लं ॥६४॥ तीसा य पण्णवीसा पण्णरस दसेव सयसहस्साइं। तिण्णेगं पंचूणं पंचेव अणुत्तरा नरगा ॥६५॥ चउसट्ठी असुराणं चउरासीतिं च होति नागाणं। बावत्तरिं सुवण्णाण वाउकुमाराण छण्णउतिं ॥६६॥ दीव-दिसा-उदधीणं विज्जुकुमारिंद-थणिय-मग्गीणं। छण्हं पि जुवलगाणं छावत्तरि मो सतसहस्सा ॥६७॥ बत्तीसऽट्ठावीसा बारस अट्ठ चउरो सतसहस्सा। पण्णा चत्तालीसा छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥६८॥ आणय-पाणयकप्पे चत्तारि सयाऽऽरणच्चुते तिन्नि। सत्त विमाणसताइं चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥६९॥ एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमेसु सत्तुत्तरं च मज्झिमए। सयमेगं उवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥७०॥ दोच्चाए णं पुढवीए तच्चाए णं पुढवीए चउत्थी [ए णं पुढवीए] पंचमी [ए णं पुढवीए] छट्ठी [ए णं पुढवीए] सत्तमी [ए णं पुढवीए] गाहाहिं भाणियव्वा। सत्तमाए णं पुढवीए पुच्छा, गोतमा ? सत्तमाए पुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए उवरिं अद्धतेवण्णं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता हेट्ठा वि अद्धतेवण्णं जोयणसहस्साइं वज्जेत्ता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु एत्थ णं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंचं अणुत्तरा महतिमहालया महानिरया पण्णत्ता, तंजहा काले, महाकाले, रोरुते, महारोरुते, अपतिट्ठाणे णामं पंचमए। ते णं निरया वट्टे य तंसा य, अधे खुरप्पसंठाणसंठिता जाव असुभा नरगा असुभाओ नरएसु वेयणातो। १५०. केवतिया णं भंते ! असुरकुमारावासा पण्णत्ता ? गोतमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसतसहस्से एत्थ णं रयणप्पभाए पुढवीए चउसट्ठिं असुरकुमारावाससतसहस्सा पण्णत्ता। ते णं भवणा बाहिं वट्टा, अंतो चउरंसा, अहे पोक्खरकण्णियासंठाणसंठिता, उक्किण्णंतरविपुलगंभीरखावफलिहा अट्टालयचरियदारगोउरकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतमुसलमुसंढिसतग्घिपरिवारिता अउज्झा अडयालकोट्ठयरइया अडयालकतवणमाला लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितला

कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघेंतगंधुद्धुराभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधवट्टिभूता अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। एवं जस्स जं कमती तं तस्स जं जं गाहाहिं भणियं तह चेव वण्णओ। केवतिया णं भंते! पुढविकाइयावासा पण्णत्ता? गोतमा! असंखेज्जा पुढविकाइयावासा पण्णत्ता। एवं जाव मणूस त्ति। केवतिया णं भंते! वाणमंतरावासा पण्णत्ता? गोतमा इमीसे णं रतणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसतं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसतं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसतेसु एत्थ णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जणगरावाससतसहस्सा पण्णत्ता। ते णं भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा, एवं जहा भवणवासीणं तहेव णेयव्वा, णवरं पडागमालाउळा सुरम्मा पासादीया [दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा]। केवतिया णं भंते! जोतिसियावासा पण्णत्ता? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उड्ढं उप्पतित्ता एत्थ णं दसुत्तरजोयणसतबाहल्ले तिरियं जोतिसविसए जोतिसियाणं देवाणं असंखेज्जा जोतिसियविमाणावासा पण्णत्ता। ते णं जोतिसियविमाणावासा अब्भुग्गयभूसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुतविजयवेजयंतीपडागच्छत्तातिच्छत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मिलित व्व मणिकणगथूभियागा विगसितसतवत्तपुंडरीयतिलयरयणद्धचंदचित्ता अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जवालुगापत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। केवइया णं भंते! वेमाणियावासा पण्णत्ता? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवा णं वीतिवइत्ता बहूणि जोयणाणि बहूणि जोयणसताणि [बहूणि] जोयणसहस्साणि [बहूणि] जोयणसयसहस्साणि [बहुगीतो] जोयणकोडीतो [बहुगीतो] जोयणकोडाकोडीतो असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीतो उड्ढं दूरं वीइवइत्ता एत्थ णं वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-सुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-ऽच्चुएसु गेवेज्जमणुत्तरेसु य चउरासीति विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउतिं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खाया। ते णं विमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। सोअम्मे णं भंते! कप्पे केवतिया विमाणावासा पण्णत्ता? गोयमा! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता। एवं ईसाणाइसु २८। १२। ८। ४। एयाइं सयसहस्साइं, आणए पाणए चत्तारि, आरणच्चुए तिण्णि, एयाणि सयाणि, एवं गाहाहिं भाणियव्वं। [१५१]☆☆☆ नेरइयाणं भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। अपज्जत्तगाणं भंते! नेरइयाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता! गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तगाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उकोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए एवं विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियाणं देवाणं केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहन्नेणं बत्तीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाणि। सव्वट्ठे अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। [१५२]☆☆☆ कति णं भंते! सरीरा पण्णत्ता? गोतमा! पंच सरीरा पण्णत्ता, तंजहा ओरालिए जाव कम्मए। ओरालियसरीरे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा एगिंदियओरालियसरीरे जाव गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरे य। ओरालियसरीरस्स णं भंते! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं। एवं जहा ओगाहणसंठाणे ओरालियपमाणं तहा निरवसेसं, एवं जाव मणुस्से उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। कतिविहे णं भंते! वेउव्वियसरीरे पण्णत्ते? गोयमा! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा एगिंदियवेउव्वियसरीरे य पंचिंदियवेउव्वियसरीरे य। एवं जाव सणंकुमारे आढत्तं जाव अणुत्तरा भवधारणिज्जा जा तेसिं रयणी रयणी परिहायति। आहारसरीरे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! एगाकारे पण्णत्ते। जइ एगाकारे पण्णत्ते किं मणुस्सआहारयसरीरे अमणुस्सआहारसरीरे? गोयमा! मणुस्साहारगसरीरे, णो अमणूसाहारगसरीरे। एवं जति मणूस० किं गब्भक्कंतिय०संमुच्छिम०?

गोयमा ! गब्भवक्कंतिय०, नो संमुच्छिम० । जइ गब्भवक्कंतिय० किं कम्मभूमग० अकम्मभूमग० ? गोयमा ! कम्मभूमग० नो अकम्मभूमग० । जइ कम्मभूमग० किं संखेज्जवासाउय० असंखेज्जवासाउय० ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय० नो असंखेज्जवासाउय०, । जइ संखेज्जवासाउय० किं पज्जत्तय० अपज्जत्तय० ? गोयमा पज्जत्तय०, नो अपज्जत्तय० । जइ पज्जत्तय० किं सम्मद्दिट्ठी० मिच्छदिट्ठी० सम्मामिच्छदिट्ठी ? गोयम ! सम्मद्दिट्ठी०, नो मिच्छदिट्ठी नो सम्मामिच्छदिट्ठी । जइ सम्मद्दिट्ठी० किं संजत० असंजत० संजतासंजत० ? गोयमा ! संजत०, नो असंजत० नो संजतासंजत० । जइ संजत० किं पमत्तसंजत० अपमत्तसंजत ? गोयमा ! पमत्तसंजत०, नो अपमत्तसंजत० । जइ पमत्तसंजत किं इड्ढिपत्त० अणिड्ढिपत्त० ? गोयमा ! इड्ढिपत्त०, नो अणिड्ढिपत्त० । वयणा वि भणियव्वा । आहारयसरीरे समचउरंससंठाणसंठिते । आहार [यसरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहाणा पन्नत्ता ? गोयमा !] जहन्नेणं देसूणा रयणि, उक्कोसेणं पडिपुण्णा रयणी । तेयासरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा एगिंदियतेयसरीरे य बेइंदियतेयसरीरे य तेइंदियतेयसरीरे य चउरिंदियतेयसरीरे य पंचिंदियतेयसरीरे य एवं जाव गेवेज्जयस्स णं भंते ! देवस्स मारणंतियसमुग्घातेणं समोहतस्स समाणस्स [तेयासरीरस्स] केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहन्नेणं अहे जाव विज्जाहरसेढीओ, उक्कोसेणं अहे जाव अहोलोइया गामा, उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं, तिरियं जाव मणुस्सखेत्तं, एवं जाव अणुत्तरोववाइया वि । एवं कम्मयसरीरं पि भाणियव्वं । भेदे विसय संठाणे अब्भंतर बाहिरे देसोधी । ओहिस्स वड्ढि हाणी पडिवाती चेव अपडिवाती ॥७१॥ [१५३]☆☆☆ कतिविहे णं भंते ! ओही पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते भवपच्चइए य खओवसमिए य । एवं सव्वं ओहिपदं भाणियव्वं । सीता य दव्व सारीर सात तह वेयणा भवे दुक्खा । अब्भुवगमुवक्कमिया णिताइं चेव अणिदातिं ॥७२॥ नेरइया णं भंते ! किं सीतवेदणं वेयंति, उसिणवेयणं वेयंति, सीतोसिणवेयणं वेयंति ? गोयमा ! नेरइया० एवं चेव वेयणापदं भाणियव्वं । कति णं भंते ! लेसातो पण्णत्तातो ? गोयमा ! छल्लेसातो पण्णत्तातो, तंजहा किण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा । एवं लेसापदं भाणियव्वं । अणंतरा य आहारे आहराभोयणा वि य । पोग्गला नेव जाणंति अज्झवसाणा य सम्मत्ते ॥७३॥ नेरइया णं भंते ! अणंतराहारा ततो निव्वत्तणया ततो परियातियणता ततो परिणामणता ततो परियारणया ततो पच्छा विकुव्वणया ? हंता गोयमा ! एवं आहारपदं भाणियव्वं । [१५४]☆☆☆ कतिविहे णं भंते ! आउगबंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे आउगबंधे पण्णत्ते, तंजहा जातिनामनिधत्ताउए, एवं गतिनाम० ठितिनाम० पदेसनाम० अणुभाग० ओगाहणानाम० । नेरइयाणं भंते ! कतिविहे आउगबंधे पन्नत्ते ?, गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा जातिनाम० जाव ओगाहणानाम० । एवं जाव वेमाणिय त्ति । निरयगती णं भंते ! केवतियं कालं विरहिता उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ते, एवं तिरियगति मणुस्स [गति] देव [गति] । सिद्धिगती णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासे । एवं सिद्धिवज्जा उव्वट्टणा । इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं कालं विरहिया उववाएणं ? एवं उववायदंडओ भाणियव्वो उव्वट्टणादंडओ य । नेरइया णं भंते ! जातिनामनिधत्ताउगं कतिहिं आगरिसेहिं पगरेंति ? गो० ! सिय १, सिय २।३।४।५।६।७, सिय अट्ठहिं, नो चेव णं नवहिं । एवं सेसाण वि आउगाणि जाव वेमाणिय त्ति । [१५५]☆☆☆ कइविहे णं भंते ! संघयणे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे संघयणे पण्णत्ते, तंजहा वइरोसभनारायसंघयणे रिसभनारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे खीलियासंघयणे छेवट्टसंघयणे । नेरइया णं भंते ! किंसंघयणी [पण्णत्ता] ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी, णेवट्ठी णेव छिरा णवि ण्हारू, जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणावा ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति । असुकुमार णं [भंते] ! किंसंघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी, णेवट्ठी णेव छिरा जाव जे पोग्गला इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा मणाभिरामा ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति । एवं जाव थणियकुमार त्ति । पुढवि [काइयाणं भंते ! किंसंघयणी पण्णत्ता ? गोयमा !] सेवट्टसंघयणी पण्णत्ता, एवं जाव संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिय त्ति । गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी । संमुच्छिममणुस्सा णं सेवट्टसंघयणी । गब्भवकंतियमणूसा छव्विहे संघयणे पण्णत्ता । जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरा जोतिसिया वेमाणिया । कतिविहे णं भंते ! संठाणे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे संठाणे पण्णत्ते, तंजहा समचउरंसे, णग्गोहपरिमंडले, साति, खुज्जे, वामणे, हुंडे । णेरइया णं भंते ! किं [संठाणी पण्णत्ता ?] गोयमा ! हुंडसंठाणी पण्णत्ता । असुरकुमारा [णं भंते] ! किं [संठाणी पण्णत्ता ?] गोयमा ! समचउरंससंठाणसंठिया पण्णत्ता जाव थणिय त्ति । पुढवि [काइया] मसूरयसंठाणा पण्णत्ता । आऊ [काइया] थिबुयसंठाणा पण्णत्ता । तेऊ [काइया] सूइकलावसंठाणा पण्णत्ता । वाऊ [काइया] पडातियासंठाणा पण्णत्ता । वणप्फति [काइया] णाणासंठाणसंठिता पण्णत्ता । बेंतिया तेंतिया चउरिंदिया संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया हुंडसंठाणा पण्णत्ता । गब्भवक्कंतिया छव्विहसंठाणा [पण्णत्ता] । सम्मुच्छिममणूसा हुंडसंठाणसंठिता पण्णत्ता । गब्भवक्कंतियाणं [मणूसाणं] छव्विहा संठाणा [पण्णत्ता] । जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरा जोतिसिया वेमाणिया । [१५६] कतिविहे णं भंते ! वेए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे वेए पण्णत्ते, तंजहा इत्थिवेदे पुरिसवेदे णपुंसगवेदे । णेरतियाणं भंते ! किं इत्थिवेए पुरिसवेए णपुंसगवेए पण्णत्ते ? गोयमा ! णो इत्थि [वेदे] , णो पुंवेदे, णपुंसगवेदे [पण्णत्ते] । असुरकुमा [राणं भंते] ! किं [इत्थिवेए पुरिसवेए णपुसंगवेए पण्णत्ते] ? गोयमा ! इत्थि [वेए], पुमं [वेए], णो णपुंसग [वेए] जाव थणिय त्ति । पुढवि [काइया] आउ [काइया] तेउ [काइया] वाउ [काइया] वण [प्फति काइया] बे [इंदिया] ते [इंदिया] चउ [रिंदिया] संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्ख [जोणिया] संमुच्छिममणूसा णपुंसगवेया । गब्भवक्कंतियमणूसा पंचेंदियतिरिया तिवेया । जहा असुकुमारा तहा वाणमंतरा जोतिसिया वेमाणिया । [१५७] तेणं कालेणं तेणं समएणं कप्पस्स समोसरणं णेतव्वं जाव गणहरा सावच्चा णिरवच्चा वोच्छिन्ना । जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीते सत्त कुलकरा होत्था, तंजहा मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयंपभे । विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे ॥७४॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए दस कुलकरा होत्था, तंजहा सतज्जले सताऊ य, अजितसेणे अणंतसेणे य । कक्कसेणे भीमसेणे, महासेणे य सत्तमे ॥७५॥ दढरहे दसरहे सतरहे । जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए समाते सत्त कुलगरा होत्था, तंजहा पढमेत्थ विमलवाहण० [चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे । तत्तो पसेणईए मरुदेवे चेव नाभी य ॥७६॥] गाहा । एतेसि णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारियातो होत्था, तंजहा चंदजस चंद० [कंता सुरुव पडिरूव चक्खुकंता य । सिरिकंता मरुदेवी कुलगरपत्तीण णामाइं ॥७७॥] गाहा । जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे णं ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थकराण पितरो होत्था, तंजहा णाभी जियसतू या० जियारी संवरे इ य । मेहे धरे पइट्ठे य महसेणे य खत्तिए ॥७८॥ सुग्गीवे दढरहे विण्हू वसुपुज्जे य खत्तिए । कयवम्मा सीहसेणे य भाणू विस्ससेणे इ य ॥७९॥ सूरे सुदंसणे कुंभे सुमित्तविजए समुद्दविजये य । राया य आससेणे सिद्धत्थे च्चिय खत्तिए ॥८०॥ गाहा। उदितोदितकुलवंसा विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया । तित्थप्पवत्तयाणं एते पितरो जिणवराणं ॥८१॥ जंबुद्दीवे एवं मातरो मरुदेवा० विजय सेणा सिद्धत्था मंगला सुसीमा य । पुहई लक्खण रामा नंदा विण्हू जया सामा ॥८२॥ सुजसा सुव्वय अइरा सिरि देवी य पभावई । पउमावती य वप्पा सिव वम्मा तिसिला इ य ॥८३॥ गाहातो । जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थकरा होत्था, तंजहा उसभ १ अजित २ जाव वद्धमाणो २४ य । एतेसिं चउवीसाए तित्थकराणं चउवीसं पुव्वभविया णामधेज्जा होत्था, तंजहा पढमेत्थ वतिरणाभे विमले तह विमलवाहणे चेव । तत्तो य धम्मसीहे सुमित्त तह धम्ममित्ते य ॥८४॥ सुंदरबाहू तह दीहबाहु जुगबाहु लट्ठबाहू य । दिण्णे य इंददिण्णे सुंदर माहिंदरे चेव ॥८५॥ सीहरहे मेहरहे रूप्पी य सुदंसणे य बोधव्वे । तत्तो य णंदणे खलु सीहगिरी चेव वीसत्तिमे ॥८६॥ अद्दीणसत्तु संखे सुदंसणे णंदणे य बोधव्वे । ओसप्पिणीए एते तित्थकराणं तु पुव्वभवा ॥८७॥ एतेसि णं चउवीसाए तित्थयराणं चउवीसं सीयाओ होत्था, तंजहा सीया सुदंसणासुप्पभा य सिद्धत्थ सुप्पसिद्धा य । विजया य वेजयंती जयंती अपराजिया ॥८८॥ अरुणप्पभ सूरप्पभ सुंकप्पभ अग्गि सप्पभा चेव । विमला य पंचवण्णा सागरदत्ता तह णागदत्ता य ॥८९॥ अभयकर णिव्वुतिकरी मणोरमा तह मणोहरा चेव । देवकुरु उत्तरकुरा विसाल चंदप्पभा सीया ॥९०॥ एतातो सीयातो सव्वेसिं चेव जिणवरिंदाणं । सव्वजगवच्छलाणं सव्वोतुकसुभाए छायाए ॥९१॥ पुव्विं उक्खित्ता माणुसेहिं सा हट्ठरोमकूवेहिं । पच्छा वहंति सीयं असुरिंद-सुरिंद-नागिंदा ॥९२॥ चलचवलकुंडलधरा सच्छंदविउव्वियाभरणधारी । सुर-असुरवंदियाणं वहंति सीयं जिणिंदाणं ॥९३॥ पुरतो वहंति देवा नागा पुण दाहिणम्मि पासम्मि । पच्चत्थिमेण असुरा गरुला पुण

उत्तरे पासे ॥९४॥ उसभो य विणीताए बारवतीए अरिट्ठवरणेमी। अवसेसा तित्थकरा णिक्खंता जम्मभूमीसु ॥९५॥ सव्वे वि एगदूसेण [णिग्गया जिणवरा चउव्वीसं। ण य णाम अण्णलिंगे ण य गिहिलिंगे कुलिंगे य ॥९६॥] गाहा। एक्को भगवं वीरो पासो मल्ली य तिहिं तिहिं सएहिं। भगवं पि वासुपुज्जो छहिं पुरिससएहिं निक्खंतो ॥९७॥] गाधा। उग्गाणं भोगाणं रातिण्णा णं च खत्तियाणं च। चउहिं सहस्सेहिं उसभो सेसा उ सहस्सपरिवारा ॥९८॥ गाहा। सुमतित्थ णिच्चभत्तेण [णिग्गओ वासुपुज्जो जिणो चउत्थेणं। पासो मल्ली वि य अट्ठमेण सेसा उ छट्ठेणं] ॥९९॥ गाहा। एतेसि णं चउवीसाए तित्थकराणं चउवीसं पढमभिक्खादेया होत्था, तंजहा सेज्जंस बंभदत्ते सुरिंददत्ते य इंददत्ते य। तत्तो य धम्मसीहे सुमित्ते तह धम्ममित्ते य ॥१००॥ पुस्से पुणव्वसू पुण णंदे सुणंदे जए य विजए य। पउमे य सोमदेवे महिंददत्ते य सोमदत्ते य ॥१०१॥ अपरातिय वीससेणे वीसतिमे होति उसभसेणे य। दिण्णे वरदत्ते धन्ने बहुले य आणुपुव्वीए ॥१०२॥ एते विसुद्धलेसा जिणवरभत्तीय पंजलिउडाओ। तं कालं तं समयं पडिलाभेंती जिणवरिंदे ॥१०३॥ संवच्छरेण भिक्खा० [लद्धा उसभेण लोगणाहेण। सेसेहिं बीयदिवसे लद्धाओ पढमभिक्खाओ ॥१०४॥] गाहा। उसभस्स पढमभिक्खा० [खोयरसो आसि लोगणाहस्स। सेसाणं परमण्णं अमयरसरसोवमं आसि ॥१०५॥] गाहा। सव्वेसिं पि जिणाणं जहियं लद्धातो पढमभिक्खातो। तहियं वसुधारातो सरीरमेत्तीओ वुट्ठातो ॥१०६॥ एतेसि णं चउवीसाए तित्थकराणं चउवीसं चेतियरुक्खा होत्था, तंजहा णग्गोह सत्तिवण्णे साले पियते पियंगु छत्तोहे। सिरिसे य णागरुक्खे माली य पिलुंक्खुरुक्खे य ॥१०७॥ तेंदुग पाडलि जंबू आसोत्थे खलु तहेव दधिवण्णे। णंदीरुक्खे तिलए अंबगरुक्खे असोगे य ॥१०८॥ चंपय बउले य तहा वेडसरुक्खे तहा य धायईरुक्खे। साले य वद्धमाणस्स चेतियरुक्खा जिणवराणं ॥१०९॥ बत्तीसतिं धणूइं चेतियरुक्खो उ वद्धमाणस्स। णिच्चोउगो असोगो ओच्छन्नो सालरुक्खेणं ॥११०॥ तिण्णेव गाउयाइं चेतियरुक्खो जिणस्स उसभस्स। सेसाणं पुण रुक्खा सरीरतो बारसगुणा उ ॥१११॥ सच्छत्ता सपडागा सवेइया तोरणे उववेया। सुरअसुरगरुलमहियाण चेतियरुक्खा जिणवराणं ॥११२॥ एतेसि णं चउवीसाए तित्थकराणं चउवीसं पढमसीसा होत्था, तंजहा पढमेत्थ उसभमेणे बितिए पुण होइ सीहसेणे उ। चारू य वज्जणाभे चमरे तह सुव्वय विदब्भे ॥११३॥ दिण्णे वाराहे पुण आणंदे गोत्थुभे सुहम्मे य। मंदर जसे अरिट्ठे चक्काउह सयंभु कुंभे य ॥११४॥ भिसए य इंद कुंभे वरदत्ते दिण्ण इंदभूती य। उदितोदितकुलवंसा विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया। तित्थप्पवत्तयाणं पढमा सिस्सा जिणवराणं ॥११५॥ एतेसि णं चउवीसाए तित्थकराणं चउवीसं पढमसिस्सिणीओ होत्था, तंजहा बंभी फग्गू सम्मा अतिराणी कासवी रती सोमा। सुमणा वारुणि सुलसा धारणि धरणी य धरणिधरा ॥११६॥ पउमा सिवा सुयी अंजू भावितप्पा य रक्खिया। बंधू पुप्फवती चेव अज्जा वणिला य आहिया ॥११७॥ जक्खिणी पुप्फचूला य चंदणज्जा य आहिता। उदितोदितकुलवंसा विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया। तित्थप्पवत्तयाणं पढमा सिस्सी जिणवराणं ॥११८॥ १५८. जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टीपितरो होत्था, तंजहा - उसभे सुमितविजए समुद्दविजए य विस्ससेणे य। सूरिते सुदंसणे पउमुत्तर कत्तवीरिए चेव ॥११९॥ महाहरी य विजए य पउमे राया तहेव य। बंभे बारसमे वुत्ते पिउनामा चक्कवट्टीणं ॥१२०॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिमायरो होत्था, तंजहा सुमंगला जसवती भद्दा सहदेवा अतिरा सिरि देवी। जाला तारा मेरा वप्पा चुलणी य अपच्छिमा। जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टी होत्था तंजहा भरहे सगरे मघवं० [सणंकुमारो य रायसद्दूलो। संती कुंथू य अरो हवइ सुभूमो य कोरव्वो ॥१२१॥ नवमो य महापउमो हरिसेणो चेव रायसद्दूलो। जयनामो य नरवई बारसमो बंभदत्तो य] ॥१२२॥ गाधातो। एतेसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस इत्थिरयणा होत्था, तंजहा पढमा होइ सुभद्दा भद्दा सुणंदा जया य विजया य। कण्हसिरी सूरसिरी, पउमसिरी वसुंधरा देवी। लच्छिमती कुरुमती, इत्थीरतणाण नामाइं ॥१२३॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए नव बलदेव-वासुदेवपितरो होत्था, तंजहा- पयावती य बंभे [रुद्दे सोमे सिवे ति त। महसीह अग्गिसीहे, दसरहे नवमे त वासुदेवे ॥१२४॥] गाहा। जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव वासुदेवमातरो होत्था, तंजहा- मियावती उमा चेव, पुढवी सीया य अम्मया। लच्छिमती सेसमती, केकई देवई इ य ॥१२५॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए णव बलदेवमायरो होत्था,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तंजहा- भद्दा सुभद्दा य सुप्पभा सुदंसणा विजया य वेजयंती। जयंती अपराजिया णवमिया य रोहिणी बलदेवाणं मातरो ॥१२६॥ जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नव दसारमंडला होत्था, तंजहा उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी छायंसी कंता सोमा सुभगा पियदंसणा सुरूवा सुहसील-सुहाभिगम-सव्वजण-णयणकंता ओहबला अतिबला महाबला अणिहता अपराजिया सत्तुमद्दणा रिपुसहस्समाणमधणा साणुकोस्सा अमच्छरा अचवला अचंडा मितमंजुपलावहसित-गंभीर-मधुरपडिपुण्णसच्चवयणा अब्भुवगयवच्छला सरण्णा लक्खणवंजणगुणोववेता माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजातसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमागारकंतपियदंसणा अमसणा पयंडदंडप्पयारगंभीरदरिसणिज्जा तालद्धयोव्विद्धगरुलकेऊ महाधणुविकड्ढया महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्धकित्तिपुरिसा विपुलकुलसमुब्भवा महारयणविहाडगा अद्धभरहसामी सोमा रायकुलवंसतिलया अजिया अजितरहा हल-मुसल-कणगपाणी संख-चक्क-गय-सत्ति-णंदगधरा पवरुज्जलसुकंतविमलगोत्थुमतिरीडधारी कुंडलउज्जोवियाणणा पुंडरीयणयणा एकाबलिकंठलइतवच्छा सिरिवच्छसुलंछणा वरजसा सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरचितपलंबसोभंतकंतविकसंतचित्तवरमालरइयवच्छा अट्ठसयविभत्तलक्खणपसत्थसुंदरविरतियंगमंगा मत्तगयवरिंदललिय-विक्कमविलसियगती सारतनवथणियमधुरगंभीरकोंचनिग्घोसदुंदभिसरा कडिसुत्तगनीलपीयकोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया नरसीहा नरवती नरिंदा नरवसहा मरुयवसभकप्पा अब्भहियं रायतेयलच्छिए दिप्पमाणा नीलग-पीतगवसणा दुवे दुवे रामकेसवा भायरो होत्था, तंजहा तिविट्ठू य जाव कण्हे ॥१२७॥ अयले वि० जाव रामे यावि अपच्छिमे ॥१२८॥ एतेसि णं णवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभविया नव नामधेज्जा होत्था, तंजहा विस्सभुती पव्वयए धणदत्त समुद्दत्त सेवाले। पियमित्त ललियमित्ते पुणव्वसू गंगदत्ते य ॥१२९॥ एताइं नामाइं पुव्वभवे आसि वासुदेवाणं। एत्तो बलदेवाणं जहक्कमं कित्तइस्सामि ॥१३०॥ विस्सनंदी सुबंधू य सागरदत्ते असोग ललिए य। वाराह धम्मसेणे अपराइय राययलिए य ॥१३१॥ एतेसिं णं णवण्हं बलदेववासुदेवाणं पुव्वभविया नव धम्मायरिया होत्था, तंजहा संभुत्त सुभद्द सुदंसणे य सेयंस कण्ह गंगदत्ते य। सागर समुद्दनामे दुमसेणे य णवमए ॥१३२॥ एते धम्मायरिया कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं। पुव्वभवे आसिण्हं जत्थ निदाणाइं कासीय ॥१३३॥ एतेसिं णं णवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभवे णव णिदाणभूमीतो होत्था, तंजहा महुरा जाव हत्थिणपुरं च ॥१३४॥ एतेसि णं णवण्हं वासुदेवाणं नव णिदाणकारणा होत्था, तंजहा गावी जुए जाव मातुका ति य ॥१३५॥ एतेसि णं णवण्हं वासुदेवाणं णव पडिसत्तू होत्था, तंजहा अस्सग्गीवे जाव जरासंधे ॥१३६॥ एते खलु पडिसत्तू जाव सचक्केहिं ॥१३७॥ एक्को य सत्तमाए पंच य छट्ठीए पंचमा एक्को। एक्को य चउत्थीए कण्हो पुण तच्चपुढवीए ॥१३८॥ अणिदाणकडा रामा० [सव्वे वि य केसव नियाणकडा। उड्ढंगामी रामा केसव सव्वे अहोगामी ॥१३९॥] गाहा। अट्ठंतकडा रामा, एगो पुण बंभलोयकप्पम्मि। एक्का से गब्भवसही, सिज्झिस्सति आगमिस्सेणं ॥१४०॥ जंबुद्दीवे णं दीवे एरवते वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था, तंजहा चंदाणणं सुचंदं अग्गिसेणं च नंदिसेणं च। इसिदिण्णं वयहारिं वंदिमो सामचंदं च ॥१४१॥ वंदामि जुत्तिसेणं अजितसेणं तहेव सिवसेणं। बुद्धं च देवसम्मं सययं निक्खित्तसत्थं च ॥१४२॥ अस्संजलं जिणवसभं वंदे य अणंतयं अमियणाणिं। उवसंतं च धुयरयं वंदे खलु गुत्तिसेणं च ॥१४३॥ अतिपासं च सुपासं देवीसरवंदियं च मरुदेवं। निव्वाणगयं च धरं खीणदुहं सामकोट्ठं च ॥१४४॥ जियरागमग्गिसेणं वंदे खीणरयमग्गिउत्तं च। वोकसियसियपेज्जदोसं च वारिसेणं गतं सिद्धिं ॥१४५॥ जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे आगमेसाते उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा भविस्संति, तंजहा मित्तवाहणे सुभूमे य सुप्पभे य सयंपभे। दत्ते सुहुमे सुबंधू य आगमेसाणं होक्खति ॥१४६॥ जंबुद्दीवे णं दीवे [भरहे वासे] आगमेसाते उस्सप्पिणीते दस कुलकरा भविस्संति, तंजहा विमलवाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे दढधणू दसधणू संयधणू पडिसुई सम्मुई त्ति। जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थकरा भविस्संति, तंजहा महापउमे १ सुरादेवे २ सुपासे य ३ सयंपभे ४। सव्वाणुभूती ५ अरहा देवउत्ते य होक्खती ६ ॥१४७॥ उदए ७ पेढालपुत्ते य ८ पोट्टिले ९ सतए ति य १०। मुणिसुव्वते य अरहा ११ सव्वभावविदू जिणे १२ ॥१४८॥ अममे १३ णिक्कसाए य १४, निप्पुलाए य १५ निम्ममे १६। चित्तउत्ते १७ समाही य १८ आगमिस्सेण होक्खई ॥१४९॥ संवरे १९ अणियट्टी य २०, विवाए २१ विमले ति य २२। देवोववाए अरहा २३ अणंतविजए ति य २४ ॥१५०॥ एते वुत्ता चउव्वीसं भरहे वासम्मि केवली। आगमिस्साण होक्खंति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मतित्थस्स देसगा ॥१५१॥ एतेसि णं चउवीसाए तित्थकराणं पुव्वभविया चउवीसं नामधेज्जा भविस्संति, तंजहा सेणिय सुपास उदए, पोट्टिल अणगारे तह दढाऊ य। कत्तिय संखे य तहा, णंद सुणंदे सतए य बोधव्वा ॥१५२॥ देवई चेव सच्चति तह वासुदेवे बलदेवे। रोहिणि सुलसा चेव य तत्तो खलु रेवती चेव ॥१५३॥ तत्तो हवति मिगाली बोधव्वे खलु तहा भयाली य। दीवायणे य कण्हे तत्तो खलु नारए चेव ॥१५४॥ अमंडे दारुमडे या सातीबुद्धे य होति बोधव्वे। उस्सप्पिणि आगमेसाए तित्थकराणं तु पुव्वभवा ॥१५५॥ एतेसि णं चउवीसं तित्थकराणं चउवीसं पितरो भविस्संति, चउवीसं मातरो भविस्संति, चउवीसं पढमसीसा भविस्संति, चउवीसं पढमसिस्सिणीतो भविस्संति, चउवीसं पढमभिक्खादा भविस्संति, चउवीसं चेतियरुक्खा भविस्संति। जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमेसाए उसप्पिणीए बारस चक्कवट्टी भविस्संति, तंजहा. भरहे य दीहदंते गूढदंते य सुदंते य। सिरिउत्ते सिरिभूती सिरिसोमे य सत्तमे ॥१५६॥ पउमे य महापउमे विमलवाहणे विपुलवाहणे चेव। रिट्ठे बारसमे वुत्ते आगमेसा भरहाहिवा ॥१५७॥ एतेसि णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस पितरो भविस्संति, बारस मातरो भविस्संति, बारस इत्थीरयणा भविस्संति। जंबुद्दीवे णं दीवे भरहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए णव बलदेव-वासुदेवपितरो भविस्संति, णव वासुदेवमातरो भविस्संति, णव बलदेवमातरो भविस्संति णव दसारमंडला भविस्संति, तंजहा उत्तिमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी एवं सो चेव वण्णतो भाणियव्वो जाव नीलगपीतगवसणा दुवे दुवे रामकेसवा भातरो भविस्संति, तंजहा णंदे य १ णंदमित्ते २ दीहबाहू ३ तहा महाबाहू ४। अइबले ५ महब्बले ६ बलभद्दे य सत्तमे ७ ॥१५८॥ दुविट्ठ य ८ तिव्विट्ठू य ९ आगमेसाणं वण्हिणो। जयंते विजए भद्दे सुप्पभे य सुदंसणे ॥ आणंदे णंदणे पउमे संकरिसणे य अपच्छिमे ॥१५९॥ एतेसि णं नवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभविया णव नामधेज्जा भविस्संति, णव धम्मायरिया भविस्संति, णव नियाणभूमीओ भविस्संति, णव नियाणकारणा भविस्संति, णव पडिसत्तू भविस्संति, तंजहा तिलए य लोहजंघे वइरजंघे य केसरी य पहराए। अपराजिये य भीमे महाभीमसेणे य सुग्गीवे य अपच्छिमे ॥१६०॥ एते खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं। सव्वे य चक्कजोही हम्मिहिंति सचक्केहिं ॥१६१॥ जंबुद्दीवे णं दीवे एरवते वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थकरा भविस्संति, तंजहा सुमंगले अत्थसिद्धे य, णेव्वाणे य महाजसे। धम्मज्झए य अरहा, आगमेसाण होक्खति ॥१६२॥ सिरिचंदे पुप्फकेऊ य, महाचंदे य केवली। सुयसागरे य अरहा, आगमेसाण होक्खती ॥१६३॥ सिद्धत्थे पुण्णघोसे य, महाघोसे य केवली। सच्चसेणे य अरहा, अणंतविजए इ य ॥१६४॥ सूरसेणे महासेणे, देवसेणे य केवली। सव्वाणंदे य अरहा, देवउत्ते य होक्खती ॥१६५॥ सुपासे सुव्वते अरहा, महासुक्खे य कोसले। देवाणंदे अरहा णं विजये विमल उत्तरे ॥१६६॥ अरहा अरहा य महायसे। देवोववाए अरहा आगमेस्साण होक्खती ॥१६७॥ एए वुत्ता चउव्वीसं, एरवतवासम्मि केवली। आगमेसाण होक्खंति, धम्मतित्थस्स देसगा ॥१६८॥ बारस चक्कवट्टिपितरो मातरो चक्कवट्टिइत्थीरयणा भविस्संति, नव बलदेव-वासुदेवपितरो मातरो णव दसारमंडला भविस्सति, तंजहा उत्तिमपुरिसा जाव रामकेसवा भायरो भविस्संति, नामा, पडिसत्तू, पुव्वभवणामधेज्जाणि, धम्मायरिया, णिदाणभूमीओ, णिदाणकारणा, आयाए, एरवते आगमेसा भाणियव्वा, एवं दोसु वि आगमेसा भाणियव्वा। १६९. इच्चेतं एवमाहिज्जति, तंजहा कुलगरवंसे ति य एवं तित्थगरवंसे ति य चक्कवट्टिवंसे ति य दसारवंसे ति य गणधरवंसे ति य इसिवंसे ति य जतिवंसे ति य मुणिवंसे ति य सुते ति वा सुतंगे ति वा सुतसमासे ति वा सुतखंधे ति वा समाए ति वा संखेति वा। समत्तमंगमक्खायं, अज्झयणं ति त्ति बेमि ॥ **[॥ समवाओ चउत्थमंगं सम्मत्तं ॥]** ग्रं० १६६७ ॥

સૌજન્ય : શ્રી ખામગામ જૈન સંઘ